ओ३म्

वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः

ब्राह्मणवंशेतिवृत्तम्

अर्थात्

ब्राह्मणवंश का प्राचीन और अर्वाचीन

इतिहास

द्वितीय भाग

गोत्र, प्रवर और अवान्तर भेद

तथा

साहित्य सेवी, जाति भक्त और देशभक्त प्रसिद्ध

विद्वानों के चित्र और चरित्र सहित।

लेखक व प्रकाशक

आयुर्वेदाचार्य पण्डित हीरालाल शर्मात्मज-

पं० परशुराम शास्त्री, विद्यासागर M. R. A. S.

केवल टाइटिल और भूमिकादि

अनन्तराम के प्रबन्ध से, अनन्तराम, माठये और के. एन. गोयनका के

सद्धर्म प्रचारक प्रेस देहली में मुद्रित।

प्रथमवार १००० | संवत् १९७९ वि० | मूल्य २॥) रुपये

पुस्तक छपने के स्थान ।

टाइटिल व भूमिकादि पं. अनन्तराम "सद्धर्म-प्रचारक प्रेस," देहली ।

१—८ फार्म पं० उमादत्त शर्मा, ब्राह्मण प्रेस देहली ।

९—११ ,, पं० कुंजबिहारीलाल रत्न प्रेस, देहली ।

११- ,, सम्पूर्ण जनरल प्रेस, इटावा ।

समर्पण ।
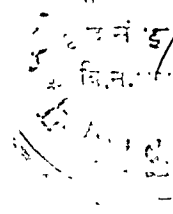
जिस सज्जन ने संस्कृत साहित्य के उद्धार का

बीड़ा उठाया

जो

अनेक लुप्तकल्प ग्रन्थ रत्नों का प्रकाश कर

प्रकाश में लाया

उन्हीं

स्वर्ग-वासी—

रा० रा० सेठ तुकाराम जावजी महोदय J.P.

की

स्मृति में

यह ग्रन्थ

समर्पित किया गया ।
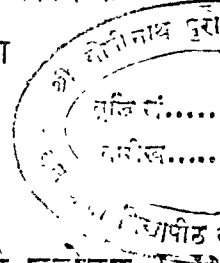
संस्कृतसाहित्योद्धर्ता

रा. रा. सेठ तुकाराम जावजी चौधरी, J. P.
अध्यक्ष, निर्णयसागर प्रेस, मुंबई.

वक्तव्य

ब्राह्मण वंश का इतिहास लिखते समय हमको स्वयं ऐसा विचार न था कि यह कार्य इतना बढ़ जायगा। संक्षेप से करने पर भी यह बहुत बड़ा होगया है। जहां तक हम से हो सका बहुत अन्वेषण करने के पश्चात् ब्राह्मणों के भेद, उपभेद, और अवान्तर भेद ढूंढ २ कर पते सहित लिखे गए हैं। विवादास्पद विषयों में अन्यों के मतों का संग्रह किया गया और ऐसे स्थानों पर अपनी सम्मति बहुत कम परन्तु सोच समझ कर लिखी है। विशेषतया शिल्प श्रेणी के सम्बन्ध में बड़ा प्रयास हुआ, कारण कि इस समूह में से ब्राह्मण भेदों का पृथक निर्णय करना बहुत कठिन था सो बहुत सोच, विचार, अनुसन्धान और प्रमाणों द्वारा उक्त विषय निर्णय किया गया। तो भी अभी और भी अनुसन्धान की आवश्यकता है।

दूसरी बात चित्रों की है। चित्रों के बिना चरित्र नीरस हो रहते हैं। प्रथम हमारा विचार था कि जिन २ सज्जनों के चरित्र दिए जावें उन के चित्र भी हों परन्तु अनेक उपाय करने पर भी सब के चित्र पुस्तक छपने तक न मिल सके, अनेकों के चरित्र भी इसी कारण से न दिये जा सके या संक्षेप से वर्णित हुवे।

तब भी जगदीश्वर की कृपा से गृहीत विषय में हम सफल हुए। इस स्थानपर यह प्रार्थनाभी अनुचित न होगी कि शीघ्रतावश जिनके चरित्र न दिये जा सके वह अग्रिम संस्करण के लिए अभी से भेजने की कृपाकरें।

अंत में हम प्रेमसभा देहली और श्रीमती गौड़महासभा का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने इस ग्रन्थ के उपलक्ष्य में लेखक को विद्यावाचस्पति की उपाधि प्रदान की और जिनकी प्रेरणा से यह ग्रन्थ लिखा गया।

इस सम्बन्ध में जिन मित्रों ने पुस्तक निर्माण, प्रकाशन और विक्रय में सहायता दी उन सबको धन्यवाद देकर समाप्त किया जाता है।

१३-१०.१९ निवेदक—परशुराम शास्त्री M. R. A. S.

चरित्र सूची।

* चिन्हित सचित्र हैं।

विषय सूची।

ग्रन्थकर्ता

वे. रा. रा. परशुरामशास्त्री, वेदरत्न, विद्यावाचस्पति, M. R. A. S.

ब्राह्मणवंशोत्तिवृत्तम् ।

द्वितीय भाग ।

सम्पूर्ण ब्राह्मण भेदों की सूची प्रथम भागमें दी गई है। यह सब भेद कुछ तो देश और ग्राम के नाम से कुछ पदवी के नाम से कुछ गोत्र के नाम से और कुछ शासनों के नाम से हुवे हैं। और बहुत नवीन हैं, इनमें कोई २ तो २०० वर्ष से इधर के हैं। इन सब को विद्वानों ने १० विध ब्राह्मणों के अन्तर्गगत माना है प्रसङ्ग वश १० विध में इन सब का वर्णन किया जायगा। यहां इनकी उत्पत्ति गोत्र आदि का विचार किया जाता है।

पञ्च गौड ।

(Northern Devision of Brahmnans)

सारस्वताः कान्यकुब्जा गौडा मैथिल उत्कलाः ।
पञ्चगौडाः समाख्याता विन्ध्योत्तरनिवासिनः ॥

(बल्लाल चरित)

१ सारस्वत, २ कान्यकुब्ज, ३ गौड़, ४ मैथिल, ५ उत्कल, यह विन्ध्याचलके उत्तर निवासी ५ गौड़ हैं।

गौड देश।

वङ्गदेशं समारभ्य भुवने शान्तगं शिवे।
गौडदेशः समाख्यातः सर्वविद्या विशारदः॥

(शक्ति सङ्गम तन्त्र)

उदयगिरिभद्रगौडक पौण्ड्रोत्कल काशिमेकलाम्बष्ठाः।

(बृ. सं. १४. ५. ७.)

वङ्ग देश से लेकर भुवनेश तक गौड देश है। उदयाचल पर्वत की ओर भद्र, गौड, पौण्ड्र, काशी, मेकल और अम्बष्ठ यह देश हैं।

गौड़ ब्राह्मणों का प्रथम भेद।

सारस्वत ब्राह्मण।

सरस्वती नदी का वर्णन प्राचीन सब आर्ष ग्रन्थों में मिलता है, वेदों में भी सरस्वती नदी का वर्णन प्रायः यत्र तत्र विद्यमान है। पूर्व काल में सरस्वती नदी बहुत प्रसिद्ध और विस्तृत थी यह हिमलय से निकल कर पञ्जाब में होती हुई प्रयाग में गङ्गा में मिल जाती थी। पञ्जाब में सरस्वती नदी पर सारस्वत मुनि तप करते थे। इस सारे देश का नाम सारस्वत हुवा। महाभारत (श० प० ५२) में सारस्वत मुनि की तपश्चर्या का वृतान्त लिखा है। सारस्वत देश में गौड बस जाने के कारण सारस्वत कहलाये अतएव गौडों का यह प्रथम भेद है। यह जाति पञ्जाव, पर्वत और काश्मीर में अधिक हैं। दक्षिण और मद्रास में भी ५०० वर्ष के लगभग हुवे तब यह जा बसे थे। इनके ४ भेद नीचे लिखे जाते हैं:—

९	रवारे ।	४१	कुच्छ
१०	दचेसर ।	४२	कारडगे
११	दिद्रिये ।	४३	खेती
१२	धायी ।	४४	गंगाहर
१३	दनाले	४५	गजेपु
१४	तंगणवते	४६	गुडरे
१५	तगाले	४७	चित्रखोर
१६	भंगचल	४८	अचारज
१७	अग्निहोत्री	४९	आरी
१८	अल	५०	ऋषि
१९	ईसर	५१	कपाल
२०	परे	५२	कुलरित
२१	कुन्द	५३	कंड्यारे
२२	कपाले	५४	काल
२३	कलि	५५	कर्दन
२४	कलहण	५६	कुरेतपाल
२५	किरार	५७	कैजर
२६	फलश	५८	काठपाल
२७	कोटपाल	५९	खोर
२८	खट्वंग	६०	गांद्र
२९	खिंदडिये	६१	गन्धे
३०	गन्धी	६२	घोटके
३१	चनन	६३	चूर्णी
३२	अग्रफक	६४	चवी
३३	अगल	६५	जयचंद
३४	ईसराज	६६	तिवारी
३५	ओझे	६७	हंसधीर
३६	कलिन्द	६८	सूदन
३७	कुण्ड	६९	विरार
३८	काई	७०	लकड़फाड़
३९	कर्दम	७१	चूनी
४०	कोतवाल	७२	जठरे

१३७ तेजपाल
१३८ सद्दी
१३९ संगद्
१४० विनायक
१४१ रतने
१४२ जेठक
१४३ टणिक
१४४ तिनमणी
१४५ साँग
१४६ शेतपाल
१४७ लट्टू
१४८ यमे
१४९ मरुद्
१५० भूत
१५१ भारभारी
१५२ पड़ीजे
१५३ विजराये
१५४ मेहद्
१५५ भोग
१५६ पंजन
१५७ पुछरत
१५८ मंडहर
१५९ मफावर
१६० भासथे
१६१ पांडे
१६२ वन्दू
१६३ सूपाल
१६४ मंदार
१६५ भिंडे
१६६ पंडे
१६७ भ॰॰रझोटे
१६८ पाधे
१६९ पन्च
१७० रत्नपाल
१७१ मसोद्रे
१७२ मडांत
१७३ पलत्
१७४ वाहोये
१७५ मेहू
१७६ भागी
१७७ पाल
१७८ पठरु
१७९ रत्नदेह
१८० मद्रस
१८१ भद्रेर
१८२ पुंज
१८३ पल्ल
१८४ पाधि
१८५ व्रह्मी
१८६ मुस्तल
१८७ मोहन
१८८ भारद्वाज
१८९ थिपर
१९० विसडे
१९१ मन्दहेर
१९२ भट्टरे
१९३ पद्दू
१९४ व्रह्म सुकुल
१९५ मधरे
१९६ मैत्र
१९७ भाजी
१९८ पुजे
१९९ टोरे

—*—

सारस्वत ब्राह्मणों के शासन निम्नलिखित हैं:—

१	शारद्	३१	थानिक
२	समनोल	३२	कालिये
३	सेल	३३	कुटलीडये
४	शांड	३४	कमाहटाये
५	लाठ	३५	शल
६	लई	३६	गदोतरे
७	वटेडे	३७	चपडोहिये
८	श्रीधर	३८	चिब्भे
९	मीरट	३९	चंधियाल
१०	सुफाती	४०	छिरपोल
११	रजीहर	४१	छर्कोतर
१२	लाहर	४२	जलरेइये
१३	मचले	४३	जुशाल
१४	मदोते	४४	झुमुटिया
१५	मिश्र	४५	झील
१६	मैते	४६	डढाये
१७	मदोहि	४७	ढोसे
१८	भटोहि	४८	गोडरे
१९	मटरे	४९	पाधे
२०	मकड़े	५०	ढोल
२१	बाश्ले	५१	बालवैये
२२	भरदियाल	५२	मगोतरे
२३	भटोल	५३	केसर
२४	भसूल	५४	नाद्
२५	पुलाहलिये	५५	लट
२६	पटस	५६	अघोत्रे
२७	पन्याल	५७	कटोत्रे
२८	पण्डित	५८	काश्मीरी पण्डित
२९	ताक	५९	कर्णिये
३०	ताड़ी	६०	भरैड

६१ टगोत्रे
६२ फटिवलू
६३ कर्नाठिये
६४ कुडिद्रव्य
६५ कम्बी
६६ कमनिये
६७ कौड़े
६८ कुन्दन
६९ उपाधे
७० उद्दीहल
७१ उत्रिपाक
७२ कलन्द्री
७३ किरले
७४ सरमायी
७५ दुवे
७६ पाधे खिन्दड़िये
७७ लखनपाल
७८ वैश्य
७९ लव
८० देवे
८१ ठप्पे
८२ स्तोत्रे
८३ भंगोत्रे
८४ यवगोत्रे
८५ सवनाल पाधे
८६ वड
८७ गराडिये
८८ घोड़े
८९ चम्म
९० चरगांट
९१ जर
९२ जरवाल
९३ जरड
९४ जखोत्रे
९५ जलोत्रे
९६ घछिपाले
९७ चकोत्रे
९८ चन्दन
९९ पाधे ददिये
१०० पाधे घांहसनिये
१०१ खजूरिये
१०२ लट्ठरिये
१०३ वंभवाल
१०४ मोहन
१०५ छिब्बर
१०६ वालिश
१०७ पुरोच
१०८ विलहानोच
१०९ ललोत्रे
११० रैणे
१११ मसोत्रे
११२ मिश्र
११३ पृथिवीपाल
११४ पलाधू
११५ पंगे
११६ फीनफण
११७ वगनाघल
११८ वसनोते
११९ वरात
१२० वड़ कुलिये
१२१ पिंधड़
१२२ पटल
१२३ नभोतरे
१२४ धमानिये

१२५	जम्बूवाल	१५७	ठकुरे
१२६	वडयाल	१५८	पुरोहित
१२७	खंजूरें पुरोहित	१५९	डंडोरिच
१२८	सपोलिये पाधे	१६०	वोली
१२९	सपोत्रे	१६१	वनोत्रे
१३०	सुघालियें	१६२	ब्रह्मीये
१३१	सुदाथिये	१६३	बगोत्रे
१३२	पन्थोत्रें	१६४	वच्छन
१३३	महिते	१६५	वटियालियें
१३४	धारिओच	१६६	वघोत्रे
१३५	भलोच	१६७	वट्टल
१३६	मैनखरें	१६८	विसगोत्रे
१३७	भूरियें	१६९	बुधार
१३८	भूत	१७०	वणाद्दी
१३९	मुण्डे	१७१	भूरे
१४०	मरोतरें	१७२	लमोत्रे
१४१	मगडोल	१७३	लबन्दे
१४२	मगडियालें	१७४	लखनपाल
१४३	माथुर	१७५	लाहअन
१४४	कानूनगों	१७६	रैंडाथियें
१४५	फालिये	१७७	रोद
१४६	कफनखों	१७८	रत्नपाल
१४७	खडात्रे	१७९	रतूजिये
१४८	खणोते	१८०	रजूलिये
१४९	खिंदड़िये	१८१	मन्त्रधारी
१५०	गौड़ पुरोहित	१८२	मच्छर
१५१	जम्मे	१८३	मखोतरें
१५२	झनगोत्रे	१८४	दुहाल
१५३	झिंघड़	१८५	दवे
१५४	झलू	१८६	थमन्थ
१५५	झावड़	१८७	थमनोत्रे
१५६	झपाड़ू	१८८	तिरपद्

१८६　डडोरिच
१६०　गन्धरपाल
१६१　गहहाल
१६२　गोकलिये गुसाईं
१६३　गुड्डे
१६४　गुहलिये
१६५　गरोच
१६६　ब्रह्मणीये
१६७　सगडोल
१६८　सुखे
१६६　सूदन
२००　शौचे
२०१　सर्लूण
२०२　सिर खिडंये
२०३　सुनंचाल
२०४　सांगड़ा
२०५　सिंगाड़ा
२०६　सुथड़े
२०७　सरमाथी
२०८　सरोच
२०९　समहोच
२१०　सैन हसन
२११　सुहडिये
२१२　सोल्हे
२१३　सागुणिये
२१४　वैदवे
२१५　मिश्र काश्मीरी
२१६　दीक्षित
२१७　मदिहाटी
२१८　कुरुडु
२१६　पञ्चकरण
२२०　सोवी
२२१　नाग
२२२　राइणे
२२३　काश्मीरी
२२४　ओसदी
२२५　आचारिये
२२६　मैते
२२७　पाधे खजूरे
२२८　पनयालू
२२९　गुठरे
२३०　टुम्बू
२३१　चिष्टपोत
२३२　मंगरूडिये
२३३　पाधे सरीज
२३४　मतवाले
२३५　घावडू
२३६　गलवध
२३७　स्वरवध
१३८　त्रलवाले
२३६　डेहोडी
२४०　प्रोतजड़ठोट
२४१　रोटिये
२४२　रम्बे
२४३　खजूरे
२४४　चीयू
२४५　सखे
२४६　पाधे
२४७　सहिते
२४८　पस्वर
२४६　डाँगमार
२५०　चियू
२५१　नवल गो स्वामी
२५२　पराशर

———०———

सारस्वतकुलभूषण

महामहोपाध्याय पण्डित जगदीशचन्द्रशास्त्री, विद्यासागर,
जम्बू काश्मीर स्टेट.

महामहोपाध्याय पं० जगदीश्वर जी शास्त्री विद्यासागर प्रिन्सीपल राजकीय संस्कृत महाविद्यालय जम्बू ।

आपका जन्म सं० १६२३ विक्रमी के ज्येष्ठ शुक्ला नवमी को जम्बू राजधानी के पार्श्ववर्ती शोभाञ्जन [सुहाञ्जना] नामक ग्राम में प्रसिद्ध राजपण्डितों के घराने में हुआ, आपके पूज्यपाद पिता जी पं० गोकुलचन्द्र जी शास्त्री काशीस्थ गौड़ स्वामी जी से निखिल शास्त्र निष्णात होकर जम्बू में आ रहे थे । श्रीमहाराजा रणवीरसिंह साहबबहादुर से पूजित हो त्रिगर्त देश ही नहीं बल्कि पञ्जाब तक के अविद्यान्धकार को दूर कर विद्या प्रचार कर रहे थे । हमारे चरित्रनायक की जन्म कुण्डली के शुभ ग्रहों को देख पण्डित जी के आनन्द का पारावार न रहा । मन में पूर्ण निश्चय होगया कि यह लघु [क्योंकि आपके ज्येष्ठ सहोदर पं० गङ्गाधर जी शास्त्री थे जो कि संस्कृत के एक पूर्ण विद्वान् हो चुकेहैं] बालक कुल दीपक होगा पं०जीप्रेम से प्राय: इनको (लघु) नाम से ही पुकारते थे।५वर्ष की अवस्था में उपनीत होकर दाक्षिणात्य प० श्रीअम्बाराम भट्ट जी से आपने यजुर्वेदाध्ययन आरम्भ किया । स्वल्प काल में ही पद पाठ क्रम जटा वल्ली आदि के पूर्ण ज्ञाता होकर आपने व्याकरण न्याय वेदान्तादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया । सं० १६४० में अगाध पाण्डित्य के सागर दाक्षिणात्य स्वामी श्रीब्रह्मानन्द जी तीर्थ जम्बू राजधानी में पधारे । श्रीमान् पं० गोकुलचन्द्र जी शास्त्री ने उक्त स्वामी जी के अलौकिक पाण्डित्य को और हमारे चरित्रनायक की अलौकिक प्रतिभा को देख स्वामी जी के पास विद्याध्ययनार्थ बैठा दिया । स्वामी जी भी इस कुशाग्र बुद्धि शिष्य को पा परम प्रसन्न हुये ।

" ब्रुयुः स्निग्धस्य शिष्यस्य गुरवोगुह्यमप्युत " शारीरक भाष्य व व्युत्पत्तिवादादि में व्युत्पन्न कराकर स्वामी जी ने विचारा कि प्रत्यक्ष चमत्कारिणी मन्त्र तन्त्र विद्या के गुप्त रहस्यों के बताने का भी इस शिष्य से योग्यतर अन्य पात्र प्राप्त न हो सकेगा ।

अतः थोड़े ही दिनों में इनको मन्त्र शास्त्र में भी निष्णात कर दिया, सरस्वती भगवती की इन पर पूर्ण कृपा थी, प्रतिदिन स्वल्प समय में ही अपना पाठ कण्ठस्थ कर लेते थे। शेष समय जप पाठ व अश्वारोहणादि व्यायाम में भी लगाया करते थे। धर्म-शास्त्र पर तो इतना आधिपत्य होगया कि धार्मिक विषयों पर राज्य की तरफ से व्यवस्था इनकी ही लिखी हुई स्वीकृत होने लगी। सं० १९४२ में आप श्रीरघुनाथ पाठशाला में यजुर्वेद के प्रोफ़ेसर नियत हुवे। वैदिक कर्मकाण्ड में आपकी प्रसिद्धि दूर दूर तक हो रही थी अतः आप किशनगढ़ स्टेट के सोमयज्ञ में निमन्त्रित होकर गये श्रीदीक्षित जवानसिंह जी से परम सम्मानित हो राजधानी को लौटे।

सं० १९४२ में आपने ही श्रीकाश्मीर नरेश का राज्याभिषेक कराया। मन्त्र शास्त्र पढ़ने से आपके चित्त में अहर्निश यह विचार रहता था कि किसी पुण्य भूमि में जाकर कुछ समय तक तपश्चर्या करें। अतः सं० १९४६ में श्रीवाराणसी में जाकर जपानुष्ठान प्रारम्भ किया। परन्तु गृहकलह के मनुष्यों के आने जाने से मन का विघ्न समझ कर हिमालय की पुण्य भूमि में तपश्चर्या की मन में ठानी और नयपाल यात्रा की। वहाँ पर भी आपके अलौकिक तेज को देख कमाण्डर करनल केसरीसिंह क्षत्रिय प्रभृति सदा आपकी सेवा में तत्पर रहते थे इस प्रकार अपना इष्ट साधन कर सं० १९५० में आप जम्बू राजधानी को लौटे। ऐसे महापुरुष के राजधानी में पुनः पधारने से विविध विरुदावली विराजमान जम्बू तिब्बताद्यनेकदेशाधिपति धर्ममूर्ति महाराजा श्री १०८ प्रतापसिंह साहिब बहादुर जी० सी० आई० के हर्ष का पारावार न रहा। क्योंकि श्रीमान् साक्षात् धर्मावतार होने के कारण धार्मिक पुरुषों की सत्संगति से सदा सन्तुष्ट रहते हैं।

श्रीमहाराजा साहिब बहादुर जी ने अपनी नित्य की पूजा में आप से कथा सुननी प्रारम्भ की। आपके मन्त्र बल के चमत्कारों को देख श्रीमहाराजा साहिब बहादुर की श्रद्धा प्रति दिन आपके चरणों में बढ़ने लगी।

सन् १८५६ में श्रीमहाराजा साहिब ने आप को श्रीरघुनाथ मन्दिर का मुहतमिम और १८५९ में राजकीय संस्कृत महाविद्यालय का प्रिन्सीपल नियत किया। आप के प्रबन्ध से विद्यालय में यह उन्नति हुई कि प्रतिवर्ष पञ्जनदीय विश्वविद्यालय में १५—२० छात्र उत्तीर्ण होने लगे, और पोरबन्दर दक्षिण व बदरिकाश्रम उत्तर से छात्र आ आ कर यहां विद्याध्ययन करने लगे। सं० १९६५ में श्रीमहाराजा साहिब बहादुर ने आप से यथाविधि मन्त्रोपदेश लिया। अब महाराज ऐसी गुरुभक्ति व पूर्णश्रद्धा दिखलाते हैं, कि प्रतिदिन प्रातः सायं श्रीमान् आप का चरण स्पर्श करना अपना मुख्य कर्त्तव्य समझते हैं। अत; आप को सदा ही (राजधानी में तथा विदेश में) श्रीमहाराजा साहिब बहादुर के संग ही रहना पड़ता है। ऐसे विद्वद्वर की कीर्त्ति गवर्मेण्ट आलिया के कानों तक भी पहुंची। आप को सं० १९७१ में "महामहोपाध्याय" की परमोच्च पदवी से प्रतिष्ठित किया गया। सं० १९७२ में भारतधर्म महा मण्डल ने आप को "विद्यासागर" की पदवी से सम्मानित किया। राजनीति में भी आप का चातुर्य देख, श्रीमहाराजा साहिब बहादुर ने आप को सिटी म्युनिसिपलटी का कमिश्नर नियत किया। अंग्रेज़ी भाषा न जानने पर भी आप कमेटियों के विवादास्पद विषयों में अपनी अकाट्य युक्तियों से बड़े २ वुकला आदि को निरुत्तर कर देते हैं। यहां यह वर्णन करना भी अनुचित न होगा कि "रत्नों की खानि में रत्नों का ही प्रादुर्भाव होता है।" आप के चिरञ्जीव पुत्र पं० श्रीचन्द्र जी १६ वर्ष की ही अवस्था में पूर्ण पाण्डित्य लाभ करके "प्रवर्त्तितो दीप इव प्रदीपात्" की उक्ति को चरितार्थ कर रहे हैं।
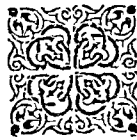
श्री महा० म० बांकेराय नवलगोस्वामी।

——:※:——

श्री पण्डित बांकेराय नवल गोस्वामी का जगद् विख्यात श्रीनवल परिकर में जन्म हुआ है, जिस में बड़े २ महात्मा और विद्वान् धर्म का प्रचार करने को प्रगट हो चुके हैं, अब भी जिन के बनाये हुए अनेक संस्कृत और भाषा के ग्रन्थ उन की अन्यमान्य विद्वत्ता और उन के महानुभाव होने का परिचय देरहे हैं। इसी कारण से राजा प्रजा दोनों में उन का परमादर होता चला आया है।

इस वंश के वृत्तान्त को दिल्ली के सरकारी गज़ेटीयर में श्रीमान् साहिब डिप्टी कमिश्नर बहादुर ने इस प्रकार से प्रारम्भ किया है।

Extract from the Punjab District Gazetteers, Volume V. A., 1912, Delhi District, edited by Major H. C. Beadon, Deputy Commissioner.

Among Hindu scholars of mark may be noticed Pandit Banke Rai Nawal Goswami who comes from a family always noted for their eminence in Sanskrit learning: an ancestor of his family settled in Delhi about 200 years ago.

और इस वंश का संक्षेप से वृत्तान्त श्रीमान् सरलेपिलग्रिफिन् साहिब ने भी अपनी किताब, पंजाब चीफस में अंकित किया है।

हमारे चरित्रनायक के पूज्य पिता श्रीमान् पं० विश्वेश्वरनाथ नवल गोस्वामी जी प्रथम दिल्ली और रामपुर में अपने मातामह पण्डित भवानीदत्तजी के पास अध्ययन किया जो कि श्रीमान् नवाब रामपुर के राज पण्डित थे। उसके उपरान्त प्रायः २० वर्ष पर्य्यन्त काशी और नदिया में श्रीमान् पण्डित काकाराम शास्त्री

सारस्वतवंशप्रदीप

महामहोपाध्याय पं. वांकेरायशास्त्री विद्यासागर,
M. R. A. S., F. P. U.

प्रभृति बड़े २ विद्वानों के पास शिक्षा पाई थी । जब यह दिल्ली में आये तब दिल्ली के सुप्रसिद्ध रईस राय छुन्नामल जी ने अपने यहां के दानाध्यक्ष का अधिकार दिया और राजा प्रजा दोनों मे इन का बड़ा आदर हुआ । क्योंकि वह केवल संस्कृत के एक शिक्षक और धुरन्धर विद्वान् ही न थे, किन्तु वह देश और जाति के हित साधन में बराबर लगे रहते थे, उन्हों ने अपने अनुमान से आगामी आवश्यकताओं का विचार कर समुद्रयात्रा, स्त्रीशिक्षा, रीति संशोधन आदि विषयों पर आज से ५० वर्ष पहिले वह पुस्तकें लिख दी थीं, जिन पर आज घोर आन्दोलन हो रहा है ।

यथारत्नाकरसेतुः । कन्याध्ययन शङ्कानिराश । कन्या दुःख निवारण । दत्तकविवादान्धकार । पाखण्डिमुखमर्दन । आदि २५ पुस्तकें हिन्दी, संस्कृत की आपने लिखी थीं जिन में से प्रायः पुस्तकें देहली लिटरेरी सोसाइटी की तरफ़ से छापी जाकर सर्व सामान्य में वितीर्ण हुई थीं और जिन के विषय में परमादरणीय पञ्जाब गवर्नमेन्ट ने अनेक चिट्ठियों और परवानों द्वारा प्रसन्नता प्रकट करते हुए उक्त पण्डित जी का धन्यवाद किया था । इन के उद्योग से सन् १८६८ में यहां एङ्गलो संस्कृत स्कूल, स्थापन किया गया और वह उस के मुख्याध्यापक बनाये गये जिस के कारण से संस्कृत और भाषा के प्रचार में उन्नति हुई और अन्त समय तक उसी स्कूलमें काम करते रहे । वही स्कूल अब एङ्गलो संस्कृत जुबली हाई स्कूल के नामसे प्रसिद्ध है । देहली गवर्नमेन्ट कालिज में प्रथम में आपने ही संस्कृत का प्रारम्भ कराया था, गवर्नमेन्ट आफइण्डिया की तरफ़ से जब संस्कृत की पुस्तकों की तलाश का कार्य प्रारम्भ हुआ तब उन्होंने इसमें बड़ी सहायता की थी । उस पर मुख्याधिष्ठाता श्रीमान् डा० ब्यूलर ने अपनी काश्मीर रिपोर्ट में यह लिखा था । यूरुप और भारतवर्ष के बड़े २ विद्वान् इन का परमादर करते थे और गूढ़ विषयों पर इन से सम्मति लेने को इन के स्थान पर आते थे । अदालतों में हिन्दू धर्म की व्यवस्थाएं ली जाती थीं और वह चीफ़कोर्ट तक मानी जाती थीं। आप को प्राचीन लेख आदि के अन्वेषण का बहुत शौक था । (आरका औलौजी) और सुप्रसिद्ध प्राचीन तत्ववेत्ता डाक्टर

ब्यूलर, डाक्टर भाऊदाजी और डाक्टर भगवान लाल इन्द्र जी प्राचीन लेखों के विषय में प्रायः आप से सम्मति लिया करते थे, दिल्ली के पास से प्राप्त हुए कई संस्कृत शिला लेखों का अनुवाद करके आपने बंगाल एसियाटिक सोसाइटी में भेजा था जो कि उस के जनरलों में मुद्रित हुआ था ।

पञ्जाब में यूनीवर्सिटी स्थापन होने के पहिले जो डिपार्टमेन्टल परीक्षाए हुआ करती थीं उन के आप परीक्षक नियत किये जाते थे । इन के कार्यों के उपलक्ष में गवर्नमेन्ट ने खिलअत सनदें और और पारितोषिक देकर इन का मान बढ़ाया था। सन् १८७७ के शाहनशाही देहली दरबार में आप निमन्त्रित किये गये थे ।

श्रीगोस्वामी जी अत्यन्त सरल प्रकृति और श्रीकृष्णचन्द्र जी के अनन्य भक्त थे । श्रीमद्भागवत में उन का परम अनुराग था । यद्यपि परम्परागत इन का श्री विष्णु स्वामी सम्प्रदाय था, परन्तु इन्होंने स्वयं श्रीचैतन्य सम्प्रदाय की दीक्षा ग्रहण की थी।

हमारे चरित्रनायक का जन्म सम्वत् १९१६ वैशाख कृष्णा ५ को अपने मातामह श्री पण्डित शिवलाल जी के यहां काशीपुर में हुवा था । ८ वर्ष की अवस्था में हिन्दी भाषा के लिखने पढ़ने का सामान्य अभ्यास हो गया था । उस के उपरान्त आप अपने पूज्य पिता जी के पास संस्कृत और एङ्गलो संस्कृत स्कूल में अंग्रेज़ी पढ़ने लगे १५ वर्ष की अवस्था में यज्ञोपवीत संस्कार, और १८ वर्ष की अवस्था में आप का विवाह हुआ । १९ वर्ष की अवस्था में श्री पितृचरण का स्वर्गवास हो गया । इस कारण से इन को काशी जाना पड़ा और चिरकाल पर्य्यन्त वहाँ श्रीमहामहोपाध्याय राममिश्र शास्त्री जी आदि कई विद्वानों के पास अध्ययन किया आप की अभी दिल्ली आने की इच्छा नहीं थी, परन्तु शिष्यवर्ग के आग्रह से दिल्ली आना पड़ा और उसी समय सर्वसामान्य को उपदेश करने के निमित्त उसी स्थान में कथा बांचनी प्रारम्भ की जहां कि इन के श्रीपितृचरण ने ३० वर्ष तक निरन्तर उपदेश किया था । स्थान पर विद्यार्थियों को भी उसी प्रकार पढ़ाना प्रारम्भ किया । सन् १८८४ में गवर्नमेन्ट ने प्राचीन

पुस्तकों की तलाश के काम पर नियत किया जिस को इन्हों ने ऐसी उत्तम रीति से किया कि जिस पर प्रसन्न होकर इन को दरबारी बनाने की रिपोर्ट करते हुवे यह शब्द लिखे गये, (He is a best Sanskrit Scholer of Delhi.) इस पर गवर्नमेन्ट की ओर से दरबारी की सनद प्रदान की गई और सन् १८८६ में गवर्नमेन्ट हाई स्कूल के अध्यापक नियत किये गये।

सन् १९०३ के कौरोनेशन दरबार में पञ्जाब के समस्त ब्राह्मणों की ओर से जो आशीर्वादात्मक अभिनन्दन पत्र लण्डन भेजा गया था उस कमेटी के आप मन्त्री नियत किये गये थे।

और सन् १९०३ के दिल्ली दरबार पर जो उसी प्रकार का अभिनन्दन पत्र समस्त भारतवर्ष के ब्राह्मणों की ओर से निवेदन किया गया था उस कमेटी के प्रेसीडेन्ट श्री १०८ श्रीमिथिलेश्वर महोदय और मन्त्री श्री गोस्वामी जी निर्वाचित हुवे थे।

सन् १९०७ में परममाननीया गवर्नमेन्ट ने आप को महामहोपाध्याय की पदवी प्रदान कर आप का गौरव बढ़ाया था। उस पर श्रीमान् कमिश्नर साहिब महोदय ने गोस्वामी जी को बधाई का पत्र लिखा था। सन् १९०८ में पञ्जाब यूनीवर्सिटी के फेलो-बर और परीक्षक नियत किये गये और अब हिन्दी और संस्कृत की बोर्डआफस्टेडीज़ के मेम्बर चुने गये हैं। आप के विद्यार्थी यूनीवर्सीटी की शास्त्री की परीक्षा में प्रविष्ठ होते रहते हैं। सन् १९०९ में रॉयलएसियाटिक सोसाइटी (राजकीय सभा) के मेम्बर नियत हुए। और उसके उपरान्त हिस्टोरिकिल सोसाइटी पञ्जाब के भी मेम्बर निर्वाचित हुए।

सरमोनियर विलियम्स, डाक्टर पालड्यूसन, प्रोफ़ेसर सी० बेंडाल, प्रोफ़ेसर मेनायफ़ आदि अनेक यूरुप के प्रोफ़ेसरों ने स्थान पर पधार कर आपका गौरव बढ़ाया था।

गवर्नमेण्ट पञ्जाब ने अपने खर्च से गोस्वामी जी को ब्रि-

लायत भेजने का निश्चय किया था, परन्तु किसी कारण से आप न जासके ।

सन् १९११ के दिल्ली दरबार पर आपने पञ्जाब गवर्नमेन्ट के के द्वारा निवेदन किया था कि जब हिन्दुस्थान को इस दरबार का परमगौरव दिया जाता है तो इस मङ्गलमय शुभ अवसर पर हिन्दुओं की भी कुछ रीति काममें लाई जाय । यदि किसी कारण से यह अस्वीकार न हो सके तो भारतवर्ष के माननीय ब्राह्मणों और आचार्यों महोदयों से आशीर्वाद ग्रहण किया जाय ।

निश्चित होने के उपरान्त परमादरणीय श्रीमान् पञ्जाब के लेफ्टीनेन्ट गवर्नर महोदय ने इस कार्य के सम्पन्न करने के निमित्त एक कमिटी बनाई और उस के प्रेसीडेन्ट परममाननीय श्री १०८ महाराजा बहादुर दरभङ्गा को और मन्त्री श्री गोस्वामी जी को निर्वाचित किया ।

इसी कोरं नेशन हिन्दू दरबार आल इन्डिया कमेटी ने—हिन्दू प्रोसेशन-पूजन-हवन-प्रार्थना आदि दरबार सम्बन्धी कार्य सम्पन्न किये. और तारीख १६ दिसम्बर को किंगस् कैम्प में श्री १०८ मिथिलेश्वर महोदय की अध्यक्षता में भारतवर्ष के पूज्यपाद आचार्य और माननीय महामहोपाध्यायों ने श्री १०८ भारत संम्राट् और १०८ श्रीमती संम्राज्ञी महोदया को आशीर्वाद दिया उसी समय श्री गो स्वामी जी का बनाया हुआ राजभक्ति प्रकाश जो कि उन्हों ने श्रीमान् लार्ड मिन्टो महोदय की सम्मति से बनाया था, और दिल्ली का इतिहास और समस्त भारत वर्ष के हिन्दुओं की ओर से श्री गोस्वामी जी कृत परमादरपूर्वक आशीर्वादात्मक पद्यावली श्री १०८ भारत संम्राट् महोदय की सेवा में समर्पण की गई, जिस को उन्हों ने हर्ष पूर्वक स्वीकार किया। आप दरबार लोन इक्जबीशन कमेटी के भी प्राचीन प्रदर्शिनी के मेम्बर नियत किये गये थे । १३ तारीख को जब श्री १०८ महोदय यहां पधारे थे उस समय हमारे चरित्रनायक ने एक आशीर्वादात्मक श्लोक पढ़ कर श्रीमान् को आशीर्वाद दिया था उस पर

माननीय पञ्जाब के श्रीमान् लाट साहब द्वारा श्री १०८ महोदय ने अपनी प्रसन्नता प्रकट की थी।

आप बादशाही मेले की उस कमेटी के निरीक्षक हुए थे जिसमें दरबार सम्बन्धी संस्कृत और हिन्दी कविताएं आई थी इन सब कार्यों के उपलक्ष में पण्डित जी को दो तमग़े (पदक) दो सनदें और कई प्रसन्नता सूचक पत्र गवर्नमेन्ट की ओर से दिये गये थे।

गो स्वामी जी के सदुपदेश से इनके मुख्य शिष्यों ने इनके नाम पर सं० १९४३ में श्रीनवल प्रेम सभा स्थापन की और श्रीभगवत्प्रेम का प्रचार हिन्दी भाषा और संस्कृत की उन्नति-राजभक्ति का प्रसार यह सभा के मुख्य उद्देश्य हैं। भारत वर्ष के अनेक नगरों में इस की शाखा सभायें हैं इस सभा के आधीन एक विद्यालय और पुस्तकालय भी है जो कि उन्नति के साथ काम कर रहे हैं। प्रायः ३५००० हज़ार पुस्तकें और कलेण्डर छपवाकर सभा बिना मूल्य वितीर्ण कर चुकी है भारत वर्ष के अनेक विद्वानों का पदक (तमग़े) उपाधियां और मान पत्रों से सन्मान किया है। दिल्ली से आपने ११ मील दक्षिण पर जगत् प्रसिद्ध कुतब में जो लोहस्तम्भ है जिसे लोहे की कीली कहते हैं उस पर खुदे हुए श्लोकों का अनुवाद संगमरमर के पत्थरों पर खुदवा कर उस के पास लगवाया है। और दिल्ली से उत्तर में पहाड़ के ऊपर एक प्राचीन चरण चिन्ह की अन्वेषण करके उस का विष्णुपद होना सिद्ध किया है, जिस का कि वृत्तान्त पूर्वोक्त लोहस्तम्भ पर खुदा हुआ है। हमारे चरित्रनायक चिरकाल पर्यन्त उस वर्णाश्रम धर्म रक्षिणी सभा के मन्त्री रहे जिस के कारण से श्री भारतधर्ममहामण्डल की बड़ी उन्नति हुई इसी कारण से उस समय 'हिन्दी-बङ्गवासी' 'ख़ैरख्वाह' कश्मीर आदि अनेक समाचार पत्रों ने इस सभा को श्रीभारतधर्ममहामण्डल की पोषयित्री करके लिखा था उसी सभा के एक बहुत बड़े अधिवेशन में जिस में कि भारतवर्ष के बड़े २ विद्वान् माननीय आचार्य और बड़े २ सेठ साहूकार सुशोभित थे, भारत मार्त्तण्ड गोलोक निवासी श्री गट्टूलाल जी महाराज बम्बई निवासी के हस्तकमलों से अपने पूज्य पिता श्री-विश्वेश्वरनाथ जी महाराज के नाम पर एक पुस्तकालय स्थापन कराया

था उसी समय दिल्ली के सुप्रसिद्ध रईस रायबहादुर ला. रामकृष्णदास जी ने उक्त पुस्तकालय के वास्ते एक विशाल कमरा बनवा दिया था उसी स्थान में अब वह पुस्तकालय स्थापित है और उस में संस्कृत-हिन्दी-बङ्गला-गुजराती-उर्दू-अंग्रेज़ी आदि की ३००० तीन हज़ार पुस्तकें हैं इस से सर्वसामान्य को बहुत लाभ प्राप्त होता है। श्रीगोस्वामीजी ने दिल्ली में मद्यमाँस निवारणी सभा स्थापन की थी, इस कारण से लन्दन के आबकारी पत्र ने आप का चित्र और चरित्र मुद्रित किया और पार्लीमेण्ट के सुप्रसिद्ध मेम्बर मि० केन साहिब महोदय और मि० विलसन साहिब महोदय आप का बहुत आदर करते थे और श्रीमहारानी विक्टोरियाके जुबली महोत्सव पर एक पदक श्रीगोस्वामी जी को भेजा था। आप आयुर्वेद यूनानी कालिज की कमेटी के ट्रस्टी हैं।

श्री पण्डित जी एक सुप्रसिद्ध महामहोपदेशक हैं और प्रायः भारतवर्ष के सभी प्रान्तों में आपके व्याख्यान होते रहते हैं। इसके उपलक्ष्य में अनेक सभाओं और राजाओं ने इन्द्रप्रस्थरत्न, इन्द्रप्रस्थभूषण, भक्तिभूषण आदि की प्रतिष्ठा और पदक और खिलत, प्रदान करके श्रीगोस्वमी जी का गौरव बढ़ाया है।

आपकी काश्मीर, अलवर और बाँकीपुर यात्रा के समय वहां के परमधर्मनिष्ठ १०८ महाराजाओं ने श्रीगोस्वामी जी के भगवद्भक्ति के व्याख्यान परम प्रेम पूर्वक श्रवण किये थे जिस पर श्रीमहाराजा काश्मीर महोदय ने अपनी शुभ सम्मति प्रकट की थी।

सन् १६७१ के सभापति चुने गये थे आप श्री १०८ परम माननीय महाराजाधिराज बहादुर बर्द्धमान के तो आप राज्य पण्डित ही हैं और भारतवर्ष के प्रायः राजामहाराजाओं से आप का घनिष्ठ सम्बन्ध है और वह आपका परम आदर करते हैं आप परीक्षोत्तीर्ण संस्कृत के अनेक हिन्दी और संस्कृत के विद्यार्थियों को पदक और पुस्तकें प्रदान कर उनका उत्साह बढ़ाते रहते हैं।

परमादरणीय श्री १०८ श्री मिथिलेश्वर महोदयने सं०१६७१ में श्रीगोस्वामी जी के दरभङ्गा पधारने के समय अपने यहाँ की

अति प्राचीन और परमादरणीय श्रौतपरीक्षोत्तीर्ण परीक्षा प्रदान कर श्रीगोस्वामी जी की प्रतिष्ठा बढ़ाई थी ।

सं० १९७२ में नदिया की अति प्राचीन और माननीय बङ्ग विबुध जननी सभा ने विद्यासागर की उपाधि प्रदान कर आप का गौरव बढ़ाया है ।

आप प्राय: परमादरणीय श्री वायसराय महोदयों की सेवा में उपस्थित होकर फल फूलों सहित उनको आशीर्वाद दे दिया करते थे परन्तु आपकी अभिलाषा थी कि किसी अवसर पर दिल्ली के समस्त पण्डित मिल कर यह कार्य करें इस विषय को स्टेटएंटरी के समय उन्हीं ने निवेदन किया, जिसे श्रीमान् वायसराय महोदय ने बहुत पसन्द किया, किन्तु किसी कारण से उस समय वह कार्य सम्पन्न न होसका परन्तु १२ नवम्बर को श्रीमान् चीफ कमिश्नर साहिब महोदय की कृपा से पण्डितों का एक डेपुटेशन श्रीमान् वायसराय महोदय की सेवा में आशीर्वाद देने के निमित्त उपस्थित हुआ था और उसके अधिष्ठाता श्रीगोस्वामी जी थे ।

हमारे चरित्र नायक ने अनेक पुस्तकें निर्माण की हैं और उनको छपवा कर उनकी हज़ारों प्रतियां बिना मूल्य वितीर्ण की हैं—

श्री गङ्गा स्थिति निर्णय—१०००० हज़ार,
डिवोशनटू लायलटी—५००० हज़ार,
राजभक्ति प्रकाश हिन्दी—२००० हज़ार,
राजभक्ति प्रकाश इङ्गलिश—
अनुवाद सहित—३३००० हज़ार,
दिल्ली का इतिहास—१००० हज़ार,

महामहोपाध्याय श्री पं० हरनारायण जी शास्त्री विद्यासागर

आप पंच जातीय सारस्वत ब्राह्मण हैं। आपके पूर्व पुरुष भेरा ज़िला शाहपुर के निवासी थे। आपके पिता जी किसी कार्य्य वश बरेली में आकर बसे थे। वहीं श्री युक्त शास्त्री जी का जन्म संवत् १९२७ कार्तिक कृष्ण १३- शुक्रवार (२४ अक्टूबर १८७०) को अपने मातामह के यहां बरेली में हुआ। आपके पिता पं० रामदयालु गोस्वामी प्राचीन ढंग के एक अच्छे मार्मिक पंडित थे। आप विष्णु स्वामी सम्प्रदाय के गोस्वामी थे। शास्त्री जी ने आरम्भिक शिक्षा अपने घर पर ही प्राप्त की। सप्तम वर्ष में आपका यज्ञोपवीत संस्कार हुआ इसके अनन्तर वेदाऽध्ययन के साथ २ व्याकरण और काव्य का अभ्यास करते हुए १२ वर्ष की ही अवस्था में श्रीमद्भागवत बाँचने योग्य सुबोध पंडित हो गए थे। तदऽनन्तर मथुरा के वेद भाष्यकार पण्डित उदयप्रकाशदेव जी से आपने अष्टाध्यायी और महाभाष्य का अभ्यास किया। और विद्यावागीश पं० गोविन्दराम जी शास्त्री के द्वारा न्याय और वेदान्त के ग्रन्थ पढ़े। इसी बीच में सभाओंमें व्याख्यान देना आरम्भ किया और संस्कृत में अच्छी कविता करनेलगे। १७ वर्ष की अवस्था में आपके पिता जी का स्वर्गवास हुआ इस कारण शीघ्र ही आपको पंजाब की परीक्षाओं में प्रविष्ट होनापड़ा। सं० १८९०में आपने पंजाब यूनीवर्सिटीकी शास्त्री परीक्षा पास की और अंग्रेजी में भी डिप्लोमा लिया इन दोनों परीक्षाओंमे आप यूनीवर्सिटीमें सर्व प्रथम रहे। तदनन्तर आपने काशी में जाकर महामहोपाध्याय पं० राम मिश्र शास्त्रीजीसे उच्चकोटि के ग्रंथों का अध्ययन किया। इसी बीच में आपकी समस्या पूर्ति पर प्रसन्न होकर बंगाल की विद्वत् समिति ने 'काव्यानंद' की उपाधि से आपको भूषित किया। सन् १८९९ में आप हिन्दू कालेज दिल्ली

लिखी हैं। आप संस्कृत साहित्य के अपूर्व्व पंडित हैं और अब आपकी प्रवृत्ति वेदान्त की ओर अधिक होगई है। श्रीमान् महाराजा बहादुर दरभंगा नरेश ने अपने राजकुमारों के यज्ञोपवीत महोत्सव पर जब आपको सादर निमन्त्रित किया था उस समय आपने कितने ही महामहोपाध्यायों और मिथिला की विशिष्ट विद्वन्मण्डली के समक्ष अपनी विद्वत्ता और प्रतिभाशालिता का परिचय कविताकलाप के द्वारा सभा में दिया था उसपर महाराज बहादुर दरभङ्गा नरेश ने प्रसन्न होकर एक विशिष्ट दरबार करके आपको अपने यहां का सर्वोच्च मानस्वरूप "धौत वस्त्र युगुल से" अलंकृत किया।

सनातनधर्म्मी होने पर भी आपको किसी मत से द्वेष नहीं है अतः प्रत्येक मतके लोग आपका आदर समान भावसे करते हुये श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं आप राजा और प्रजा दोनों के प्रीत भाजन हैं। भारत वर्षमें आप संस्कृतके एक उच्च श्रेणी के विद्वान् माने जाते हैं।

पुराणों पर आपकी अत्यंत श्रद्धा है। आपका सिद्धांत है कि पुराणोंके बिना पढ़े कोई पंडित हो ही नहीं सकता। आपने २१ वर्षके लिये दिल्ली में पुराण महायज्ञ आरंभ किया है जिसे १६ वर्ष हो चुके हैं जिसमें आपने प्रण किया है कि १८ पुराण—महाभारत—वाल्मीकीय रामायण के और योग वशिष्ट इन २१ ग्रन्थों को एक आसन पर वांचकर निर्लोभ भाव से लोगों को श्रवण करादेना। अब भी आपका यह अनुष्ठान नियमपूर्वक चलता है आप मंत्र शास्त्र के अपूर्व विद्वान् हैं और उसमें आपकी विशेष श्रद्धा है।

इतने विशिष्ट गुण सम्पन्न विद्वान् होने पर भी आप में गर्व का लेश नहीं है। जो कोई आप से एक बार मिल लेता है वह सदा के लिये आप का प्रेमी बन जाता है। परमात्मा ऐसे सुशील—सच्चरित्र एवं सनातनधर्म्म के दृढ़व्रती विद्वान् को दीर्घायु और यशस्वी करे यही प्रार्थना है।

लेखक—रामस्वरूप कौशल्य।

तैलङ्गवंशभूषण

भारतरत्न पण्डित गट्टूलाल वेदान्तपञ्चानन.

भारतरत्न पं० गट्टूलाल जी वेदान्त पञ्चानन

मुम्बई में आपने बड़ा भारी पुस्तकालय स्थापन किया है, जो कि सम्प्रति एक पञ्चायत के आधीन है। आप जन्मान्ध थे और अपने समय के अपूर्व विद्वान् थे। वेदान्तमें आपने कई ग्रन्थ लिखे हैं।

श्रीमान् पं० विद्यारत्नजी पाराशर

सम्पादक ब्राह्मण समाचार लाहौर।

इनका जन्म ४ माघ सं० १८४२ वि० को राहों जिला जालंधर में गर्ग गोत्री सारस्वत ब्राह्मणों के एक उच्च पाराशर वंश में हुआ।

आपके पूर्व पुरुष श्रीमान् पं० आत्माराम जी अपने समय के एक प्रसिद्ध वैद्यराज थे, और पहले अपने पैतृक ग्राम जनोहा में निवास करते थे, रोग चिकित्सा में आपके महा अनुभवी तथा कुशल हस्त होने की प्रसिद्धता सुनकर राहों के एक धनवान् खत्री ने अपने पुत्र की चिकित्सा के लिये पं० जी को बुलाया, और इसके आरोग्य हो जाने पर पंडित जी को कृतज्ञता पूर्वक एक बड़ा और पक्का मकान पुरस्कार रूपसे दिया और यह साग्रह विनयकी कि आप राहों हीमें आकर चिकित्सा आरम्भ करें। वैद्यराज ने इस प्रार्थना को सहर्ष स्वीकार किया, और कुटुम्ब भी राहों ले आये। वैद्यराज कुछ योगाभ्यास भी करते थे, और आपने अपने शरीर त्याग का समाचार कई दिन पहले दे दिया था वैद्यराज जी के चार पुत्र थे, जिन में से केवल पं० गज्जूराम और पं० राधारामका वंश आगे चला, क्योंकि पं० नयनसुख विना सन्तान थे और पं० छज्जूराम के केवल एक पुत्र हुआ जो विना सन्तान ही स्वर्ग वास हुआ। इन में पं० राधाराम जी अपने पिता की तरह योग्य चिकित्सक हुये, और पं० गज्जूराम अपनी दुकान के काम में पड़गये। पं० राधाराम जी के पश्चात् पं० गोविंदराम जी का युवावस्था में ही स्वर्गवास होगया और घर का भार पं० गोविन्दराम जी के पुत्र पं० काशीराम जी के

सिर पर छोटी सी आयु में ही आ पड़ा। जिसे आपने बड़ी योग्यता से सम्भाला और महाजनों की एक पाठशाला खोलकर उसे ऐसी उत्तम रीति से चलाया, कि शीघ्र नगर में सर्व प्रिय होगये। उनके स्वर्गवास को २५ वर्ष बीत जाने पर आज भी राहों नगर में जितने पुराने दुकानदार तथा मुनीम हैं वह पं० काशीराम जी का शिष्य होने का अभिमान करते हैं, और सादर उनका नाम स्मरण करते हैं

पं० काशीराम जी के सुपुत्र पं० जगन्नाथ जी का जन्म संवत् १८२१ वि० में हुआ था। आपने अंग्रेजी फारसी में योग्यता प्राप्त करके डाकखाने में नौकरी प्राप्त की और अब आप ३० वर्ष की नौकरी के पश्चात् शीघ्र ही पेन्शन लेने वाले हैं। पं० विद्यारत्न पाराशर जी इन ही पं० जगन्नाथ जी के सुपुत्र हैं।

आपको बालपन से ही जाती सेवा और देश हित की लग्न है। अभी आप चौथी पांचवीं श्रेणीमें ही पढ़ते थे, कि समाचार पत्र पढ़ने की ओर आप की रुचि हो गई, जो बढ़ते २ एक दो वर्ष में निबन्ध लिखने के रूप में परिवर्तित हो गई, और अन्त को इतनी बढ़ी कि सन् १९०२ में छावा हाईस्कूल जालन्धर से मिडिल पास करते ही आपने "सफीर पंजाब" नाम का एक एक उर्दू पाक्षिक पत्र जालन्धर से निकाल दिया। जिस में अनभिज्ञता के कारण आप को आठ नौ मास में ही कई सौ रुपया घाटा भरना पड़ा। तदुपरान्त आप के पिता जी ने आप को आगे पढ़ने के लिये अनुरोध किया। आपने भी स्वीकार कर लिया, और स्कूल में प्रविष्ट होगये। किन्तु पढ़ाई में बहुत कठिन परिश्रम करने के कारण रोग शय्या आरूढ़ हो गये और ऐसे रोग में फंसे, कि निरोग होने पर भी डाक्टरों ने आगे पढ़ने की आज्ञा नदी, और प्राणों का भय बतलाया लाचार आप को फिर पढ़ाई छोड़नी पड़ी। पिता जी के यत्न से आप को डाकखाने में नौकरी भी मिलती थी, किन्तु आरम्भ से ही, स्वतन्त्र प्रिय होने के कारण आपने उसे स्वीकार न किया और जाती सेवा का शुभ कार्य्य करने लगे।

पं० विद्यारत्न पाराशर.

सम्पादक—ब्राह्मण समाचार लाहौर।

१६०३ से १६११ तक आपने जाति सेवा के साथ ही साथ कई स्थानों पर लेखक तथा अध्यापक का कार्य्य भी किया।

कई स्थानों पर पाठशालायें तथा स्कूल स्थापित कराये। इन स्कूलों में से एक पठानकोट (जिला गुरदासपुर) का आर्य्य मिडिल स्कूल भी था, जिस को आपने १६११ में प्राइमरी स्कूल के रूप से स्थापित करके केवल दस मास में ही मिडल स्कूल के दर्जे पर पहुंचा दिया। जालन्धर शहर की सनातन धर्म हिन्दी पाठशाला और नूरमहल जिला जालन्धर के आर्य्य मिडिल स्कूल की स्थापना में भी आप का ही हाथ था।

सन् १६१२ में पं० विद्यारत्न जी ने पठानकोट आर्य स्कूल के मुख्याध्यापक पद से त्याग पत्र देकर रावलपिंडी के "ब्राह्मण गजट" का सम्पादन किया और जब रावलपिंडी का गजट" और लाहौर का "ब्राह्मण" बन्द हो गये, रावलपिंडी और फिर जालन्धर से अपना साप्ताहिक पत्र "व्यास" जारी करके जातीय सेवा आरम्भ की इन्हीं दिनों में आपने "ब्राह्मण जाति की सेवाके लिये एक "ब्राह्मण डायरेक्टरी" जिसमें भारत वर्ष की समस्त ब्राह्मण सभाओं, महासभाओं और संस्थाओं का वर्णन था और एक दर्जन ब्राह्मण जाती उपयोगी ट्रैक्ट प्रकाशित किये। "व्यास" १० महीना चलकर फिर बंद हो गया, और डायरेक्टरी तथा ट्रैक्ट का प्रचार भी कुछ आशा वर्धक न हुआ। सारांश यह कि इन सब कामों में आपको दो सहस्र के लगभग घाटा रहा किन्तु आपकी जाति सेवा की लग्न ऐसी है कि इतने पर भी आपने साहस न हारा, मार्च १६१६ से लाहौर आकर उर्दू "ब्राह्मण समाचार" जारी कर दिया, और "व्यास" के ग्राहकों को यह पत्र मुफ्त देकर, उनका शेष चंदा अदाकर दिया। उस समय से आप अपने उर्दू "ब्राह्मण समाचार" द्वारा ब्राह्मण जाती की जो सेवा कर रहे हैं, वह पांचालस्थ उर्दू पढ़े हुए ब्राह्मण सज्जनों से छिपी नहीं।

बड़े हर्ष की बात है, कि इस वर्ष पंजाब ब्राह्मण महा सम्मेलन ने "ब्राह्मण समाचार" की सेवा से प्रसन्न होकर अपने १४ वें प्रस्ताव में उसकी प्रशंसा की। और आर्थिक सहायताकी प्रतिज्ञा की।

पं० जी को आरंभ से ही चिकित्सा का भी बड़ा शौक है, और इस विषय पर पुस्तकों को प्रायः देखते रहते हैं। आपने बायोथ्रेपी Bio'therapy आयुर्विज्ञानकी उच्च उपाधियां M.S.B. और P.S.B अर्थात् मास्टर आफ साईंस ऑफ बायोथ्रेपी और डाक्टर आफ साईंस आफ़ बायोथ्रेपी की प्राप्त की है आजकल होम्योपेथी Homeopydthy की पुस्तकों का अवलोकन कर रहे हैं। और आशा है इस विद्या में सफलता प्राप्त करेंगे।

फार्म नम्बर १२ से फार्म नम्बर २५ तक जनरलप्रेस इटावा में छपा
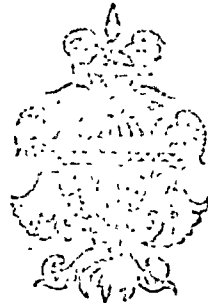
Hari Vinod, Vaidyabhushan,
PT. THAKUR DATTA SHARMA VAIDYA,
PROPRIETOR,
"AMRITDHARA" & "DESHOPKARAK",
Lahore.
پنڈت ٹھاکر دت شرما وید موجد امرت دھارا لاہور
અમૃતધારાના આવિષ્કાર કર્તા,
શ્રીમાન પંડિત ઠાકુરદત્તજી શર્મ્મા વૈદ્ય.
* पं० ठाकुरदत्त शर्म्मा वैद्य *
मालिक "अमृतधारा" लाहौर।
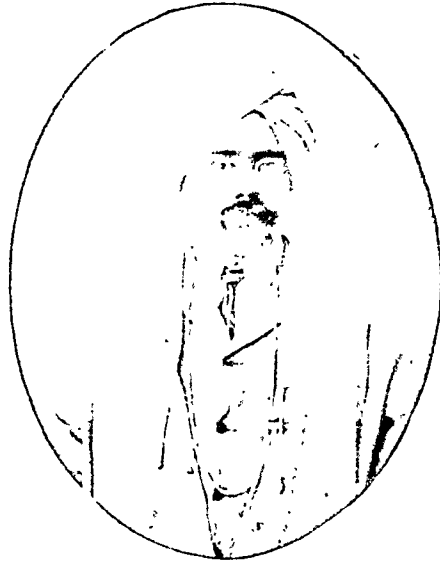
इतना प्रेम होगया कि सारा २ दिन संन्यासियों के पीछे रहते थे, जहाँ सुन पाते कि अमुक जगह एक मनुष्य उत्तम योग जानने वाला है, वहां तुरन्त पहुंचते थे, स्कूल में एक सप्ताह प्रति मास अनुपस्थित रहने लगे, परन्तु तिस पर भी श्रेणी में प्रथम रहते। डा० गुलामहुसैन की पुस्तकों ने इनको बहुत सहायता दी, यह प्रेम दिन प्रति दिन बढ़ता गया, अन्तिम एफ़. ए. में एक वर्ष पढ़ कर उसको छोड़ना ही पड़ा, बाबा विष्णुदास स्वर्गवासी से चिकित्सा पढ़ना आरम्भ किया, और शीघ्र ही समाप्त करके उनसे चिकित्सा करने की आज्ञा ली। फिर पं० जगत्राम राज्य वैद्य जम्बू के पास जाकर कुछ अनुभूत योग प्राप्त किया।

पं० ठाकुरदत्त शर्मा जी के मन में चिकित्सा करने की इच्छा हुई, परन्तु इनके पिता जी अन्य हकीमों की तुलना में इसको तुच्छ समझते थे इस लिये दुकान खोलने को एक पैसा देने को उद्यत न हुए, वह नौकरी को उत्तम समझते थे, अतएव विवश होकर यह लाहौर चले आए। रेलवे दफतर में १५) मासिक पर नौकर होगए, परन्तु साथ ही मकान के नीचे सायं प्रातः चिकित्सार्थ बैठना आरम्भ किया। फिर एक सभा में २५) मासिक वेतन पर नौकरी होगई, यह स्थान घर के समीप था, रात दिन कार्य में प्रवृत्त रहते, अर्थात् रात्रि को औषधि बनाते, और दिन को रोगियों को देखते, और फिर दफतर का काम भी करते। एक उर्दू वैद्यक पत्र निकालने का विज्ञापन दिया, उर्दू देशोपकारक सन् १९०४ ईस्वी में पहिले पाक्षिक निकाला, पश्चात् सन् १९०५ में साप्ताहिक होगया।

इस समय तक २४७ से अधिक वैद्यक पुस्तकें लिख चु- हैं। मास मई सन् १९१२ से बहुत से श्रीमानों के निवेदन प इन्हों ने पाक्षिक हिन्दी देशोपकारक नामक वैद्यक पत्र प्रारम्भ किया है।

वैद्यक में इन की योग्यता को देख कर श्रीकविराज विज रत्नसेन महामहोपाध्याय कलकत्ता जैसे वैद्याचार्य ने इनको क विनोद की उपाधि दी।

सन् १९०६ में एक युनानी हकीम को नौकर रख कर युनानी चिकित्सा भी सीखी, और युनानी चिकित्सा के सुयोग्य आचार्य हकीम मुहम्मद अजमल खां हाज़ीकुलमुल्क ने इनको प्रशंसा पत्र दिया। इन्हों ने सन् १९०७ ईस्वी में एक डाक्टर को रख कर डाक्टरी के आवश्यक सिद्धान्तों, और अनाटोमी को पढ़ा।

लाहौर में अञ्जुमन अतिब्बा, और आयुर्वेद हितकारी सभा स्थापित करने का उद्योग इन्हीं से आरम्भ हुआ, जहां कोई वैद्यक सभा होती है, वहाँ अवश्य पहुंचते हैं। लेख और भाषण में सब जगह आयुर्वेदोन्नति का ध्यान रहता है। ब्राह्मण सभा लाहौर की स्थापना में इन का सब से अधिक पुरुषार्थ था।

सन् १९१० की निखिल भारतवर्षीय ब्राह्मण सभा जो श्रीमान् महाराजा साहिब बहादुर दरभङ्गा के सभापतित्व में हुई, वह इन्हीं के उद्योगों का फल था। आप ब्राह्मण प्रतिनिधि सभा पञ्जाब के मन्त्री हैं। इस की स्थापना में भी आपही का विशेष हाथ है। आप ब्राह्मण सभा के प्रधान हैं। और लायलपुर की पञ्जाब ब्राह्मण कान्फ्रेन्स के भी आप सभापति हुवे थे। ईश्वर से प्रार्थना है कि इन को चिरायु करें।

सारस्वतवंशभूषण श्रीयुत पं० रामस्वरूप जी शर्म्मा M. R. A. S.

—※—

आप के पिता पण्डित केदारनाथ जी अम्बाला A. S. स्कूल में अध्यापक थे। आप का शुभ जन्म २४ दिसम्बर १८९५ को हुआ।

अम्बाला आर्य्य स्कूल से पश्चात मैट्रिक्यूलेशन पास किया फिर प्राईवेट मुम्बई, मैट्रिक, तथा कैम्ब्रज का एक भाग पास किया। हिन्दु कालिज देहली सन् १९१३ में एफ० ए० करके १९१५ तक दो वर्ष डी० ए० वी० कालिज में बी०ए० में पढ़ते रहे, परन्तु परीक्षा न दे सके। १९१५ अक्टूबर में २० वर्ष की अवस्था में Asiatic Society of Bengal Calcutta and Royal Asiatic Society London के Member चुने गये। स्त्रीशिक्षा सम्बन्धी कार्यों में अति प्रेम रखने के कारण १९१५ में Indian Womens, University की Senate की Fellowship के लिये नाम उपस्थित किया गया। १९१६ जून में लन्दन की सुप्रसिद्ध विद्वद् समिति Philological Society के Member चुने गये—(सब से पहला भारतीय Member होने का मान आप ही को मिला) इसी वर्ष में बहुत सी Literary Activities के कारण Royal Society of Arts, London की Fellowship और Aciatic Society of Japan की Honorary Membership के लिये आप की सिफारिश हुई। और Royal Asiatic Society of Ceylon के सभ्य बनाये गये। इसी वर्ष में Biotherapical University कालिज से Doctor of Neo-Rio-therauptics की Honor उपाधि मिली, और कालेज के Delegate तथा Senate के Member बनाये गये। कुछ समय एंग्लो संस्कृत हाई स्कूल में आङ्गल भाषाध्यापक रहने के पश्चात् ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम हरिद्वार के कालिज विभाग में अंग्रेज़ी के प्रोफेसर रहे।

जून १६१६ में 'ब्राह्मण सभा' अम्बाला के Secretary निर्वाचित हुये थे, आप अंग्रेज़ी, संस्कृत तथा Latin भाषा भली भांति जानने के अतिरिक्त और भी कई देशी भाषाएं जानते हैं, संस्कृत और हिन्दी भाषा की उन्नति में प्रेम है और यह सदैव आप की द्वितीय भाषा है रही । के० सी० संस्कृत सोसाइटी अमृतसर के Vice-President भी रहे हैं ।

श्रीयुत डाक्टर पं० प्रभुदत्त जी शास्त्री M.A.P.H.D.

श्रीयुत पं० गणेशदत्तजी शास्त्री के आप पुत्र हैं, आप M. A. B. T. आदि कई परीक्षा उत्तीर्ण कर गवर्न्मेण्ट से छात्रवृत्ति पाकर यूरोप गये थे । कई वर्ष वहां रहे । आपने 'माया' एक पुस्तक लिखी थी जिस के कारण आप को P. H. D. की उपाधि मिली । आप बड़े विद्वान् तथा कई भाषाएं जानते हैं आप का निवास स्थान लाहौर है । आप ओरियण्टल कालिज लाहौर, और पटियाला महेन्द्रकालिज के प्रिंसिपल रहे हैं तथा अलवर के प्राइवेट सेक्रेटरी भी रह चुके हैं । हमें खेद है समय पर आप का विशेष वृत्तान्त न मिलने के कारण हम नहीं दे सकते ।

सारस्वत कुलदीपिका श्रीमती पण्डिता द्रौपदी देवी शास्त्रिणी ।

—:※:—

इनका जन्मस्थान ग्राम शांकर जिला जालन्धर तहसील नकोदर में है । पिता का नाम पण्डित मेलाराम शास्त्री और सारस्वत गोत्रधरम । उसी शांकर नगरमें सम्वत् १९५४ विक्रमीय मास श्रावण १० तिथि में पुत्री द्रौपदी का जन्म सायंकाल के समय में हुआ । इस पुत्री के पैदा होने से घर में बहुत खुशी हुई क्योंकि यह अपने बड़े भ्राता शान्तिस्वरूप की पहिली ही बहिन थी। इनके पिता के बड़े भ्राता स्वर्गवासी पण्डित सालिग्राम की पत्नी श्रीमती परमेश्वरी देवी का इस पुत्री से बहुत ही प्यार हो गया । इसकी माता के स्तनों में दूध नहीं था ईश्वरीय नियम के कारण मोहवश परमेश्वरी देवी के दूध उतर आया । डेढ़ वर्ष की अवस्था के बाद नौ वर्ष तक इस देवी का पालन इसी ने किया । इस समय देवी नौ वर्ष की होगई तब पिता शाँकर में आकर एक गवर्नमेंट पुत्री पाठशाला खुलवाई और उसी में इस कन्या का प्रवेश करके गुरुकुल कांगड़ी को वापिस चले गये, परन्तु पाठशाला की शिथिलता देख कर कुछ महीने के बाद अपने बड़े भाई के पुत्र नन्दलाल को भेज कर वहाँ पर ही बुला लिया वहाँ एक छोटी सी पाठशाला गुरुकुल के अध्यापक अथवा अधिष्ठाताओं की लड़कियों के पढ़ाने के लिये इन्होंने पहिले ही बना रक्खी थी। इस पाठशाला के अध्यापक लोग ही खाली घण्टों में पढ़ाया करते थे । लग भग एक वर्ष इस पाठशाला में पुत्री द्रौपदी आर्य भाषा संस्कृत तथा गणित पढ़ती रही । इस की तीव्र बुद्धि और परिश्रम शीलता को देख कर इसे उच्च शिक्षा देने का विचार निश्चित किया जिस के लिये गुरुकुल छोड़ कर अध्यापक का काम करना स्वीकार किया इस समय पुत्री द्रौपदी की आयु लग भग दश वर्ष की थी ।

गुरुकुल से आकर इसे कन्या महाविद्यालय की चतुर्थ श्रेणी में प्रविष्ट कराया । और थोड़े ही महीनों में इस ने चतुर्थ-

१ कान्यकुब्ज, २ सर्यूपारी, ३ जिझोतिया, ४ सनाढ्य, ५ बेङ्गाली कान्यकुब्ज ।

१ कान्यकुब्ज ।

—:※:※—

यह शाहजांपुर, कामपुर, पीलीभीत, फतेपुर, हमीरपुर, इटावा, आदि स्थानों में विशेषकर हैं ।

गोत्र ।

—:०:—

गौतम, शांडिल्य, भारद्वाज, उपमन्यु, काश्यप, कास्तिप गर्ग हैं । नीचे गोत्र आस्पद और प्रवरों की पूरी सूची दी जाती है—

उत्तम श्रेणी के गोत्र ।

गोत्र ।	प्रवर ।	आस्पद (शासन) ।
१ कात्यायन,	कात्यायन, विश्वमित्र, किलक,	१ मिश्र, २ दुबे, ३ अग्निहोत्री,
२ कश्यप,	कश्यप, असित, देवल,	१ तिवारी, २ दीक्षित, ३ अवस्थी, ४ मिश्र, ५ दुबे, ६ अग्निहोत्री,
३ शाँडिल्य,	शांडिल्य, असित, देवल,	१ मिश्र, २ दीक्षित, ३ शुक्ल, ४ अवस्थी, ५ तिवारी, ६ उपाध्याय,
४ साँकृत,	सांकृत, किल, सांख्यायन,	१ शुक्ल, २ मिश्र, ३ अवस्थी, ४ दूबे,
५ उपमन्यु,	उपमन्यु, वसिष्ट, याज्ञवल्क्य,	१ वाजपेयी. २ अवस्थी, ३ मिश्र, ४ दीक्षित, ५ त्रिवेदी, ६ दूबे, ७ अग्निहोत्री, ८ पाठक, ९ उपाध्याय,
६ भारद्वाज,	भारद्वाज, अंगीरा, बृहस्पति,	१ शुक्ल, २ पांडे, ३ तिवारी,

मध्य श्रेणी के गोत्र।

१	गर्ग,	गर्ग, अंगिरस, वार्हस्पत्य, भारद्वाज, शौनक,	१ पांडे, २ मिश्र, ३ तिवारी, ४ दुबे ५ पाठक, ६ अग्निहोत्री, ७ चौबे, ८ उपाध्याय,
२	गौतम,	गौतम, अंगिरस वार्हस्पत्य,	
३	भारद्वाज,	भारद्वाज, अंगिरस वार्हस्पत्य,	१ पाँडे, २ मिश्र, ३ दुबे ४ अग्निहोत्री, ५ अवस्थी,
४	धनञ्जय,	धनञ्जय, माधुच्छन्दस्, विश्वामित्र,	१ शुक्ल, २ दीक्षित ३ पाँडे, ४ तिवारी, ५ मिश्र, ६ अवस्थी, ७ दुबे, ८ अग्निहोत्री, ९ उपाध्याय १० अधूर्य
			१ अवस्थी २ दुबे,
५	काश्यप,	काश्यप, नैध्रुव, कौशिक, लोहित, भावत्सार,	१ तिवारी, २ अवस्थी, ३ मिश्र ४ दीक्षित, ५ शुक्ल ६ दुबे, ७ अग्निहोत्री,
६	वत्स,	वत्स, च्यवन, और्व अत्यवान, जमदग्नि.	१ तिवारी २ मिश्र, ३ पांडे, ४ दीक्षित, ५ दुबे, ६ अग्निहोत्री, ७ पाठक, ८ उपाध्याय, ९ रावत.
७	वसिष्ठ,	एकावसिष्ठ,	१ दीक्षित, २ अवस्थी, ३ तिवारी, ४ दुबे, ५ पाठक, ६ चौबे,
८	कौसिक,	कौशिक, देवराज, अघमर्षण,	१ तिवारी, २ दीक्षित ३ मिश्र ४ दुबे, ५ पाठक, ६ अग्निहोत्री, ७ त्रिगुणायत, ८ रावत,
९	कविस्त,	कविस्त, देवराज, विश्वामित्र,	१ पांडे २ अवस्थी, ३ मिश्र ४ दुबे, ५ अग्निहोत्री, ६ चौबे ७ त्रिगुणायत,
१०	पाराशर,	पाराशर, वसिष्ठ, सांकृत,	१ शुक्ल, २ तिवारी; ३ मिश्र, ४ अवस्थी, ५ दीक्षित, ६ दुबे, ७ पाठक,

तृतीय श्रेणी के कुछ गोत्र ।

संख्या ।	गोत्र ।	प्रवर ।	आस्पद ।
१	अत्रि	अत्रि, अर्चिमान, श्यावाश्व,	मिश्र, पाठक,
२	असित	असित, वाशल, कौशल्य,	तिवारी, चौवे,
३	अगास्य	आग्राश्य, अङ्गिरस, गौतम,	अवस्थी, पाठक,
४	अत्यवान	अत्यवान, यमदग्नि, च्यवन,	त्रिगुणायत,
५	अम्बसार	अम्बसार, विश्वामित्र, भार्गव,	दुवे, चौवे,
६	अगस्त	अगस्त, पुलस्त, वसिष्ठ ऐंद्र, और्वे,	पांडे, शुक्ल,
७	आभद्रसुक	आभद्रसुक, लोमम, सावर्ण्य,	दुवे,
८	आङ्गिरस	अङ्गिरस, अत्रि, अगस्त, गौर्वे, ऐंद्र,	शुक्ल, मिश्र,
९	और्वे	और्वे, मौनम, बार्हस्पत्य,	दुवे,
१०	इन्द्रोंदर	इन्द्रोंदर, कौण्डिन्य भार्गव,	अग्निहोत्री,
११	इन्दुप्रसद	इन्दुप्रसद अत्यवान, चैहव्य,	चौवे,
१२	कपिल	कपिल, देवराज, भ्रुवनैन,	मिश्र,

संख्या	गोत्र	प्रवर	आस्पद
१३	कृष्णात्रि	कृष्णात्रि, अर्चिमान, श्यावाश्व,	पांडे, तिवारी,
१४	गौरव	गौरव, आगद्रसुक, कौलक,	दुबे, पाठक,
१५	कौलव	कौलव, मधुछन्दस, विश्वामित्र,	पांडे, तिवारी,
१६	कौशल्य	कौशल्य, मधुछन्दस, अघमर्षण,	पाँडे,
१७	गाँगेय	गांगेय, संख्यलिन, गर्ग,	शुक्ल,
१८	चान्द्रायण	चान्द्रायण, वत्स, वामदेव,	मिश्र, दुबे,
१९	जातूकर्ण	जातूकर्ण अत्रि, वसिष्ठ,	शुक्ल, चौबे,
२०	च्यवन	च्यवन, अत्रि, वत्स, कपिल, अगस्त,	त्रिगुणायत,
२१	दैवल	दैवल, वाशल, शौनकेत,	तिवारी,
२२	ध्रुवनैन	ध्रुवनैन, कोल , वामदेव,	अवस्थी,
२३	नितुंद	नितुंद, कौलक, शाक्ति, दालभ्य, पुरोहत,	दुबे, चौबे,
२४	पुलस्त्य	पुलस्त्य, मौनस, मरीच,	चौबे,
२५	पुरोहित	पुरोहित, लोमस, याग्यवलक्य,	चौबे,
२६	वाशल	वाशल, अर्चिमान, अत्रि,	शुक्ल, दुबे,

संख्या	गोत्र	प्रवर	आस्पद्
२७	वाल्मीक	वाल्मीक, यस्क, गाधवल्का,	मिश्र, दुबे,
२८	वामदेव	वामदेव, गौतम, मध्यायन,	पांडे,
२९	विश्वामित्र	विश्वामित्र, अङ्गिरस, शौनकेत,	चौबे, त्रिगुणायन,
३०	विष्णुवर्धन	विष्णुवर्धन कुत्स, त्रसदस्यु, पुरोहित, अङ्गिरस,	शुक्ल,
३१	वैहल	वैहल, असित, वाशल,	पाठक,
३२	भद्रशील	भद्रशील वाशल, भारद्वाज,	दुबे,
३३	भागीर	भागीर, भ्रुवर्त्तेन, इन्द्रोदर,	तिवारी,
३४	भार्गव	भार्गव, च्यवन, अत्यवान और्व, यमदग्नि,	शुक्ल, पाँडे, दुबे, पाठक,
३५	मुद्गल	मुद्गल, गौतम, अत्रि, बार्हस्पत्य, भारद्वाज,	दुबे,
३६	मैत्रेयतृण	मैत्रेयतृण, मित्रावरुण, पराशर,	मिश्र,
३७	मौनस	मौनस, भार्गव, वैतहव्य,	पाडे, शुक्ल दुबे,
३८	मौफल्य	मौफल्य, अङ्गिरस, बार्हस्पत्य,	चौबे,
३९	यमदग्नि	यमदग्नि भार्गव, च्यवन, अत्यवान, और्व,	चौबे,
४०	याज्ञवल्क्य	याज्ञवल्क्य, लोमस, अगस्त्य,	शुक्ल,
४१	लोमस	लोमस, मरीच, पुलस्त्य,	पाठक,

संख्या	गोत्र	प्रवर	आस्पद
४२	शारद्वत	शारद्वत, अङ्गिरस, गौतम,	मिश्र,
४३	शक्तिसार	शक्तिसार, अघमर्षण, नितुंडु,	अग्निहोत्री,
४४	शौनकेत	शौनकेत, सावर्ण्य, भार्गव,	मिश्र, दुबे,
४५	सिंहल	सिंहल, मधुछन्दस, लौहित,	मिश्र,
४६	सावर्ण्य	सावर्ण्य, पौलस्त्य, पुरोहित,	तिवारी, शुक्ल पाठक,
४७	कौडिंन्य	कौडिंन्य, वशिष्ठ, मित्रावरुण,	मिश्र, तिवारी,
४८	लौहित	लौहित, अश्वसार, कौडिंन्य,	इन गोत्रों के आस्पद प्राप्त नहीं हुये।
४९	यास्क	यास्क, भार्गव, शारद्वत,	
५०	देवराज	देवराज, विष्णुवर्धन, रैस्त,	
५१	दाल्भ्य	दालभ्य, अङ्गिरस, वार्हस्पत्य,	
५२	वाभ्रव्य	वाभ्रव्य, विश्वामित्र, अत्यवान,	
५३	वैतहव्य	वैतहव्य, भार्गव, पार्थस्य,	
५४	मरीचि	मरीचि, कात्यायन, वशिष्ठ,	
५५	मिहरस	मिहरस, काश्यप, कौशिक,	
५६	मित्रयुव	मित्रयुव, भार्गव, दैवल.	

कान्यकुब्ज वंशभूषण श्रीस्वामी विशुद्धानन्द जी सरस्वती।

—*—

मुम्बई प्रान्त में कल्याण नामक नगरमें पण्डित लक्ष्मलाल जी और श्रीमती यमुनादेवी जी से आप का जन्म सन् १८०५ में हुवा। आप के बाल्यकाल में ही एक ज्योतिषी ने कहा था कि यह संन्यासी होगा। आप तृतीय पुत्र थे। आप का जन्म नाम वन्शीधर था। ५ वर्ष से आप की प्रारम्भिक शिक्षा भट्ट जी से हुई। फिर आप काशी में आकर गौड़ स्वामी के शिष्य हुवे यहीं आप का नाम विशुद्धानन्द हुवा। गौड़ स्वामी के सं० १८५७ में स्वर्गवास के अनन्तर उस गद्दी को आपने सुशोभित किया। आप का स्वा० दयानन्द जी के साथ शास्त्रार्थ हुआ था। आप अलौकिक प्रतिभ पुरुष थे। आपने ६३ वर्ष की आयु भोग कर सन् १८९४ में शरीर त्याग दिया।

कान्यकुब्ज वंशभूषण श्रीयुत पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी।

—:*:—

रायबरेली प्रान्त के दौलतपुर ग्राम में श्रीमान् पण्डित रामसहाय जी शर्मा बड़े विद्वान् और भगवद्भक्त थे आप को महावीर का इष्ट था। आप के पुत्ररत्न सम्वत् १९२१ वैशाख शुक्ल ४ को उत्पन्न हुवे। आप का नामकरण भी अपने इष्टदेव के नाम से ही महावीर प्रसाद किया। जातकर्म से प्रथम पं० सूर्यप्रसाद जी ने सरस्वती का बीजमन्त्र इन की जिह्वा पर लिखा। गांव के स्कूल में ही आप की प्रारम्भिक शिक्षा हुई। घर पर आप संस्कृत के ग्रन्थ पढ़ते गये। फिर आप रायबरेली के हाईस्कूल में पढ़ने लगे पर दूर होने के कारण पुरवा गांव के स्कूल में दाखिल हुए।

थोड़े दिन में उस के टूट जाने पर आप फतेहपुर में पढ़ने लगे फिर उन्नाव में गये। उन्नाव से मुम्बई में पिता के पास जाकर मराठी और गुजराती पढ़ते रहे। वहां से आकर रैलवे में नौकरी की वहां से नागपुर और नागपुर से अजमेर लोकोवर्कशाप में नौकरी की यहां से १ वर्ष के पश्चात् मुम्बई चले गये। यहाँ तार का कार्य सीख कर सिगनेलर हुवे। हर्दा, खण्डवा, होशंगाबाद, इटारसी में ५ वर्ष तक कार्य करते रहे। फिर झांसी में हेड टेलीग्राफ इन्सपेक्टर हुवे। फिर यहां से ट्रैफिकमेनेजर के यहाँ बदल गये और वहां से मुम्बई में फिर आपने झांसी बदली कराली यहां आकर बंगला भी पढ़ते रहे। फिर आप नौकरी छोड़ हिन्दी की सेवा में लगे। आप सरस्वती के सम्पादक हैं। आपने कई उत्तमोत्तम ग्रन्थ हिन्दी में लिखे हैं।

बङ्गीय कान्यकुब्ज ब्राह्मण।

इन के बेङ्गाल में २ भेद हैं १ वारेन्द्र २ राढीय।

१ वारेन्द्र ब्राह्मण।

८ कुलीन, १ मैत्र, २ भीम वा काली, ३ रुद्रवागीशी, ४ सङ्कमिनी वा शण्ड्याल, ५ लाहिड़ी, ६ भदुरी, ७ साधुवागीशी, ८ भद्र।

८ श्रोत्रिय—इन के नाम पूर्व गोत्र प्रकरण में लिख आये हैं।

१ राढीय ब्राह्मण—

६ कुलीन—मुखती, फुलमुगी, मुकुर्जी १ गङ्गाली २ काञ्जिलना ३ घोषाल ४ वन्द्यगति कुलगरी, बनर्जी ५ चाटति, फुलगरी चटर्जी (चट्टोपाध्याय)।

५० श्रोत्रिय हैं—इन के नाम विस्तार भय से नहीं लिखे।

३ पाश्चात्य वैदिक ४ दाक्षिणात्य वैदिक यह २ भेद और हैं।

इन के अतिरिक्त बङ्ग में अन्य भी ब्राह्मण हैं; वे बङ्गाली ब्राह्मण नाम से ही सम्बोधित होते हैं।

आचार्य्य सत्यव्रत सामश्रमीजी ।

इंडियन प्रेस, प्रयाग ।

श्रीयुत आचार्य सत्यव्रत सामश्रमी ।

—:*:*—

काश्यप ऋषि के वंश में चट्टोपाध्याय आवसथोपनामक श्रीरामकान्त विद्यालङ्कार बड़े विद्वान् पुरुष थे, आप कलकत्ते में सुप्रीमकोर्ट के जज थे, आप जमींदार और सम्पत्तिशाली थे। आपके पुत्र श्री० प० रामदास वाचस्पति हुवे इन्हों ने भी गवर्नमेण्ट को अनेक कार्यों से अच्छे २ पदों पर प्रतिष्ठित रहकर प्रसन्न किया था। प० रामदास जी के सम्वत् १८८८ वि० ज्येष्ठ शुक्ला ४ चतुर्थी को पटने में सरस्वती ने साक्षात् पुत्र रूप में अवतार लिया। आपने अपने पुत्र का नाम कालिदास रक्खा। जब यह ४-५ वर्ष के हुवे तब भ्रमणार्थ अपने उद्यान मे गये वहां एक पुष्प को तोड़ लिया। घर आने पर उस पुष्प को देख कर नौकर पर इनके पिता बहुत क्रुद्ध हुवे परन्तु इन्हों ने सत्य न छिपाया और अपना अपराध कह कर पिता जी को शान्त किया। तब से इनके पिता जी ने कालिदास से इनका नाम सत्यव्रत रक्खा। कुछ काल से वङ्ग में वेद का पठन पाठन प्रायः उठ सा गया था। बाबू देवेन्द्रनाथ ठाकुर और वर्द्धमान के महाराजा ने भी वेद पढ़ाने के लिये यत्न किये; पर काशी निवासियों ने न पढ़ाया। परन्तु पं० रामदास जी ने इनको वेद पढ़ाना ही उचित समझा। विद्यारम्भ ५ वें वर्ष में हुआ। आप की प्रारम्भिक शिक्षा मथुरानाथ शिरोमणि द्वारा हुई। पटने से बदल कर पं० रामदास जी काशी आये, सत्यव्रत जी भी साथ ही आये। उस समय ७ वर्ष की अवस्था थी। ८ वर्ष की आयु में साहित्य, गणित और भूगोल की छात्रवृत्ति परीक्षा समाप्त की। अमरकोष चाणक्यनीति भी हो गये। इसी वर्ष यज्ञोपवीत संस्कार हुवा। अहल्याबाई घाट पर गौड़ स्वामी के पास सिद्धान्त कौमुदी पढ़ते थे ७॥ वर्ष की

उद्योगशील ऐसे थे कि, एक बार एक नाटक में भी अभिनय किया था । ३ घण्टे से अधिक कभी न सोते थे । हमें भी आप की चरण सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । आपकी कृपा दृष्टि हम पर विशेष थी जो कुछ भी मैंने वेद में अक्षर जाने हैं यह आपके आशीर्वाद का फल है । सन् १९११ के मई मास में आपके स्वर्गवास होजाने कारण जो मुझे हार्दिक दुःख पहुंचा वह अवर्णनीय है । आपके पुत्र पं० शिवव्रत शर्मा और पं० हितव्रत जी शर्मा विद्वान् और योग्य व्यक्ति हैं ।

श्रीमती सरला देवी बी० ए० ।

आप बङ्गाली ब्राह्मण वन्श की दीपिका हैं । आपकी बढ़ी चढ़ी योग्यता के विषय में हम क्या लिखें । श्रीमती ने पञ्जाब के पं० रामभजदत्त जी से विवाह किया है । आप से देश को बड़ा उपकार पहुंचा है । आपका विस्तृत जीवन समय पर न आसकने के कारण नहीं छप सका ।

भट्टाचार्य वंश प्रदीपिका श्रीमती हेमन्तकुमारी देवी भट्टाचार्य्य ।

पं० उमेशचन्द्र चौधरी चातकारा नामक बङ्गाल के स्थान निवासी लखनऊ में रेलवे के आडिट विभाग में कार्य करते हैं । आप के सन् १८८६ के मई मास में कन्या रत्न उत्पन्न हुई । आप का नामकरण हेमन्तकुमारी किया । प्रारम्भिक शिक्षा कन्यापाठशाला में हुई । आप सम्पूर्ण शिल्पकला में कुशल तथा विदुषी हैं । आप का विवाह १८९९ में जानग्राम (बङ्गाल) के पं० मार्कण्डेय प्रसाद भट्टाचार्य से हुआ । आप नित्य ही पढ़ने लिखने में अपना समय बिताती हैं । आपने कई ग्रन्थ हिन्दी में लिखे हैं ।

श्रीमती हेमन्तकुमारी देवी (भट्टाचार्य)।

इंडियन प्रेस, प्रयाग।

डा० हरिनाथ मुकर्जी।

कलिकाता अभिजन निवासी श्रीयुत डा० हरिनाथ मुकर्जी (अम्बाला) निवासी बड़े ही अनुभवी विचारशील और विद्वान् व्यक्ति हैं। आयुर्वेद के इतिहास में आप एक नई बात उत्पन्न करने वाले हैं। आप के अनुभव से सैकड़ों पुरुष स्वास्थ्य लाभ करते हैं। आप का चित्र व चरित्र समय पर न मिलने के कारण हम न दे सके।

महामहोपाध्याय पं० महेशचन्द्र न्यायरत्न C. I. E.

हवड़ा जिले में 'नारींट' गांव में भट्टाचार्य वंश के कुलीन ब्राह्मण हरिनारायण तर्कसिद्धान्त रहते थे। यह संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे। इन के ता० २२ फर्वरी सन् १८३६ में पुत्ररत्न उत्पन्न हुवा। आप का नामकरण महेशचन्द्र किया गया। यह बड़े खिलारी थे। ८ वर्ष तक कुछ न पढ़ा। ६ वें वर्ष से अध्ययन प्रारम्भ हुवा। ११वें तक घर ही में पढ़ते रहे। मेदिनीपुर जिले के रग्निकगञ्ज गांव के ठाकुरदास चूड़ामणि के पास व्याकरण पढ़ने लगे। फिर १८५२ ई० में आपने संस्कृत कालेज कलकत्ता में पढने लगे। परमहंस ज्योतिस्वरूप से वेदान्त और पं० कालीनाथ से ज्योतिष कलकत्ते में पढ़ी। फिर १८६१ में काशी चले आये और भिन्न २ पण्डितों के पास पढ़ कर सन् १८६३ में काशी से कलकत्ते चले आये। यहाँ पर इन्हों ने महाराज कमलकृष्ण की सहायता से एक पाठशाला स्थापित की। इसी समय संस्कृत कालेज के प्रिन्सिपल मि० ई० बी० कावेल थे इन को वे दर्शन-शास्त्र पढ़ाते रहे। फिर वहीं प्रोफैसर हो गये। सन् १८७६ में इन्हों ने बंगाल के स्कूलों में कावेल साहब के साथ परिभ्रमण किया। सन् १८७७ में यह इसी कालिज के प्रिन्सिपल हुवे। १८८७ में गवर्मेण्ट ने इन्हें C. I. E. की उपाधि से विभूषित किया।

सन् १८८७ ई० लार्ड डफरिन के समय में इन के प्रस्ताव और उद्योग से पण्डितों को महामहोपाध्याय और मौलवियों को शमस् उल् उलमा की उपाधि सरकार देने लगी। प्रथम २ इन को ही सरकार ने महामहोपाध्याय की पदवी से विभूषित किया।

अपने गाँव में इन्हों ने एक हाईस्कूल खुलवाया। तुलसी-धारण मीमांसा, लुप्त संवत्सर-मीमाँसा, कुसुमाञ्जली टीका, काव्यप्रकाश टीका, मीमांसादर्शन और तैत्तिरीय संहिता की टीकायें लिखी थीं। पिछले २ पुस्तक एसोसियाटिक सोसाइटी ने प्रकाशित किये। आप ने और पुस्तकें बनाई हैं। फर्वरी १८९५ से पेंशिन मिलना प्रारम्भ हुवा था। खेद है ऐसे विद्वान् का ता० ११ अप्रैल १८९५ को स्वर्गवास हो गया।

—:o:—

श्रीयुत पण्डित हृषीकेश जी शास्त्री भट्टाचार्य्य।

—:o:—

कलकत्ते के पार्श्ववर्त्ती भाटपाड़ा नामक ग्राम में शिरोमणि वन्श में पण्डित आनन्दचन्द्र जी प्रतिष्ठित विद्वान् थे। इनके श्रीमधुसूदन शर्मा स्मृतिरत्न पुत्र हुवे। मधुसूदन जी के शकाब्द १७७२ ज्येष्ठ १० को श्री० पं० हृषीकेश जी का जन्म हुवा। आप के चचा का नाम यादवचन्द्र न्यायरत्न था। ५ वें वर्ष से आप की शिक्षा प्रारम्भ हुई। आप थोड़े ही वर्षों में अच्छी योग्यता दिखाने लगे। संस्कृत के साथ ही आपने इङ्गलिश का भी पढ़ना प्रारम्भ किया। सन् १८७२ में आप अपने इङ्गलिश अध्यापक के साथ पञ्जाब चले आये। लाहौर में बाबू नवीनचन्द्र राय से मिले, आपने विशारद परीक्षा उनके आग्रह से १ दिन में ही दी। पश्चात् बाबू जी के आदेशानुसार आपने ५५) मासिक पर सम्पादकी करली। तब से 'विद्योदय' निकालने लगे। पञ्जाब यूनिवर्सिटी से आप को ७२) छात्रवृत्ति मिलने लगी। १८७३ में प्रथम बार आप ही शास्त्री परीक्षोत्तीर्ण हुवे। इस उपलक्ष्य में १००) पुरस्कार और ३३) मासिक वृत्ति एफ० ए० के लिये मिलने लगी।

श्रीपण्डित हृषीकेश भट्टाचार्य्य शास्त्री ।

इंडियन प्रेस, प्रयाग ।

पर परीक्षोत्तीर्ण न हुवे। अनन्तर ओरिएण्टल कालिज में नौकर हो गये, १० वर्ष तक वहां रहे। फिर आपने पिता जी की आज्ञानुसार नौकरी त्याग कर घर चले आये। आते समय प्रिंसिपलने २००) पुरस्कार दिया। प्रिंसिपल साहेब विलायत चले गये, वहाँ से भी २५) मासिक 'विद्योदय' के लिये भेजते रहे। शास्त्री जी ने हिन्दी के कई ग्रन्थ लिखे हैं। 'विद्योदय' बराबर चलाते रहे। अब आपके पुत्र श्रीभवभूति शर्मा चला रहे हैं। खेद है, पं० जी का ७ दिसम्बर सन् १९१३ को देहान्त हो गया।

श्रीयुत तारानाथ तर्कवाचस्पति।

पूर्व बङ्गाल में बारिशाल जिले के वैचण्डी ग्राम में तर्कसिद्धान्त रामराम नामक महा पण्डित रहते थे। आप के पूर्वज यशोदर जिले के सारल ग्राम में रहते थे। आप के कुटुम्ब में विद्या वन्शपरम्परागत चली आती थी। तर्कसिद्धान्त जी ने सन् १८०० में एक मन्दिर काशी में भी बनाया था। आप १२०० विद्यार्थियों को नित्य पढ़ाया करते थे। आप के दुर्गादास और कालिदास दो पुत्र हुवे। कालिदास बड़े विद्वान् थे। हलधर पाठक की कन्या महेश्वरी से आप का विवाह हुवा। सन् १८१२ में आप के पुत्ररत्न तारानाथ उत्पन्न हुवे। ५ वें वर्ष से आप की शिक्षा प्रारम्भ हुई। सन् १८३० में पं० रामकमल सेन से अलङ्कार श्रेणी में, सन् १८३१ नेमिचन्द्र शिरोमणि से न्यायश्रेणी में, सन् १८३६ में लाव परीक्षा में पढ़ने लगे। इसी बीच में आपने अपने गुरु की आज्ञा से महाभारत का संशोधन एसियाटिक सोसाइटी के लिये किया। अनन्तर जुलाहों से कपड़े बनवा २ कर कलकत्ता में बेचने लगे। १००० बीघे पृथ्वी खरीद कर कृषिकर्म कराया, और दुग्ध मक्खन की भी दूकान कलिकाता में खोली। इन की आय से आप विद्यार्थियों को पढ़ाते रहे। आपने एक धान कूटने की मैशीन भी ग्राम में लगाई थी। कलकत्ता में एक बार एक

लक्ष रुपये के दुशाले आपने खरीद लिये, पश्चात् वह कीड़ों ने खा लिये। इस से आप पर एक लक्ष का ऋण भी हो गया था। आप विदाई आदि कहीं से न लेते थे। इसी बीच में आपने वेथुन साहिब के परामर्श से संस्कृत पुस्तकों का प्रकाशन प्रारम्भ किया, इस से ऋणमुक्त होगये। पुस्तकों की आमदनी से ही पाठशाला का कार्य चलता था। सन् १८४५ में आपने विद्यासागर ईश्वरचन्द्र जी के परामर्श से संस्कृत पाठशाला में नौकरी की। आप समाज संशोधक भी थे। वेथुन साहिब ने एक १८५१ में पुत्री-पाठशाला खोली, उस में आपने अपनी पुत्री ज्ञानदादेवी को अध्यापनार्थ लगा दिया। सन् १८५४ में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने विधवा-विवाह को कानून द्वारा पास कराना चाहा, तब तर्कवाचस्पति ने बड़ा साथ दिया। पर विद्यासागर के द्वितीय बहुविवाह के प्रस्ताव कि जब वह कानून द्वारा बहुविवाह को उठा देना चाहते थे, आपने विरोध किया था आपने उच्छिन्न प्रायः अनेक संस्कृत ग्रन्थ प्रकाशित किये। सिद्धान्तकौमुदी की सरला वृत्ति से आप की ख्याति खूब हुई, सरकार ने भी सहायता दी सन् १८७३ से वाचस्पति कोष निकालना प्रारम्भ कर १८८४ समाप्त किया। यह बृहदभिधान ३२ खण्ड में समाप्त हुआ। सरकार ने और देशी रियासतों ने इस के प्रकाशन में अच्छी सहायता दी। ८० सहस्र रुपये इस पर लागत आये।

आपने जयपुर में शास्त्रार्थ किया। पाक कार्य में भी आप की बड़ी शक्ति थी १ लक्ष ब्राह्मणों के भोजन का प्रबन्ध आपने एकाकी किया। आपकी वक्तृता शक्ति भी बड़ी अद्भुत थी। एक बार एक विद्वान् को आपने १००० रु० देकर ऋणमुक्त कराया। एक पण्डित के ५०८० रु० आपके पास रक्खे थे उनके पश्चात् उन के पुत्र को आपने युवा होने पर सौंप दिये थे। आप ज्योतिषी भी अपूर्व थे। आपके २ विवाह हुवे २ री स्त्री से आपके पुत्र जीवानन्द विद्यासागर सन् १६४४ में हुवे। इन्होंने B. A. परीक्षा उत्तीर्ण करी यह भी पिता अनुरूप ही हुवे इन्हों ने भी संस्कृत-साहित्य के अनेक ग्रन्थ प्रकाशित किये अब तक पिता पुत्रों के प्रकाशित ग्रन्थों की संख्या २५२ है। श्रीमान् जीवानन्द विद्यासागर के सन् १८७७ में श्रीमान् नित्यबोध और सन् १८६६ में

प्रोफेसर श्रीतारानाथ, तर्क-वाचस्पति.

सद्धर्मप्रचारक प्रेस देहली.

श्रीयुत आशुबोध बड़े पण्डित उत्पन्न हुवे। आप भी अपने वन्शा-क्रमागत बड़े विद्वान् एवं ज्ञानशील हैं हमें खेद है कि आपके चरित्र व चित्र हमको न मिल सके। सन् १८८५ में तर्कवाचस्पति काशी आये और वहीं सन् १८९५ आषाढ़ ७ में आपने इस असार संसार को त्याग दिया

श्रीयुत पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, सी० आई० ई०

मेदनीपुर जिले में वीरसिंह नामक ग्राम में पं० ठाकुरदास बन्द्योपाध्याय के इन नर-रत्न का जन्म २६ सितम्बर सन् १८२० दो पहर के समय हुवा! आप की माता का नाम- भगवती देवी था। इस से प्रथम ही आप के पितामह रामजय तर्कभूषण तीर्थ यात्रा करने को चलेगये थे। तब विद्यासागर की दादी अपने दो पुत्र और चार कन्याओं को सूत कातने की आमदनी से पोषण करने लगी। इस दुःख से ठाकुरदास नौकरी की तलाश में १४ वर्ष की अवस्था में कलकत्ता आये। अनेक कष्ट सहते हुवे इन्होंने अपनी माता के पास ५) रुपये भेजने प्रारम्भ किये थे। विद्यासागर की प्रारम्भिक शिक्षा ५ वें वर्ष से ग्राम में ही हुई। सन् १८२९ में इन के पिता कलकत्ते में ले आये, और संस्कृत कालेज में प्रवेश हुवे। व्याकरण श्रेणी में ६ मास पढ़ कर उत्तीर्ण हो ५) छात्रवृत्ति पाने लगे। अंग्रेजी विभाग में भी पढ़ने लगे। रात को केवल दो घण्टे सोते थे। १५ वें वर्ष में अलङ्कार श्रेणी में उत्तीर्ण हो कर ८) छात्रवृत्ति पाने लगे। इसी बीच में भोजन बनाना आदि कार्य भी यही करते थे।

सन् १८३७ में स्मृति श्रेणी में पास हुवे तब इन को त्रिपुरा जिले में जज होने की आज्ञा मिली पर पिता के आग्रह से न गये। फिर दर्शन शास्त्र पढ़ कर, सन् १८४१, १० दिसम्बर को कालेज जाना बन्द किया। आप ५०) मासिक पर फोर्टविलियम कालिज में अध्यापक हुवे। वासुदेवचरित, वर्णपरिचय, कथामाला, बो-

धोदय, चरितावली, आख्यानमञ्जरी, शकुन्तला, ऋजुपाठ आदि पुस्तकें आपने लिखीं। 'संस्कृतप्रेस' नाम का १ प्रेस भी खोला। सन् १८४६ में संस्कृत कालेज के सहकारी मन्त्री हुवे। सन् १८५१ में संस्कृत कालेज के प्रिन्सिपल १५०) रु० पर नियत हुवे। सन् १८५३ में इन्हों ने अपने ग्राम में १ पाठशाला खोली। इसी बीच में असिस्टेन्ट इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स भी ५००) रुपये के हुवे। सन् १८५४ में आपने विधवा विवाह का कानून द्वारा जारी कराया था। इन्हों ने अपने पुत्र का विवाह भी विधवा से कर दिया। सन् १८५५ में कलकत्ता यूनिवर्सिटी के फैलो चुने गये। सन् १८५६में आप स्कूलोंके डायरेक्टर बनेथे। सन् १८८०में गवर्नमेंट ने इन्हें सी. आई. ई. के पद से सम्मानित किया। आपके दीन पालन, सादा आचरण आदि अनेक गुण हैं जो यहाँ स्थानाभाव से नहीं दिये जाते। खेद है इस भारतरत्न का सन् १८७६ ई० श्रावण १२ को परलोकवास हुवा।

महामहोपाध्याय डाक्टर सतीशचन्द्र विद्याभूषण एम. ए., पी० एच. डी.।

आप बड़े भारी विद्वान् हैं। आपकी योग्यता सर्वत्र प्रसिद्ध है। आप गवर्नमेण्ट कालिज कलकत्ते में सम्प्रति प्रिंसि-पल हैं। आपने न्याय शास्त्र का इतिहास लिख कर संस्कृतसाहित्य का बड़ा उपकार किया।

पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, C. I. E.

श्रीमती सत्यबाला देवी जी।

—:*:—

बङ्गाल में कलकत्ते से अनुमान पांच मील पर बैलूड़ नाम का एक छोटा सा ग्राम है। उसी ग्राम में सन् १८८६ ईसवी में एक कुलीन ब्राह्मण वन्श में श्रीमती जी का जन्म हुआ। आपके वन्शज कश्यप गोत्री और राढ़ी श्रेणी के ब्राह्मण कहलाते हैं। आप के पिता शरट्टचन्द्र बड़ो सरल और उदार प्रकृति के पुरुष थे। आप की माता बड़ी सच्चरित्रा और सीधे सीधे स्वभाव की स्त्री हैं।

यह बड़े ईश्वर भक्त थे, और कभी २ अपने घर में भक्तिरस के भजन आदि गाने का भी इन्हें चाव था। जब यह भजन गाया करते थे तब बालिका सत्यबाला भी बड़े आनन्द और प्रेम से उन्हें सुनती रहती थी। बचपन में ही अपने पिता के घर में ईश्वरभक्ति के भजन सुनते सुनते बालिका सत्यबाला के मन में भी संगीत विद्या सीखने की इच्छा उत्पन्न होने लगी, किन्तु उस समय वह पूर्णरूप से पूरी न हो सकी क्योंकि इनके पिता ने इन को बैलूड के एक छोटे से स्कूल में पढ़ने के लिये भेज दिया और उसके दो वर्ष बाद कलकत्ते के बेथुन कालेज में भरती करा दिया। इस कालिज में इन्हों ने इन्ट्रेन्स तक शिक्षा पाई भाग्य से इनके पिता को प्लेग की बीमारी ने आ घेरा, और कई कारणों से इनका कालेज जाना बन्द होगया।

जब इनके पिता प्लेग से छुटकारा पाकर अच्छे हुए तब उनको यह चिन्ता उत्पन्न हुई कि किसी प्रकार अब लड़की का विवाह जल्दी कर देना चाहिये।

इसी इच्छा को लेकर वे योग्य वर की तलाश में इधर उधर घूमने लगे। घूमने २ डाक्टर देसाई जी से इनका समागम हुआ; यह इनके पुराने मित्र थे। इनसे अपनी लड़की के विवाह सम्बन्धी सब हाल कह कर इस सम्बन्ध में इनसे भी प्रार्थना की। डाक्टर देसाई जी ने इनकी प्रार्थना स्वीकार करली। सन् १६०५ में

डाक्टर देसाई जी के साथ सत्यबाला जी का विवाह होगया । डाक्टर देसाई जी गुजरात प्रान्त के उच्च कुल के ब्राह्मण हैं ।

जब डाक्टर देसाई जी के साथ आपका विवाह होगया तब संगीत सीखने की पुरानी इच्छा आपके मन में फिर जागृत हो उठी और डाक्टर साहेब से उसके सीखने के लिये प्रार्थना की । डाक्टर देसाई जी संगीत विद्या के अच्छे जानकार हैं इस कारण उन्हों ने बड़े २ गवैयों को अपने घर में बुला कर और उन को सैकड़ों रुपये तनखा देकर इस इच्छा की पूर्ति करने में पूरा प्रयत्न किया और वह सफल भी हुआ । अपने पति की कृपा से संगीत सीखने का मनोरथ जब सफल होगया तब इनकी यह इच्छा हुई कि विलायत जाकर वहां वालों को भारतवर्ष के संगीत का गौरव दिखाना चाहिये । इसी विचार को लेकर सन् १९०९ में अपने पति के साथ रंगून, सिंगापुर और जापान होते हुवे अमेरिका में गईं । और वहां जाकर उन लोगों को अपने हिन्दुस्तानी संगीत से ऐसा मोहित किया कि उनको एक स्वर से भारतीय संगीत की प्रशंसा करनी पड़ी और अपने देश के समाचार पत्रों में इस विषय की धूम मचा दी । अमेरिका में जाकर इनके विचारों ने भारतीय संगीत विद्या की श्रेष्ठता सिद्ध की फिर वहां से आकर अपने देश की स्त्रियों की दुर्दशा देख कर इनको दुःख होने लगा । और उसको शिक्षित बनाने के लिये नाना प्रकार के संकल्प विकल्प इनके मन में उठने लगे ।

अन्त में अपने पति की सलाह से एक कन्या विद्यालय स्थापित करना निश्चय किया । और अपने पति ही की सहायता से ज्वालापुर में सन् १९१६ में स्थापित कर दिया । इसका प्रारम्भिक मुहुर्त भी कर दिया, और कुछ लड़कियां भी बाहर से पढ़ने के लिये आने लगी हैं, आशा है कि यह विद्यालय जल्द ही श्रीमती जी की आन्तरिक इच्छा को पूरी करेगा ।

श्रीमती सत्यबाला देवी, गायनाचार्या.

सद्धर्मप्रचारक प्रेस, देहली.

(अ) कान्यकुब्जों का १ भेद सर्यूपारी ब्राह्मण।

सर्यूनदी अवध में है। सर्यूनदी से पार बसने वाले सर्यूपारी कहलाये। कहते हैं, श्रीरामचन्द्र जी ने जब महायज्ञ किया था, तब उन्हों ने ब्राह्मणों को ग्राम दिये थे, उन में सर्यूनदी के पार के ग्राम जिनको दिये, वह सर्यूपारी कहलाये। इस विषय में वट्टकप्रसाद जी ने जो लिखा है कि सारव नाम स्थल में प्रथम ब्राह्मण हुवे, वहीं से अन्यत्र गये, सो सब सारवावारीण (सर्यूपारीण) हैं। यह लेख मिथ्या सिद्ध हो चुका। हमने पहिले अध्यायों में ब्रह्मावर्त देश ब्राह्मणों की जन्मभूमि प्रमाणों सहित प्रतिपादन कर दिया है। Rev. M. A. Sherring साहिब ने भी सर्यूपारियों को कान्यकुब्जों का भेद माना है। यह ब्राह्मण अवध में और यू० पी० बुन्देलखण्ड में विशेषतया हैं।

इनके गोत्रादि इस प्रकार हैं:—

	गोत्र।	आस्पद, ग्राम।
१	भारद्वाज—	दूबे, वृहद्ग्राम
२	वशिष्ठ—	
३	वत्स—	मिश्र, पैयासी, दूबे, समदारी
४	काश्यप—	पांडे, माला
५	कश्यप—	मिश्र, राढ़ी
६	कौशिक—	मिश्र, धर्मपुरा
७	चन्द्रायण—	पाण्डे, छपाला
८	सावर्ण्य—	पाण्डे, ईतिया, ज्ञुरवा
९	पराशर—	पाण्डे
१०	पुलस्त—	पाण्डे
११	भृगु—	पाण्डे
१२	अत्रि—	पाण्डे
१३	अंगिरा—	पाण्डे
१४	गर्ग—	पाण्डे, इतिया
१५	गौतम—	दूबे, कंचनियां
१६	शाण्डिल्य—	पाण्डे, त्रिफला, तिवारी, पिण्डी

उपाधि (शासन)	निवासस्थान	उपाधि (शासन)	निवासस्थान
पाण्डे	अभ्रज	तिवारी	खिरजम
,,	अस्तारकपाल	,,	सुहगौड़
,,	बिस्तौली	,,	धतूरा
,,	लहलारी	,,	हुआ
,,	मधरिया	,,	दिहिमा
,,	अगस्तिया	,,	मुजौना
,,	मचिश्रौन	,,	चिदौ
,,	लुहड़ी	,,	गुरौली
,,	आदिचोला	तिवारी	त्रिगान्ति
,,	घारपानीहा	उपाध्याय	खुरिया
,,	परसिया	मिश्र	भड़या
शुक्ल	भुरारिया	,,	पिसासी
,,	चान्दा	,,	मार्जनी
,,	विहरा	,,	पनरहा
,,	कञ्जे	,,	सौरेजी
,,	मामखोर	,,	भारसी
,,	भेरवक्षी	,,	पीपरा
,,	सत	ओझा	करेली
,,	उञ्छहरिया	,,	निपानिया
,,	नेवारी	दुबे	परवा
चौबे	माथुर	,,	तिलौरा
,,	नैपुरा		

—:o:—

महामहोपाध्याय पण्डित शिवकुमार शास्त्री।

काशी से दो तीन कोस पर उन्दी नामक ग्राम में पं० रामसेवक जी मिश्र के संवत् १६०४ फाल्गुन कृष्ण ११ को गुरु जी के आशीर्वाद से शिवकुमारजी का जन्म हुवा। कहते हैं जन्म समय में इन की जिह्वा पर त्रिपुण्ड्र, त्रिशूल और ललाट के चिन्ह थे नौ दिन पश्चात् वे लुप्त हो गये। पाँच वर्ष के पश्चात् पिता की

पंडित शिवकुमार शास्त्री.

असामयिक मृत्यु के कारण अपनी माता के साथ अपने पितृव्य में बेतिया में जाना पड़ा। आरम्भिक शिक्षा वहीं हुई। शास्त्री जी को हिन्दी पढ़ा कर ज्योतिष पढ़ाने लगाया। ५०-५० श्लोक नित्ये कण्ठ कर लेते थे। फिर वाणीदत्त चतुर्वेदी से लघुकौमुदी पढ़ने लगे कुछ दिन में समाप्त कर अपनी माता के साथ काशी आकर क्वीन्स कालिज में पण्डित दुर्गादत्त जी से व्याकरण पढ़ने लगे। पुनः बालशास्त्री जी से व्याकरण अध्ययन किया। फिर पण्डित कालीप्रसाद शिरोमणि तथा विट्ठलशास्त्री से न्याय स्वा० विशुद्धानन्द जो से मीमांसा और प्रस्थानत्रयी पढ़ने लगे। पुनः क्वीन्स कालिज में व्याकरण अध्यापक होगये। २७ वर्ष की अवस्था में पूर्ण विद्वान् होगये थे। आपने कालिज की नौकरी त्याग राजपूताना, काश्मीर, दर्भङ्गा आदि देशों में भ्रमण किया। महाराजा दर्भङ्गा के अनुरोध से आप १ वर्ष वहां रहे और २२ सर्गों में राजवन्श वर्णन एक काव्य लिखा। फिर दर्भंगानरेश ने काशी में पाठशाला स्थापन कर आप को वहां का प्रधानाध्यापक बनाया। स्वा० भास्करानन्द जी का जीवनचरित 'यतीन्द्रजीवन चरित' लिखा उस के उपलक्ष्य में आप महामहोपाध्याय बनाये गये। आप पर सब धर्म वालों का विशेष प्रेम था। एकबार आप लाहौर डी० ए० वी० कालिज में गये वहाँ पर आप को पण्डितों ने सम्मान पत्र दिया। सन् १९११ के राजदर्बार में आये हुवे भारत सम्राट् ने आपको प्रणाम किया आपने उनको श्लोकों के रूप में आशीर्वाद दिया। पश्चात् विलायत जाकर आपने पञ्जाब के छोटे लाट द्वारा अपना सन्देश भिजवाया। उस के पारसीलिपि का अनुवाद यह था।

" श्री पं० महामहोपाध्याय शिवकुमार शास्त्री जी। महाराजाधिराज भारत सम्राट के राजगद्दी के शुभावसर पर श्रीमान् भारत सम्राट तथा सम्राज्ञी के दीर्घायु तथा प्रबलप्रताप के वृद्ध्यर्थ आपके यहां पधारने से जो धर्म दृढ़ता तथा हृदय की शुद्धता प्रगट हुई है उस से श्रीमान् भारत सम्राट् अत्यन्त आनन्दित हुवे हैं। और महाप्रभु ने आज्ञा दी है कि उक्त महाप्रभु की हृद्गत प्रसन्नता का प्रकाश किया जावे। इस लिये यह सन्देश भेजा जाताहै और

विश्वास है आप का हार्दिक आशीर्वाद सम्राट् तथा साम्राज्ञी के कल्याणार्थ सदा होता रहेगा।" लेफ्टीनेन्ट गवर्नर पञ्जाब।

आप विलायतयात्रा के बड़े विरोधी थे। शोक है कि इन विद्वद्रत्न के २८ अगस्त सन् १९१७ को संसार से उठजाने से संस्कृत साहित्य का एक रत्न खोया गया। आप के १ पुत्र कई पौत्र तथा कई कन्यायें विद्यमान हैं।

सर्यूपारी वंशभास्कर महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी।

द्विवेदी वन्श में पं० कृपालुदत्त जी ज्योतिष के प्रसिद्ध विद्वान् थे। आप के सं० १९१७ चैत्र शु० ४ सोमवार को मिर्जापुर में पुत्ररत्न उत्पन्न हुवे। तभी डाकिये ने सुधाकर नामक पत्र दिया, आपने इस के ही नाम पर इनका सुधाकर नामकरण किया। इनके ६ मास के होते ही माता का स्वर्गवास हो गया। आप की दादी ने ही आप का पालन किया। पिता घर पर नहीं रहते थे, अतः ८ वर्ष तक शिक्षा प्रारम्भ न हुई, फिर यज्ञोपवीत हो कर शिक्षा प्रारम्भ हुई। ज्योतिष आप को अत्यन्त प्रिय थी, अतः आपने अनेक पुस्तकें पढ़ डालीं। आप बड़े प्रतिष्ठित ज्योतिषी हुवे। कुछ दिन आपने क्विंस कालिज में गणित श्रेणी में अध्यापकी का कार्य किया। आप की कीर्ति यूरोप तक फैली। गवर्न्मेण्ट ने आप को "महामहोपाध्याय" पदवी से विभूषित किया था। आप नागरी प्रचारिणी सभा के सभापति भी कई वर्ष रहे। खेद है ऐसे विद्वान् का स्वर्गवास २८ नवम्बर १९१० को काशी में हो गया।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी ।

इंडियन प्रेस, प्रयाग ।

(आ) सर्यूपारियों का भेद सवालखी ब्राह्मण।

वृद्ध किंवदन्ती है कि माधवगढ़ में राम नामक एक राजा था। उसने यज्ञ किया, यज्ञ में १। लक्ष ब्राह्मणों को भोजन कराया। इसी से सवालखा नाम पड़ा। यह राजा १५६३ ईसवी में राज्य करता था, ऐसा इतिहासज्ञ कहते हैं। इनके भेद गयावाल, गङ्गा-पुत्र महाब्राह्मण और अन्य ब्राह्मण हैं। यह जाति सम्प्रति बनारस आदि जिलों में है।

इनकी उपाधि मिश्र, दुबे, पाण्डे आदि हैं।

१ दुबे।

स्थान

१ वेलुआसूरी
२ चिल्लूपार
३ शिवमन
४ शर्कविभारगु
५ मनियारे
६ बिरुहा
७ सर्पोहुली
८ कोता
९ कर्णोदा

२ उपाध्याय।

स्थान

१ देवतवन्शी
२ तुशुवा
३ त्रिफला

३ तिवारी।

१ सैरी
२ तिगुणात

४ मिश्र।

स्थान

१ मार्जनी
२ सुआरातानर
३ पराडा

५ दीक्षित।

६ अवस्थी।

७ यास्क।

८ पाण्डे।

९ वखस।

सवा लखी ब्राह्मणों के भेद।

१—महाब्राह्मण, यह जाति प्रायः सब देशों में पाई जाती है। यह मृतक का दान आदि लेते हैं इसी से इन से खान पान में सङ्कोच किया जाता है। मृतक दान लेना यवन कालीन प्रथा है।

सन् १९०१ की जन संख्या विवरणी में इनकी संख्या ८९८३ थी पुरुष ४३४९ स्त्री ४६३४ थे।

२—गङ्गा पुत्र, यह तीर्थों पर प्रायः रहते हैं और वहीं दान ग्रहण करते हैं और प्रायः विद्या शून्य हैं।

३—गयावाल, गया में पिण्ड कराते हैं यह भी प्रायः विद्याशून्य हैं इसी प्रकार प्रयाग वाले भी हैं।

४—ओझा, अथवा **झा,** यह शब्द उपाध्याय से बिगड़ कर बना प्रतीत होता है। प्रथम यह बड़े २ विद्वान् होते थे परन्तु यवन काल में इस जाति ने अन्य शिल्पी कर्म भी प्रारम्भ कर दिये थे। सम्प्रति अच्छे २ विद्वान् इस जाति में हैं। इनके गोत्रादि अन्य ब्राह्मणों के समान हैं। यह जाति मिथिला, यू०पी० और अवध में है।

५—मनरेरिया, यह जाति काशी आदि स्थानों में हैं।

(इ) सर्यूपारियों का २ भेद भूमिहार ब्राह्मण।

यह जाति अवध, यू० पी० विहार, और मिथिला प्रान्त में है। इनके सम्बन्ध मैथिल ब्राह्मणों में भी होते हैं। इनके गोत्रादि नीचे लिखे जाते हैं।—

गोत्र	उपाधि	स्थान
गर्ग	मिश्र	एक सारिया
गौतम	दीक्षित	संकरवार
शांडिल्य	उपाध्याय	किनवार
काश्यप	पाण्डे	वेनवार
भारद्वाज	तिवारी	दुनवार
वत्स	पाठक	चौधरी
...	सरसीमिश्र	कुलहा
...	...	विप्र
...	...	जैठरिया
...	...	रौनडिया
...	...	कष्टवार

गाजीपुर जिले में १ गजाधर २ मुकुन्द ३ विधुरराय भी हैं।

काशी के महाराजाधिराज H. H. सर ईश्वरीनारायण सिंह जी बहादुर इस जाति के प्रतिष्ठित विद्वान् हैं।

स्व० बा० राजानारायणसिंह बहादुर K. C. S. I. के वंश का वर्णन।

१ नारायणसिंह देव (१८५२ ई०)। २ विक्रमसिंह। ३ काशिनाथ। ४ गोपालसिंह। ५ मुरादसिंह। ६ खेदुराम। ७ मुरदन सिंह (१७०४ ई०)। ८ दायराम।

पहलमसिंह, बा० ऊधोसिंह, औशानसिंह, खेमकर सिंह,

बा० सिंहल प्रसाद, बा० दुर्गाप्रसाद, बा० शिवनारायन।

बा० लक्ष्मीनारायणसिंह, बा० हरनारायणसिंह, बा० रामनारायणसिंह, बा० श्रीनारायणसिंह, राजा नरदेवनारायणसिंह

राजा शम्भुनारायणसिंह।

कान्यकुब्जों का ३ भेद जुझोतिया ब्राह्मण।

'जुहोति' शब्द से जुझोतिया बना जिस के अर्थ यज्ञ हवन करना है। बघेलराज जो कि बुन्देलखण्ड में था तब से इन का वन्श क्रम चला। इन के गोत्रादि निम्नलिखित हैं—

गोत्र	उपाधि	स्थान
उपमन्यु	पाठक	गोरा
"	बाजपेयी	बिनवारे
कश्यप	पस्तोर	घहुवा
"	बस्तोरिया	शाहपुर
गौतम	चौबे	रूपनौथल

गोत्र	उपाधि	स्थान
,,	गङ्गेले	गौसरे
शांडिल्य	मिश्र	हमीरपुर
,,	अजेरिया	कांट के
मौनस	मिश्र	करिया
भारद्वाज	तिवारी	अजी के
,,	दुबे	उथाशने
वत्स	तिवारी	पथरीली
एकावशिष्ठ	नायक	पिपरी

कान्यकुब्जों का ४ भेद सनाढ्य ब्राह्मण ।

सनाढ्य शब्द स्वर्णाढ्य का अपभ्रंश है, रामचन्द्र के यज्ञ में जिन्होंने भाग लिया था वह दक्षिणादि से युक्त होकर स्वर्णाढ्य कहाये। कुछ सनाढ्य लोग 'सन' तप का नाम है उस से युक्त सनाढ्य ऐसा अर्थ करते हैं। पर सन नाम तप किसी कोष में नहीं मिला। यह जाति N. W. P., अवध, आगरा, पीलीभीत, ग्वालियर, मथुरा, अलीगढ़ आदि प्रान्तों में हैं। 'Sir Henry Elleat ने भी कान्यकुब्जों का भेद माना है। The Sanaudhas or Sanadhas, as they are more fannellarly called, tauch the kanaujias on the north-west, Spplemental Glossory Vol I. P. 149.

अर्थात् सनाढ्य ब्राह्मण कनौजियों का उपभेद है। परन्तु कुछ लोग कहते हैं यह गौडों का ही भेद है। ब्राह्मण मार्तण्डाध्याय में भी ऐसा ही लिखा है:—

ते सनाढ्या द्विजा जाता ह्यादिगौडा न संशयः।

अर्थात् सनाढ्य गौड़ ब्राह्मण ही हैं। एच० एम० इलियट साहिब ने भी ऐसा ही लिखा है—" On the North-west the Sanadhya are met by the Gaur Brahmans."

वैसे तो सन शब्द षणु दाने से बनता है और अनेकार्थवाची है, परन्तु जो सनाढ्यदर्पण में लिखा है—

अतः सनाढ्यः, सनकः सनन्दनः सनत्कुमारश्च विभुःसनातनः।

सनक, सनन्दन, सनत्कुमार और सनातन इन पांच ऋषियों के 'सन' आदि नाम के कारणतप विशिष्ट ब्राह्मणों ने अपना नाम भी सनाढ्य रक्खा, यह सत्य प्रतीत होता है। कुछ लोग सनाढ्य एक देश विशेष मानते हैं यथा—" They touch the Kannaujiyas on the North-west extending over central Rohilkhand, and the part of the upper and central Duab from Pilibhit to Gwalior. The boundry lens runs from the North-west angle of Rampur, through Richa, Jahanabab, Nababganj, Bareilly, Fridpur to the Ramganga thence through Salimpur and the borders of Mehrabad, thence down the Ganges to the borders of Kannouj, thence up the Kalindi to the western border of Alipur-patti through Bhaugaon, Sij Bihaman, and down the Jumna to the junction of Chambal.

(H. M. Elliat's Supplementary Glossy.)

कन्नौज प्रान्त से मिलता हुआ रोहेलखण्ड के पास को पीलीभीत से ग्वालियर तक सनाढ्य देश है, इत्यादि। इसी देश-नाम से सनाढ्य ब्राह्मण हुवे। परन्तु उक्त कथन में कोई प्रमाण नहीं मिला। संस्कृत साहित्य में 'सनाढ्य' देश का नाम कहीं नहीं मिला, अस्तु।

इन के साढ़ेतीन घर व दस घर हैं। साढ़ेतीन घर वालों के वन्श के एक पण्डित बदायूं जिले के कोट सासनी नाम परगना के आदिशूर राजा के समय में रहते थे। इनके चार पुत्रों को चार ग्राम (१ सराड़ा, २ तारापुर, ३ राहड़, ४ भट्ट) दिये थे। इन्हीं नामों से इनकी उत्पत्ति हुई।

एक भेद डंडोतिया है। अकबर बादशाहने (सन् १२००) में ८४ ग्राम चम्बलनदी के किनारे के दिये थे। इस से डंडौतगढ़ी चौरासी भी कहते हैं।

गोत्र	उपाधि
वशिष्ठ	व्यास, गोस्वामी, मिश्र, पराशर, कतारी, देवलिया, दुवे, खेमरिया, उपाध्याय।
भारद्वाज	वैद्य, चौबे, दीक्षित, त्रिपाठी, चतुर्धर, मिश्र।
काश्यप	मिश्र।
सावर्णी	तिवारी।
उपमन्यु	दुव।
गौतम	पाण्डे।
शांडिल्य	पाठक, स्वामी, समादिया, मोनस, बिरथरी, चैनपुरिया, भोरिया।
कौशिक	बरसिया।
विश्वामित्र	ओझा।
जमदग्नि	मांडिया।
धनञ्जय	सनौडिया।
कौशल्य	उद्देनिया।
सौंगिया	चचोन्डिया।
सिरहा	

श्रीयुत पं० भीमसेन जी शास्त्री
वेद व्याख्याता यूनिवरसिटी कलकत्ता
तथा
सम्पादक ब्राह्मण सर्वस्व, इटावा ।

सद्धर्म्म-प्रचारक प्रेस दिल्ली ।

सनाढ्य कुलदीपक पं० भीमसेन जी शर्मा इटावा।

आपके पूर्वज फर्रुखाबाद जिले के मेरापुर ग्राम निवासी थे। किसी कारण वश आपके पूर्वज प० गङ्गाराम मिश्र एटा जिले के लालपुर ग्राम में आकर बस गये थे। आपकी ५वीं पीढ़ी में प० नेकराम जी शर्मा हुवे। आपके सं० १६११ कार्तिक में पुत्ररत्न उत्पन्न हुवे। आपका भीमसेन नामकरण संस्कार किया गया। आप के जन्म के ।। वर्ष बाद ही माता का देहान्त होगया। आपको अक्षराभ्यास पिता जी ने ही कराया साथ ही गणित भी पढ़ाते रहे। कुछ काल एक मदरसे में उर्दू भी पढ़ी। १६ वर्ष तक आप संस्कृत के ग्रन्थ अध्ययन करते रहे। इसी बीच में स्वा० दयानन्द जी ने फर्रुखाबाद में एक पाठशाला खोली थी उसमें आपने ५ वर्ष तक काव्य कोष अलंकार आदि शास्त्र पं० उदयप्रकाश जी से अध्ययन किये। फिर काशी चले गये वहां दर्शन शास्त्र पढ़ते रहे। स्वा० दयानन्द जी ने काशी में वैदिक प्रेस खोला था उस के मैनेजर आप ही हुवे। परन्तु कुछ काल में रोगी होने के कारण आप घर आगये। स्वस्थ होने पर स्वामी जी ने फिर इन्हें २५) पर लेखक नियत कर अपने पास आगरे बुला लिया पश्चात् प्रेस प्रयाग आगया आप वहीं ३०) के संशोधक होगये। पश्चात् सं० १९४० में स्वामी जी के स्वर्गारोहण के बाद आपने प्रयाग में अपना 'सरस्वती प्रेस' खोला, आर्य सिद्धान्त नाम का पत्र चलाया यह कोई १५ वर्ष निकला, फिर प्रेस को इटावा में उठा लाये। उपनिषद् गीता और मनु के ६ अध्यायों का आपने भाष्य किया। आपके यत्र तत्र शास्त्रार्थ भी हुवे हैं। पितृयज्ञ के सम्बन्ध में आप आर्यसमाज से सं० १९५६ में पृथक् हुवे। तब से आपने 'ब्राह्मण-सर्वस्व' पत्र निकाला प्रेस का नाम 'ब्रह्म-प्रेस' रक्खा। सन् १९१२ जुलाई में आप कलकत्ता विश्वविद्यालय में वेद व्याख्याता प० सत्यव्रत सामश्रमी के स्थान पर नियत हुवे। खेद है कि आपकी सं० १९७४ में असामयिक मृत्यु हो जाने से संस्कृत का एक उज्ज्वलरत्न उठ गया। आपके २ पुत्र ब्रह्मदेव और वेदनिधि हैं। १ कन्या थी जो परलोकवास हुई।

——*——

गौड ब्राह्मण ।

प्रथम भाग में 'गौड' शब्द की कुछ विवेचना हो चुकी है। गौड़ों के ही नाम से पञ्चगौड़ कहलाते हैं। यद्यपि गौड़ नाम देश का भी है, परन्तु यह जातिवाचक ही यहां अभिप्रेत है। 'गुड' संकोचने से गौड़ शब्द की निष्पत्ति है। इन्द्रियों का संकोचन या दमन करने से गौड कहलाये। जैसे ब्राह्मण गौड़ हैं—इसी प्रकार क्षत्रिय व कायस्थ भी गौड़ जयपुर आदि में विद्यमान हैं। इन सब प्रमाणों से स्पष्ट है कि वर्ण में गौड़ शब्द जातिवाचक है देशवाचक नहीं। आदि गौड़ों का आदि देश कुरुक्षेत्र प्रान्त था यह पूर्व लिखा जाचुका है। नदिया के प्रधान पण्डित योगेन्द्रनाथ भट्टाचार्य भी ऐसा ही लिखते हैं:—

The original home of the Gaur Brahmins is Kurukshetra country. The Gaurs say that the other main Divisions of North-Indian Brahmins were Gaur and have acquired their present disignations of Saraswat, Kanyakubja, Maithal, Utkal by immigranting to the Provinces where they are now domiciled. (H. C. S. Page 53)

अर्थात् गौड़ों का आदि प्रादुर्भाव स्थान कुरुक्षेत्र है। क्योंकि उत्तरीय भारत के सारस्वतादि जाति में इसी 'गौड़' नाम से प्रसिद्ध हुये, इत्यादि।

'गौड़' नामक एक ऋषि भी हुये हैं।

नारायणं पद्मभवं वसिष्ठं शक्तिञ्च तत्पुत्र पराशरंच ।
व्यासं शुकं गौडपद महान्तं गोविन्द योगिन्द्र मथास्यशिष्यम् ॥

इस पद्य में शुकदेव के पुत्र गौड़ भी कहा है। परन्तु इस की सत्यता में अन्यत्र प्रमाण नहीं मिला। किसी २ का कहना है कि इसी ऋषि के नाम से गौड़ कहाये।

यह जाति सर्वत्र भारतवर्ष में विस्तृत है। इस में मुख्य ब्राह्मण आदिगौड़ हैं।

आदि गौड़ों के कुछ गोत्र और उपाधि।

गोत्र	उपाधि	गोत्र	उपाधि
कौशिक	दीक्षित	वसिष्ठ	बाग्रमान
भारद्वाज	तिवारी	गौतम	विधाता
कृष्णात्रेय	चतुर्वेदी	...	गन्धर्वाल
पराशर	निर्मल	...	पाण्ड्याना
वत्स	नागवाण	...	पाँतिये
,,	चौहनवाल	...	झुंडिये
,,	मरहता	...	कनोडिये
पाराशर	लाटा	...	गौतम
...	मांत्रा	...	मुहालवान
...	इंदौरिया	...	नगरवाल
शांडिल्य	हरितवाल	...	शाठिया
काश्यप	मनत्रकी	...	बाजरे
अंगिरा	मिरीचिया	...	सिम्मनवाल

गौड़ ब्राह्मणों के शासन १४४४ हैं इन में सें कुछ निम्न लिखित हैं।

१	सारोलिया	११	पञ्चलगिया
२	काकर	१२	पटवाडिया
३	भडेलवाल	१३	नागणवा
४	हरिनवाल	१४	लाटा
५	ववेरवाल	१५	फतेवरया
६	सिथीवाल	१६	आस्तीयाण
७	दरड़	१७	गाँगावत
८	दीक्षित	१८	नागवाण
९	चूलीवाल	१९	मारस्या
१०	नानोतिया	२०	गलयाण

२१ ढाचोलिया
२२ माचोलिया
२३ ढड
२४ इंदोरिया
२५ चौंडा
२६ अदीनवाल
२७ नूरावतया
२८ विवाल
२९ रामपुरया
३० जाडीवाल
३१ चूहेड
३२ कलीनूरा
३३ वगेरवाल
३४ रूलवाल
३५ कण्डवाल
३६ तिलोडिया
३७ माथरा
३८ भीरुपोत्रा
३९ खरीट
४० वगीवाल
४१ दोराड
४२ पचोल
४३ घड़वाल
४४ डोरवाल
४५ भीरुका
४६ सामणिया
४७ चालीण
४८ सेवल
४९ मरसोलिया
५० भीमवरा
५१ फैवारिया
५२ लावलया
५३ रीछोवत
५४ वाल
५५ चोग
५६ चाकोलिया
५७ गूराबा
५८ वेडतिया
५९ खेड़वाल
६० वेदी
६१ श्रोत्रिय
६२ महता
६३ मिश्र
६४ चतुर्वेदी
६५ गर्वाटी
६६ स्वामी
६७ गो स्वामी
६८ पुरोहित
६९ उपाध्याय
७० आचार्य

---

* यज्ञं कर्तुं समाहूय वेदब्ध्यधींदु सम्मितैः ।
ततः परमसंतुष्टो राजा यज्ञं चकार ह ॥

अर्थात् राजा जनमेजयन ने यज्ञ कराने के लिये १४४४ मुनियों को बुला कर यज्ञ कराया । उन से १४४४ शाखन गौड़ों के हुवे ।

व्याख्यान वाचस्पति पंडित दीनदयाल शर्मा.

गौडाः द्वादश प्रोक्ताः कायस्थास्तावदेव हि ।
तत्रादौ मालवी गौड़ाः श्री गौडश्च ततः परम् ॥४०॥
गंगातटस्थगौडाश्च हर्याणा गौड एव च ।
वाशिष्ठाः सौरभाश्चैव दाल्भ्यश्च सुखसेनकाः ॥४१॥
भट्टनागर गौडाश्च तथा सूर्यद्विजाह्वयाः ।
माथुराख्यास्तथा गौडा मात्रल्मी की ब्राह्मणस्ततः ॥४२॥

आदि गौड़ों के १२ उपभेद हैं— १ मालवीयद्वि गौड़, २ श्रीगौड़, ३ गंगापुत्र ४ हर्याणा ५ वाशिष्ठ ६ सौरभ ७ दाल्भ्य ८ सुखसेन ९ भट्टनागर १० सूर्यद्विज ११ माथुर १२ वाल्मिकी ।

इनके अतिरिक्त अन्य विभेद भी हैं— १ गूजर गौड २ चौरासिया ३ दाधिमथ ४ पालीवाल ५ टेकवारा ६ किरतनिया ७ शुकुलवाल ८ भूमिभार ९ शुक्ल १० सनाढ्य ११ भार्गव १२ मध्यश्रेणी इन सबके गोत्र आदि गौडो के समान ही हैं ।

व्याख्यान वाचस्पति श्रीमान पं० दीनदयालजी शर्मा ।

दिल्ली से ३५ मील पश्चिम में पंजाब प्रांत का झज्जर नामक एक छोटासा नगर है । वहींपर एक उच्च कुल के प्रतिष्ठित गौड ब्राह्मण वंश में सम्वत् १९२० ज्येष्ठ कृष्ण तृतीया को श्रीमान् पं० दीनदयालु जी शर्म्मा का जन्म हुआ । आपके पिता पं० गंगासहायजी फारसी के बड़े विद्वान् माने जाते थे आप कविता भी किया करते थे । इसका कारण यह था कि उस समय झज्झर में नवाबी गूंज रही थी । दिल्ली की बादशाहत नष्ट होने के बाद झज्जर के नव्वाब बड़े प्रतिष्ठा की नजर से देखे जाते थे । नवाबी के ही कारण ब्राह्मणों तक में फारसी का पठन पाठन जोर पकड गया था । इस प्रभाव से पंडित जी को भी अगत्या मकतब में फारसी पढ़नी पड़ी । कुछही दिनों में आप फारसी के पूरे मुंशी होगये । शेख सादी और मौलाना रूम के प्रकरण ग्रन्थ आपने झटपट पढ़ डाले । अनन्तर सरकारी स्कूल में दाखिल हुए और अंग्रेजी आदि का अभ्यास किया, आप प्रत्येक कक्षा में अव्वल नंबर पर पास होते रहे । यदि पारिवारिक विपत्तियां आडे न आतीं तो आप अंग्रजी की भी पूरी शिक्षा प्राप्त

करसकेन। परन्तु ऐसा न होसका;गुरुजनों के थोड़े२अन्तर से संसार त्याग करने के कारण आप बहुत दुःखी हुए। क्योंकि बन्धु वियोग के समान संसार में कोई दुख नहीं हो ता। कुटुम्बियों के अनुरोध करने पर भी दुःखी चित्त से पढ़ते रहना आपके लिये कठिन हो गया। अन्ततोगत्वा आपको अध्ययन छोड़ना पड़ा। उन दिनों सरकारी नौकरी करनेवालों को एक परीक्षा देनी पड़ती थी। आप उस परीक्षा में बैठ और जिले भर में पहला नम्बर पास हुए। तदन्तर कुछ दिनों सरकारी नौकरी की, परन्तु आपको परतंत्रता में जीवन बिताना अच्छा नहीं मालूम हुआ, आपने तुरन्त नौकरी छोड़ दी, आपको बाल्यावस्था से ही समाचार पत्रादिकों के पढ़ने में प्रेम था और देश से अनुराग था इसी कारण आपने एक 'रिफाहे आम सोसाइटी' स्थापन की, और झज्जर से ही अपने सम्पादकत्व में 'हरयाना, नामका उर्दू रिसाला निकाला। इस सोसाइटी का जिले भर में प्रभाव छागया, और बड़े लोग उसमें सम्मिलित होगये।

इसी बीच में आपको ब्रजयात्रा करने का विचार सूझा इसी के अनुसार आप मथुरा वृन्दावन की अपूर्व शोभा निरखने के लिए ब्रज में पहुँच गये, वहां के मन्दिरों और भोगराग के ठाठ देखकर आप धर्मभाव में गद्गद होगये। आपकी अवस्था उस समय लगभग २२ वर्ष की थी। आप सबकुछ भूलकर बहुत दिनों तक ब्रज की ही कुंजगलियों में भ्रमण करते रहे। घूमते फिरते श्री वृन्दावन में केशी घाट पर श्रीनारायण स्वामी जी से आपकी भेंट हुई। और उनसें आपको परम श्रद्धा होगई। कुछ काल स्वामी जी का संग किया। स्वामीजी ब्रजभाषा के बड़े रसिक और भक्त कवि हुए हैं। आपकी रचित "ब्रजविहार" नामकी पोथी इस बात का प्रमाण है। स्वामी जी के उपदेश से ही आपने हिन्दी भाषा सीखी और धर्म की सेवा करने का दृढ़ संकल्प करलिया। आपको ब्रज भूमि बहुत ही रुचिकर प्रतीत हुई। अतः श्रीमथुरापुरी में निवा करने लगे। वहां से 'मथुरा' नामक उर्दू साप्ताहिक पत्र निका और बहुत समय तक स्वयं संपादित किया। उसके बाद अ मुंशी हरसुखराय साहब के लाहौर से निकलने वाले "कोहनू नामक उर्दू साप्ताहिक पत्र के एडीटर रहे। यहांपर इनके बालस

स्वर्गीय बाबू बालमुकुन्द गुप्त जी सहकारी सम्पादक नियत हुए। यद्यपि पंडित जी का उर्दू लेख बड़ा जोरदार था और उर्दू के नामी लेखक हो चले थे, तथापि पण्डित जी को उर्दू से घृणा होने लगी, इसी अवसर में आपने हिन्दी संस्कृत का अभ्यास अच्छा कर लिया और धर्म सेवा में लग गए। इधर बाबू बालमुकुन्द जी ने वही काम लेखनी द्वारा करने का संकल्प किया, इसी निश्चय के अनुसार पंडित जी ने संपादन कार्य त्याग दिया और व्याख्यान देना प्रारंभ कर दिया। सबसे पहले आपने हरिद्वार में श्रीगोवर्णाश्रमहितैषणी गंगाधर्म सभा कनखल स्थापित की इसका उद्देश नाम ही से प्रगट है। परन्तु इससे धर्म का वास्तविक उपकार न होते देख एक भारतीय धर्म संस्था स्थापन करने का आपने संकल्प किया, और तदनुसार सम्वत् १९४४ में श्री हरिद्वार में आपने (भारत धर्म महामंडल) नामक विराट धर्म संस्था की स्थापना की, और आपने इसे बड़ी योग्यता से चलाया। आप इस अवस्था में बड़े ओजस्वी और प्रभावशाली वक्ता माने जाने लगे थे। इसके दो ही वर्ष बाद संवत् १९४५ एवं सन् १८८८ मार्च मास की २४ से २७ तारीख तक अनरेबल राजा सेठ सी० आई० ई० के सभापतित्व में श्री वृन्दावन में महा मण्डल का दूसरा अधिवेशन आपने बड़ी धूमधाम से किया। पंडितजी की वाणीशक्ति के प्रभाव से बड़े२ महाराजा, राजा, सेठ साहूकार, रईस, पंडित विद्वान, लेखक और वक्ता सभी महामंडल में सम्मिलित हो गये। पञ्जाब यू. पी. और राजपूताने में इन अधिवेशनोंका अच्छा प्रभाव पड़ा। आपने उत्सवोंही तक अपने कर्तव्यकी इतिश्री नहीं की। किन्तु विद्वान् उपदेशकों को साथले प्रधान २ नगरों में निरन्तर भ्रमण किया। और प्रतिपक्षियों को हिलाने वाले ऐसे ज़ोर दार व्याख्यान दिये कि, जर्जरित सनातन धर्म्म में एकबार फिर प्राण सञ्चार हो गया. आपके कारण सनातनी लोग अपने आपको सनाथ मानने लगे। पंडितजी ने अपने इन दौरोंमें स्थान २ पर सनातन धर्म्म सभाओं की स्थापना की। इस प्रकार स्थापित धर्म्म सभाओंकी संख्या ५, ६ सौ के लगभग हुई होगी। आपकी इस विचित्र व्याख्यानशक्ति और दैवी सहायताके आश्रय पर धार्मिक जगत् पुनः

जागृत हो उठा। आप जहां गए वहीं विजय पातेरहे । सब कार्योंमें आपको निश्चित सफलता मिलती रही।

कार्तिक शु. २ से ६ सम्वत् १९४७ तदनुसार ता. १४ से १८ नवम्बर तक सन् १८९० में श्री इन्द्रप्रस्थ दिल्ली में महामण्डल का तृतीय महाधिवेशन बड़े समारोह के साथ हुआ। राजा शशिशेखरेश्वर रायबहादुर, ताहिर पुर एवं महामहोपाध्याय पं. शिवकुमार जी शास्त्री काशी सभापति हुए उपदेशकों पण्डितों आदि को उपाधि एवं पदक देनेकी प्रथा पण्डितजीनेही महामण्डल द्वारा उस समय चलाई। इस अधिवेशन के बाद कई वर्ष तक शान्तिसे प्रचार होता रहा। किन्तु बड़ा उत्सव नहीं हुआ। इन दिनों पंडितजी ने सीमांत प्रदेशों में पेशावर पश्चिम में क्वेटा ब्लोचिस्थान और सिंध में सक्खर कराची तक भ्रमण कर सब जगह बलशालिनी सभाएं बना डली। जो इस समय तक बराबर काम कर रही हैं। कई सभाओंने तो इस समय सनातन धर्म्म हाईस्कूल चला रक्खे हैं।

शिमले में हिन्दू विचारके मनुष्यों के लिये कोई पवित्र स्थान नहीं था, पं. जी ने चिरकाल लगातार भाषण किया और ५००००) की लागत से एक विशाल कृष्ण मन्दिर बनवाया। वहां निरामिष भोजी सनातनी हिन्दू आनन्द से रह सक्ते हैं। वहांपर आपकी स्थापित धर्म्मसभा भी बड़ी प्रभावशालिनी है। इसी अवसर में कपूरथला और मथुराजी में प्रांतीय मंडलों के अधिवेशन धूमधाम के साथ हुए। और काशी में राजा ताहिरपुर के प्रबन्ध से महामंडलका एक असाधारण उत्सव भी हुआ। किन्तु महामन्डल का भारत वर्षीय वृहत अधिवेशन हुए देर होगई थी। लोग एक ऐसा जमाव देखने के लिये उत्सुक थे। जनताकी अभिरुचि देख पंडित जीने उस महाधिवेशन का आयोजन दिल्ली में करना ठान दिया। यह अलौकिक अपूर्व्व और अद्वितीय महाधिवेशन संवत् १९५७ की श्रावण शुक्ला १२ भाद्र कृष्णा ३ तदनुसार ८ से १३ अगस्त सन् १९०० में दिल्ली में असाधारण समारोह और सफलताके सा हुआ। मंडल का पेंडाल ऐसा विशाल सुन्दर और मनोहर बना कि वैसा कभी किसी भी कान्ग्रेस का देखने में नहीं आया। पं नमोहन मालवीय उस मंडप को देख कर उछल पडे थे, और व

प्रसन्नता प्रगट की थी। उसपर बताते हैं कि, २००००, हजार व्यय किया गया था, किन्तु पीछे सामान नीलाम करने पर बहुतसा रुपया वसूल होगया था। श्रीमान् महाराजा बहादुर दरभंगा ही उस अधिवेशन के सभापति हुए थे। और श्रीमन् महामहोपाध्याय महाराजा सर 'प्रताप नारायणसिंह' बहादुर, के. सी. आई. ई. अयोध्या नरेश कृपा कर पधारे थे। यह अधिवेशन क्या था, मानो युधिष्ठिर की सभा थी। उसे देख विज्ञ पुरुष भी कह उठे थे कि "न भूतो न भविष्यति" और वास्तव में आजतक उसके जोड़का कोई धार्मिक सम्मेलन हुआ भी नहीं। उस अधिवेशन के प्रतापसे सनातन धर्म्म के प्रतिपक्षी कांप उठे थे। और धर्म्मकी जड सुदृढ हो गई थी। उस अधिवेशन में मंडल की वेदी पर से पं० दीनदयालुजी का सिंह गर्जन जिस किसीने भी सुना, उसी के हृदय पर उनकी लोकोत्तर शक्तिका सिक्का जम गया, चारों ओर पंडितजी के जयकारे बुलाए जाने लगे, जिधर देखो उधर आपही की गुणावली की चर्चा सुन पड़ने लगी। आपके अलौकिक गुणों से आकृष्ट हो चारों ओर से अनेक सज्जन आपकी सेवामें उपस्थित होने लगे। इसी प्रवाह में निगमागम मंडली के स्वामी ज्ञानानन्द आपके पास आये, और निगमागम मंडली तथा महामंडल के एक करने का परामर्श स्थिर हुआ, पंडितजी ने पढे लिखे संन्यासी की ऐसी इच्छा सुन प्रसन्नता प्रगट की, और कुछ कार्य्य भी सौंप दिया। आप भ्रमण में चले गए। पीछे से आप के विरुद्ध. कुछ कपट जाल रचा गया। इस में वे लोग सम्मिलित थे, जिनको पंडितजी ने बोलना सिखाया और साथ में रख कर व्याख्यान की शैली सिखाई थी। अस्तु, लोगों की धोकेबाजी और छल कपट से आप बहुत खिन्न हुए धर्म्म सेवा में भी लोग कांटे बखेरने लगे। तोभी पंडितजी चाहते तो कपटी जालियों को उसी समय दमन कर डालते, किन्तु वे अधिक दिनोंसे निरंतर काम करते २ थक गए थे। इस कारण कुछ विश्रांत चाहते थ, बस आप ने महामंडल से सन् १९०२ में अपना संबन्ध अलग कर लिया और मथुरा में उसकी रजिस्ट्री कराकर निगमागम मडली क साथ उसका सम्बन्ध कर एक रजिष्टर्ड वोर्ड के हाथ में काम सौंपदिया, उस के अनन्तर आप तटस्थ रूपसे महामंडल को देखते

रहे । और जैसे बना उसकी सहायता भी करते रहे । तथा अब-तक कर रहे हैं । अब जो महामंडल की दशा है, वह सबपर प्रगट ही है ।

भारत धर्म महामंडल और सैंकड़ों सभाओं के अतिरिक्त पं. जी अनेक हाईस्कूल, विद्यालय, गोशाला, पाठशालायें स्थापन कर चुके है । आपके द्वारा स्थापित धर्म सभाओं की और पाठशालाओं हाईस्कूलों और सामान्य विद्यालयों की गणना करने मे विस्तार बहुत होगा, अतः उनके द्वारा स्थापित प्रधान २ संस्थाओं का ही उल्लेख यहां किया जाता है ।

(हिन्दू कालिज, दिल्ली) दिल्ली के हिन्दू कालिजके संस्थापकों में पंडित जी प्रधान आसनके अधिकारी हैं ।

श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय कलकत्ता । इस विद्यालय की स्थापना में पंडितजी ने जिस परम पुरुषार्थ का परिचय दिया, वह सब पर प्रगट ही है । दानवीर मारवाड़ियों के द्रव्य से ही इस विद्या-मंदिर की स्थापना हुई है । किंतु उनको उत्तेजित और प्रेरित करने में जो पंडित जी ने असाधारण परिश्रम किया, वह उन्हीं का कर्त्तव्य था । इससे पंडित जी की असीम वक्तृत्व शक्ति का पूरा परिचय मिलता है । और साथ ही मारवाड़ी जाति के साथ जो उनका स्वाभाविक स्नेह है उसका भी यह अच्छा नमूना है । इस विद्यालय की स्थापना सन १९०१ में हुई थी स्थापन काल में १५ हजार से ही कार्यारंभ हुआ था किंतु अ-ईश्वर की दया से ४ लाख रु० की लागत से विद्यालय का शानदार मकान बना है । और लाखों रुपये जमा हैं । परमात्मा करे यह क शैल कालेज का स्वरूप धारण कर मारवाडियों का हित साधन और पंडितजी का विचार पूर्ण हो । इस कार्य में स्वर्गीय पं० मा प्रसाद जी मिश्र और बालमुकुन्द जी गुप्त ने जो पंडित जी के प स्नेही थे, अपनी लेखनी द्वारा पंडित जी की उद्देश्य पूर्त्ति के । बड़ी सहायता पहुँचाई ।

'मारवाड़ी विद्यालय, बम्बई इस विद्यालय की आवश्यकता समझ सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी ने पंडितजी को मुम्बई पधारने के लिये आग्रह पूर्ण निमन्त्रण पत्र भेजा। पंडितजी ने वहाँ पधार कर अपनी ओजस्विनी भाषा से मारवाड़ी समाज पर प्रभाव डाल उन्हें विद्यालय स्थापन करने के लिये उत्तेजित किया। अन्ततो गत्वा सन् १९१२ के अन्त में विद्यालयकी स्थापना हुई। इस समय विद्यालय का भव्य भवन तैय्यार होचुका है और लगभग अढ़ाई लाख रुपया जमा है।

सनातन धर्म कालेज लाहौर। इस कालेज की स्थापनाके लिए पंडितजी कोई २० वर्ष से दृढ़संकल्प कर चुके थे। कईवार आपको इस कार्य्य के सम्पन्न करने में हतोत्साह भी होना पड़ा। परन्तु आपने अपना पवित्र विचार नहीं छोड़ा। ऐसी कौनसी वस्तु है जो पुरुषार्थके अगोचर हो। अन्ततः यह कार्य्य भी पंडितजी ने करके छोड़ा। गत १५ मई १९१६ को इस कालेजका उद्घाटन उत्सव बड़ी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। संस्कृत और एको नोमिकस की एम० ए० क्लास तक इसमें पढ़ाई होती है। विद्यार्थी संख्या सैकड़ों है स्टाफ बहुत उत्तम है।

अखिल भारत वर्षीय सनातन धर्म महासम्मेलन। गतकुम्भ के मेले पर श्री हरिद्वार में किसी भी धर्म संस्थाके धर्म प्रचार करने उद्देश पंडितजी ने महासम्मेलन द्वारा धर्म प्रचार किया। इस का दूसरा अधिवेशन श्रीमथुरा पुरी में और तीसरा लाहौर में बड़ी धूमधाम के साथ हुए। महामण्डल आदि संस्थाओं को शिथल देखकर ही शायद ऐसा करने की व्यवस्था की गई होगी। वस्तुतः इस प्रकार की एक संस्थाकी परम आवश्यकता थी, परन्तु गत प्रयाग कुम्भके अवसर पर श्री माननीय मालवीयजी की सनातन धर्म महासभा के साथ मिलकर महासम्मेलन का अधिवेशन हुआ उस समय जनता की इच्छानुसार महासम्मेलन और महासभा को मिला दिया गया। अब दोनों संस्थाएं एक हैं। मालवीयजी मंत्री हैं।

कलकत्ते के एक लिपीविस्तार परिषद की स्थापना में श्री पंडित जी का बहुत कुछ हाथ है। उसके अधिवेशन पंडितजी के ही प्रधान वक्तृत्व में हुए। किंतु खेद है, अब उसकी दशा संतोषजनक नहीं है। ऋषिकुल के ब्रह्मचर्याश्रम हरद्वार को दृढ करने और सुव्यवस्था करने में पंडित जी ने बड़ा उद्योग किया है। उसकी स्थापना के बाद से अबतक जो जो विपत्ति आई आपने वे सभी निवृत्त की ऋषिकुल के कार्य कलाप में जब कभी उथल पुथल हुई तभी पंडितजी ने बड़ी योग्यता से उसे सँभाला है। आरंभ से अबतक आप उसके आवश्यक अधिवेशनों में भाग लेते रहे हैं।

अपनी गौड़ जाति की उन्नति के कार्यों में भी आपने यथा समय समुचित भाग लिया है। श्री कुरुक्षेत्र में श्रीमती गौड महा-सभा का जो सबसे पहिला अधिवेशन हुआ था, उसमें पंडितजी मौजूद थे और गौड सभा की स्थापना और कार्य सञ्चालन के लिये सबसे पहला अपील उस समय पंडित जी ने ही किया था। तबसे अबतक आप गौड सभा के बराबर सहायक है और समय २ पर उत्सव आदि में शरीक होकर जाति सेवा का अनुराग प्रगट करते रहे हैं। भारत व्यापी आन्दोलनों में व्यग्र रहने के कारण आप अधिक समय इस सभा की ओर नहीं लगा सके। तथापि आवश्यकता पड़ने पर आपने सहर्ष अपनी जातीय सभा की सेवा करने में अपना गौरव समझा। पंडित जी के कारण गौड जाति का सर ऊंचा है और पंडित जी गौड होने के कारण अपने को परम सौभाग्य शाली मानते हैं। आपका अपनी जाति के नाम से बड़ा प्रेम है इनके अतिरिक्त काशी के हिंदू विश्व विद्यालय के आन्दोलन में भी पंडित जी ने प्रधान भाग लिया। इसके आरंभ काल से लेकर स्थापन समय तक आप सभी आवश्यक कार्यों में भाग लेते रहे हैं। अनेक स्थानों पर इसके डिपूटेशनों में भी पंडितजी शरीक हुए। आप अखिल भारतीय हिन्दू सभा की कौंसिल के उपसभापति हैं। हिंदू सभा के कामों में भी आप बड़ा हिस्सा लेते हैं। दरबार के समय श्रीमान् सम्राट और श्रीमती सम्राज्ञी से हिंदू नेता के स्वरूप में आपने भेंट की थी और उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया था। मि॰ मांटेगू के समक्ष भी आप कई डिपुटेशनों में हिंदू नेता के स्वरूप में

उपस्थित हुए पंडितजी का भारत के धार्मिक जगत पर असाधारण धार्मिक प्रभुत्व है, आपने सनातन धर्मके लिए अपूर्व परिश्रम किया, आपकी धर्म सेवा विश्वविदित है। धर्म के दुर्दिन के समय में यदि आप कमर कस कर खड़े न होते तो आज न मालूम प्राचीन प्रथाओं की क्या दशा होती यदि स्वामी दयानन्द को नई व्यवस्था की संस्थापना के कारण लूथर कहा जा सकता है तो पंडित दीनदयालु जी को प्रचीन प्रथा की पुनः प्रतिष्ठा के लिए इगनेशियस लोयोला भी अवश्य ही कहा जा सकता है। जिस प्रकार इगनेशियस की दृढ़ता ने रोमनकैथोलिक धर्म को बचाया, वैसे ही पंडित जी के अनवरत परिश्रमने सनातनधर्म की रक्षाकी, इसी कारण सनातन धर्मी जगत् आप का हृदय से आदर करता है। धार्मिक जनताही नहीं, स्वतन्त्र नरपतिगण भी आप में परम भक्ति और श्रद्धा रखते हैं। भारत के अनेक नरपतियों ने आप के भाषण श्रवण कर धर्म ज्ञान का लाभ उठाया है। आपके भाषण सुनने वाले और आपसे विशेष अभिज्ञता रखने वाले प्रधान२ राजाओं में श्रीमान गायकवाड़ बड़ोदा नरेश, महाराजा काश्मीर, महाराजा ग्वालियार, महाराज राना धौलपुर, महाराजा भरतपुर, महाराजा अलवर, महाराजा नाभा, महाराजा चम्बा महाराज राना झालावाड़, आदि स्वातन्त्र नरपतियों के नाम उल्लेख योग्य हैं। इनके अतिरिक्त भारत के बड़े२ रईस जमींदार रियासतों के मन्त्री, सेठ साहूकार आदि सब पुरुष आपके नाम पर श्रद्धा करने वाले और आपके निर्दिष्ट मार्ग पर चलने वाले हैं। उनके नाम निर्देश में बहुत विस्तार हो जायगा।

इस प्रकार पंडितजी का जीवन आश्चर्य्य, विचित्रता, अपूर्व्वता और उपदेशों की प्रचुरतासे भरपूर है। आपने प्रायः सम्पूर्ण भारत की अनेक बार परिक्रमा कर डाली है। सब ही स्थानों में आपने पर्य्यटन कर सनातन धर्म्म का विजय पटह ताड़ित किया है। रामेश्वर, जगन्नाथ, द्वारका धाम तथा पवित्र पुरियों एवं अन्य तीर्थों की यात्रा आपने पृथक् और सकुटुम्ब दोनों प्रकार से की है। हैद्राबाद दक्षिण में भी आपने तीनबार धर्म की धूम मचाई है। वहां के हिन्दू और मुसलमान आपके व्याख्यानों की मधुर भाषा और विषययोजना पर बहुत ही मुग्ध होचुके हैं। आपकी वहां एक

बड़ी शानदार सवारी निकाली गई थी, जिसमें शाही इम्पीरियल सर्विस फौज खड़ी की गई थी, और फौजी सलामी की गई थी। जो एक मुसलमान रियासत में किसी हिन्दू के लिए असाधारण और अपूर्व बात थी इसके अतिरिक्त अन्य कितनी ही देशी रियासतों में आप पधारे हैं और अपूर्व सन्मान प्राप्त किया है। आपने अपने अमूल्य समय का एक अच्छा भाग मारवाड़ी जाति के उद्धार और उन्नतिके ही अर्थ व्यय किया है। आपके इस परम उपकारको कोई भी सच्चा और समझदार मारवाड़ी भूल नहीं सकता। पंडितजी के देवोपम चरित्रकी घटनाएं एकसे एक बढ़कर हैं। पंडित जी के दो पुत्र और एक पुत्री हैं। दो लड़कियें और एक पुत्र काल कवलित हुए। बड़े पुत्र श्री हरिहर स्वरूप शास्त्री और दूसरे श्री मौलिचन्द्र शर्म्मा हैं। दोनों बी० ए० तक पढ़े हैं और धर्म-निष्ठ हैं। परमात्मासे हमारी यही विनति प्रार्थना है कि वे हमारे शिरपर पूज्य पंडित दीनदयालुजी सदृश महात्मा और महा पुरुषका अस्तित्व सदाके लिए बनाए रक्खें और यावत चन्द्रदिवाकर हम उनके अपूर्व लाभ प्रद उपदेशों से सर्व्वदा कृतार्थ होते रहें।

श्रीयुत पंडित हरिहर स्वरूप जी शर्म्मा

फाल्गुन शु० १२ रविवार को सम्वत् १९४९ को झज्जर में आपका जन्म हुआ श्रीमान् पंडित दीनदयालु जी शर्म्मा के आप प्रथम पुत्र हैं। पंडितजी ने अंगेजी के इस प्रधान युग में भी पहले आप को देववाणी संस्कृत का अध्ययन कराया। बाल्यकाल से ही पठन पाठन में आपको अभिरुचि अत्याधिक है, कुछ कालतक ओरियण्टल कालेज लाहौर में और विशेष प्राइवेट रूपसे आपने अध्ययन किया है। सन् १९११ में ३४७ नम्बर लेकर आपने पंजाब विश्व-विद्यालय की 'शास्त्री' परीक्षा पासकी और पंजाब भरमें ४ थे नम्बर पर उत्तीर्ण हुए। फिर आपको अंग्रेजी पढ़ने का भी शौक हुआ। सन् १९१३ में मैट्रिकुलेशन पास किया। अनन्तर ४ वर्ष तक धर्म-प्रचार कार्य में व्याप्त रहने से पठन क्रम छोड़ दिया, परन्तु माननीय मालवीयजी आदि मान्य नेताओं के अनुरोध से फिर अध्ययन शुरू किया और बी० ए० की परीक्षा दे डाली। आपकी विद्वत्ता और

प्रौढ लेख शैली पर प्रसन्न हो जगन्नाथ पुरी के जगद्गुरु श्री शंकराचार्य महाराज ने गत हरद्वार कुम्भ के अवसर पर आपको "विद्या भूषण" की पदवी से अलंकृत किया।

आप देववाणी संस्कृत और राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रौढ लेखक और वक्ता हैं। सर्व प्रथम हिन्दू विश्व विद्यालय के डेपुटेशन में श्रीनगर (काश्मीर) में श्री महाराजा काश्मीर और दर्भंगाधीश्वर की उपस्थिति में आपने संस्कृत में व्याख्यान दिया था वहां की पण्डित मण्डली आपके व्याख्यान पाटव से बड़ी ही मुग्ध हुई थी। उसके अनन्तर भारत भर के भ्रमण में मद्रास के पंचिअप्पा कालेज में दर्भंगा महाराज की अध्यक्षता में आपने धाराप्रवाह संस्कृत में भाषण दिया था, जिसकी मद्रास के पण्डितों ने बहुत ही प्रशंसा की थी। संस्कृत साहित्य संमेलन में भी आपने कितने ही संस्कृत लेख पढ़े और भाषण दिये हैं। हिन्दी भाषण तो आपने बहुत ही दिए हैं और बड़े २ सम्मेलनों में अपनी ओजस्विवक्तृता से श्रोताओं पर प्रभाव जमाया है।

आपने संस्कृत और हिन्दी के बहुत से पत्रों में विविध विषयों पर अनेक लेख लिखे हैं। आपने नीचे लिखे संस्कृत और हिन्दी पत्रों में लेख लिखे हैं और लिखते रहते हैं—

संस्कृत—'मञ्जु भाषिणी' काञ्ची वरम, विज्ञान चिन्तामणि, पट्टाम्पि, शारदा प्रयाग, संस्कृत रत्नाकर जयपुर, सहृदया मद्रास, आर्य प्रभा चट्टग्राम, विद्योदय, भाट पाड़ा आदि। हिन्दी–भारतमित्र, कलकत्ता समाचार, श्रीवेंकटेश्वर, अभ्युदय, भारतबन्धु, पाटलिपुत्र, हिन्दी समाचार, सरस्वती, मर्यादा, मनोरमा स्त्री दर्पण, सारस्वत, ब्रह्मचारी आदि। उर्दू के भी पत्रों में आपके लेख छपते हैं। इन भाषाओं के अतिरिक्त बंगाल, गुजराती आदि देशी भाषाओं का भी आपको अच्छा ज्ञान है।

हरद्वार कुम्भ के समय जो अखिलभारतीय सनातन धर्म महासम्मेलन गठित हुआ था उसके आप संयुक्त मंत्री रहे। दर्भंगा महाराज उसके सभापति थे। मथुरा और लाहौर के भारी अधिवेशन आपके ही प्रबन्ध से अपूर्व समारोह और भारी धूम धाम

महामहोपाध्याय रामभिश्र.

सद्धर्मप्रचारक प्रेस देहली.

गौडकुलभूषण

आयुर्वेदाचार्य पण्डित हीरालालशर्मा.

महामहोपाध्याय पंडित रामामिश्र जी शास्त्री ।

स्वर्गीय शास्त्री जी एक बड़े व्यक्ति थे आप आजन्म काशी में रहे । आप का जन्म गुड़गांव ज़िले में हुवा । आपने तुरीयमीमांसा आदि अनेक संस्कृत ग्रन्थ रचे । आपका पूर्ण चरित्र समय पर प्राप्त न हो सका ।

पंडित गरुड़ध्वज शास्त्री ।

आप कुरुक्षेत्र निवासी हैं । आपने एक ब्रह्मचर्याश्रम स्थापन कर संस्कृत का बड़ा उपकार किया है । इनका भी जीवन चरित्र समय पर न आसकने के कारण नहीं दिया जा सका ।

श्रीयुत पं० हीरालाल शर्मा वैद्यराज ।

कुरुक्षेत्र प्रान्त में निगाहु नाथ का एक ग्राम है वहीं के निवासी आप के पूर्वज थे । पं० गंगादत्त शर्मा अच्छे प्रतिष्ठित कुल के पाराशर गोत्रिय ब्राह्मण थे । आपके यजमान बुद्धसिंह जी आप को अपने साथ अम्बाला प्रान्त के 'रावलों' ग्राम में सं० १९२६ में लिवा लाये थे । आप के पुत्ररत्न सं० १९१४ चैत्र मे उत्पन्न हुवे । इनका नाम हीरालाल रक्खा गया । तब आज कल ऐसी पठन पाठन की सुव्यवस्था न थी आप के पिता जी आप को पढ़ाना लिखाना न चाहते थे परंतु आपने गुप्त रूप से उपाध्यायों से अक्षराभ्यास कर लिया और थोड़े दिन में अच्छे पंडित होगये । आपका विवाह पं० कन्हैयालाल जी के यहां खुड़े ग्राम में हुवा । इसी बीच में आपने आर्य समाज की पाठशाला अम्बाला छावनी में नौकरी करली फिर जैनपाठशाला में भी की । इसी बीच में आप के पिता जी रुग्ण हुवे तब एक वैद्य महाशय को बार २ बुलाने पर भी न आने पर आपने प्रण किया कि अब काशी जाकर आयुर्वेद पढ़ना चाहिये । इसी रोग में आपके पिता जी स्वर्गवासी होगये । फिर आपने नौकरी त्याग काशी गमन किया । स्व० वा० श्री स्वामी वसिष्ठ जी आदि

की कृपा से शीघ्र ही आयुर्वेद पढ़कर घर लौट आये । कुछ दिन श्री० पं० भीमसेन जी शर्मा से भी व्याकरणादि पढ़ा । आरम्भ में आप को ज्योतिष से बहुत प्रेम था, कई पञ्चांग बनाये और जन्म-पत्रियें बनाते रहे । एक पाठशाला भी घर पर ही खोलदी उस से अनेक विद्यार्थी पढ़ा कर पंडित किये । आपने कथायें भी खूब बांचीं । अन्त को यह सब छोड़ कर सम्वत् १९५३ मे आपने एक औषधालय खोला, जिससे अब तक सहस्रों मनुष्य स्वास्थ्य लाभ कर चुके है । आप के ४-५ पुत्र और ३-४ कन्यायें हुईं । जिन में से एक इस ग्रन्थ के लेखक तथा एक पुत्री बचे । आप बहुत ही सीधेसादे पुराने ढंग के पंडित हैं । आप बड़े मिलनसार और उदार हैं । परोपकारी और सत्यवक्ता यह गुण आप मे विशेष हैं । आचार इतना है कि हलवाई की मिठाई बाजार का घृत दुग्ध, अन्य का बनाया भोजन, ब्राह्मणेतर के हाथ का जल बीसियों वर्ष से त्याग रक्खे हैं । ३०-३१ वर्ष से आपका अग्निहोत्र व्रत निर्विघ्न चला आता है । सब शास्त्रों में आपकी गति है । सन् १९११ से आप जयपुर यूनिवर्सीटी के आचार्य शास्त्री और उपाध्याय परीक्षाओं के परीक्षक नियत हैं । आपकी पाठशाला व रसशाला से संसार को बड़ाभारी लाभ पहुंचा है । यू० पी० और पंजाब में सब से प्रथम रसप्रयोग की परिपाटी आपने ही चलाई थी । सन १९०६ में कुरुक्षेत्र में सूर्य ग्रहण पर पुराण विषय पर कोल निवासी पं० लक्ष्मीचन्द्र से विवाद होने पर 'पुराण भेद' पुस्तक बनाकर छपाई । हम ईश्वर से प्रार्थी हैं कि ऐसे परोपकारी विद्वान से शतःसमाः देश का कल्याण होता रहे ।

ले० पं० जी के शिष्य कुन्दनलाल शर्मा

वैद्यराज, करनाल ।

पंडित रामचन्द्र शर्मा बी० ए०

सद्धर्मप्रचारक प्रेस, देहली.

गौड़ महासभा व उसके कार्यकर्ता ।

ब्राह्मण जाति की अवनति इस समय में जैसी कुछ हो रही है वह सबको विदित है। ऐसे समय में सारस्वत सभा सनाढ्य महामण्डल कान्यकुब्ज महासभा आदि संस्थायें स्थापित करने का विचार हुआ और यह स्थापित हो गईं। अपनी गौड़ जाति की दशा को देखकर स्वनामधन्य पं० रामचन्द्र जी शर्मा का भी ध्यान गौड़ महासभा स्थापित करने की ओर गया।

पं० रामचन्द्र जी शर्म्मा

आप का जन्म कुरुक्षेत्र में वत्स महर्षि के गोत्र में पण्डित शिवकरण दास जी के सम्वत् १९१६ वि० कार्तिक कृष्णा सप्तमी को हुआ। आपने सन् १८८५ में बी०ए० परीक्षा उत्तीर्ण की। आप का विवाह १३ वर्ष की आयु में ही जगाधरी में हो गया था। आप के सन् १८८५ में ज्योतिप्रसाद उत्पन्न हुये। पण्डित जी के श्वसुर ने ज्योतिप्रसाद जी को अपना दत्तकपुत्र बनाया। पण्डित ज्योतिप्रसाद जी ने एम०ए० और एल०एल० बी० की परीक्षायें पास कीं। महासभा का कार्य १॥ वर्ष तक किया। खेद है ज्योतिप्रसाद जी की असामयिक मृत्यु सं०१९७२ जुलाई २१ को हो गई। पं० रामचन्द्र जी महाराज कई वर्ष तक महासभा के महामन्त्री रहे। अब भी प्रधान पद पर रह कर यदाकदा जाति सेवा करते रहते हैं

रायबहादुर श्रोत्रिय रघुवंशलाल जी एम० ए० शेशन जज
सभापति श्रीगौड़ महासभा, कुरुक्षेत्र ।

श्रोत्रियवंश के भूषण श्री० पं० बिहारीलाल जी के २७-५ ता. सम्वत १९१६ वि० को आप का जन्म बिजनौर में हुआ, आपने प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही समाप्त की । सारस्वत चन्द्रिका अमरकोश आदि संस्कृत ग्रन्थ पढ़े । अनन्तर आपने फरुखाबाद और जौनपुर (जहां कि आप के पिता जी मुन्सिफ थे) में ही स्कूल में पढ़ कर मेट्रिक परीक्षा पास की । तदनन्तर आप प्रयाग के सेन्ट्रल म्यूरि कालिज में प्रविष्ट हुए । और सन् १८८२ में बी० ए० किया । सन् १८८८ में कलकत्ता यूनिवर्सीटी का साइन्स का एम० ए० किया . दिसम्बर १८८९ में वकालत की परीक्षा पास की । १८९० में मुरादाबाद में वकालत करते रहे । आप की विद्वत्ता को गवर्नमेण्ट ने देख कर सन् १८९१ में आप को मुन्सिफ बनाया । २४ दिसम्बर सन् १९०७ तक आप मुन्सिफी करते रहे । तदनन्दर सबजज के पद पर आप मेरठ मिरजापुर और बरेली में प्रतिष्ठित रहे । इसके पश्चात आप आजमगढ़ के डिस्ट्रिक्ट और शेशन जज हुये । गवर्मेंट ने आप की सेवाओं से प्रसन्न हो कर सन १९१५ में आपको " राय बहादुर " के सर्वोच्च पद से विभूषित किया । आपने श्रीमती गौड़ महासभा में प्रारम्भ से ही योग दिया और उस की अन्तरंग सभा के प्रधान सभापति चिरकालसे रहे हैं । खेद है आपका देहान्त सन १९१८ के प्रारम्भ में ही हो गया था

गौडकुलभूषण

रायबहादुर, श्रोत्रिय रघुवंशलाल, M. A., डिस्ट्रिक्ट व सेशनजज.

रायसाहब पं० नन्दकिशोर शर्मा ।

संयुक्तप्रान्त के अलीगढ़ नामक जिले के अन्तर्गत माण्डव्य नगर (मंडू) में गौड़कुल भूषण जमदग्नि गोत्रोत्पन्न पं० चुन्नी लाल जी वकर्स इन्सपक्टर के पवित्र शरीर से ज्येष्ठ सुदी १२ संवत १९२४ के शुभ दिवस आपका जन्म हुआ । पिताने गुण कर्म और स्वभाव के तनुरूप आपका नाम नन्दकिशोर रक्खा और बाल्यावस्था ही में कामनाओं के पूर्ण करने वाले भगवान विश्वनाथ की जगत प्रसिद्ध वाराणसी की परमपवित्र भूमि में प्रारम्भिक शिक्षा प्रारम्भ कराने की अभिलाषा से बनारस लेगये और वहीं शिक्षा प्रारम्भ कराई। किशोर अवस्थामें उक्त शिक्षा पण्डितजीने क्वींस कालेजमें कुछकाल तक ग्रहणकर आगरा में समाप्त की ।

अध्ययन पूर्ण होने के पश्चात इस प्रश्न पर विचार होने लगा कि अब कौनसा मार्ग ग्रहण किया जाय ? पिता जी के सच्चे उपदेशों के भाव हृदयमें भरे हुए थे अर्थात् भारतकी उन्नतिका मूल कारण क्या ; है . क्यों संसार के अन्य देश भारत के याचक हैं, क्यों भारत अंग्रेज़ी महान् साम्राज्य का प्राण बनरहा है, भारत ने किस अद्वतीय शक्ति के द्वारा जगत के प्राणियों का प्राण बनकर अखिल भूमण्डल मे अपना सर्वोच्च पद प्राप्त किया है इत्यादि बातों पर गम्भीर विचार कर सब का एक ही उत्तर निश्चित किया गया कि इन सब का हेतु जगत् के प्राणियोंकी मात भारत वसुंधरा (पृथ्वी) है पं० नन्दकिशोर शर्मा की स्वाभाविक प्रेमलता , कृषि उन्नति के लिये पुष्पित हो उठी । आपने कानपुर के कृषीकालेज मे कृषिविद्या की शिक्षा प्राप्त करना प्रारम्भ कर कुछ ही समय में इस कालेज से फर्स्टकलास डिप्लोमा प्राप्त किया । अस्तु जिस स्थान मे थोड़े दिन भी आप का रहना हुआ वहां की कृषी की ऐसी उन्नति हो गयी कि मानो उस की काया पलट गयी , आपका अधिक समय

बुन्देलखण्ड के सराफिल की कृषि उन्नति के लिये भारत सरकारने जिला बांदा के अन्तर्गत अतर्रा नामक स्थान पर एक बृहत 'फारम' स्थापित किया था, आप को वहां का डिविजनल सुपरिण्टेण्डेण्ट नियत कर पूर्ण भार दे दिया। कृषि की उन्नति में जो कुछ वहां पर आपने किया उसका आभास श्रीवेंकटेश्वर आदि हिन्दी समाचार पत्रों में और अंग्रेज़ी पेपरों द्वारा समय समय पर जनता को मिलता रहा है। वहां के निरे मूर्ख कुपढ़ काश्तकारों को ऐसे ढंग से समझा बुझाकर शिक्षित कर दिया कि वे लोग भी अच्छी तरह से समझने लग गये कि अमरीकन कपास के बोने से क्या लाभ है तथा किस तरह की खेती से कैसा फायदा मिल सकता है इत्यादि। आसपास के रईस तालुकेदार महाजन तथा अफसर आपके सर्वप्रिय उदार चरित्र एवं उन्नति की अप्रतिम योग्ता देख प्रेमपूर्वक सन्मान करने लगे।

उपाधि—आपकी योग्यता से सरकार भी अच्छी तरह परिचित होगयी इस लिये जहां पर कोई विशेष कार्य होता आप भेजे जाते थे सन १९१०—११ में प्रयाग की सुविख्यात प्रदर्शनी हुय सरकार ने आपको इस प्रदर्शनी के कृषी विभाग का अधिकार नियत किया फल यह हुवा कि अच्छे काम करने के उपलक्ष में दिल्ली दरबाजे से आनर सार्टीफिकट दिया गया तथा। सरकार ने सन्१९१७ई० में बांदा जिले का आनरेरी मजिस्ट्रेट का मान देकर सन्१९१८ई० में रायसाहेब' की उपाधि से विभूषित किया। इसी सन् में आपकी सेवाओं से प्रसन्न हो बुंदेलखण्ड की प्रान्तीय सरकार ने एक पिस्तौल पुरस्कार रुप में देखकर अपना गुणग्राहकता का परिचय दिया एवम हिन्दूविश्व विद्यालय बनारस की प्रबन्धक समिति ने आपको इस विश्वविद्यालय के कृषि विभाग का सभासद निर्वाचित किया। इस समय उक्त श्रीमान् पं०नन्दकिशोर शर्मा

॥ ओ३म् ॥

ॐ विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परा सुव । यद्भद्रं तन्न आसुव ॥

॥ गौड़ब्राह्मण कुल भूषण ॥

श्री रायसाहब पंडित नन्दकिशोर शर्मा गौड़, आनरेरी मजिस्ट्रेट व अवसर प्राप्त डिप्टी डायरेक्टर कृषी विभाग संयुक्त प्रान्त, मेम्बर हिन्दू विश्वविद्यालय काशी (कृषी विभाग), उप सभापति श्रीमती गौड़ महासभा, मेम्बर गौड़ जिमीदारी एशोशीयेशन, मेम्बर मैनेजिंग कमेटी अखिल भारतवर्षीय गौड़ महासम्मेलन इत्यादि इत्यादि

१९१९.

कृषि विभाग के १३ जिलों के डिपटी डाइरेक्टर के पद पर कानपुर में काम कर रहे हैं।

जाति सेवा-जिस प्रकार आप की रुचि कृषि की उन्नति में है उससे अधिक परम पवित्र जाति सेवा कार्य में आप योग दिया करते हैं। प्रायः धार्मिक और खैराती संस्थाओं, अनाथालय, विधवाश्रम एवम शिक्षा और सर्वोपयोगी संस्थाओं को अपनी शक्ति के अनुसार सहायता देते रहे हैं तथा दे रहे हैं। जाति सेवा करना प्रत्येक पुरुष का कर्तव्य अथच परम पावन कार्य है। यह उद्देश सदैव आप के अन्तःकरण में विद्यमान है अस्तु सन १९१८ ई० में श्रीमती गौड़ महासभा की ओर से आप 'उपसभापति' निर्वाचित किए गए छात्रवृत्ति विनिर्णय करने वाली समिति के आप विशेष कार्य कर्ता मेम्बर हैं। हम ईश्वर से प्रार्थी हैं कि आप की उत्तरोत्तर अभिवृद्धि होती रहे।

महासभा के उपसभापति पं० हरिशङ्कर जी शास्त्री

आप एक बड़े भारी विद्वान, कई भाषाओं के ज्ञाता विलक्षण प्रतिभा व्यक्ति हैं। आप के पुत्र पण्डित शिवशंकर जी भी पिता के अनुरूप हैं। आपका कार्य बड़ा विस्तृत है। आप महासभा में योग देते रहे।

राय साहिब पं० प्रभुदयालु जी शर्मा

बी० ए० एल एल० बी

आप का जन्म औचंदी ग्राम (देहली प्रान्त) में पं० कन्हैया लाल जी के यहां हुआ। आपकी शिक्षा महासभा के आश्रय में हुई और शिक्षा समाप्ति के अनन्तर सभा की सहायता वापिस करके आपने बड़ी उदारता दिखाई। आपने महासभा में नवजीवन डाल दिया है। आपने एक और गौड़ जमींदारी एसोसियेशन बनाई है। आपके उद्योग से कुछ जिलों में ब्राह्मणों को भूमिस्वत्व भी मिलने लगा और महासमर में आपने गौड़ों की पलटनें खड़ी करवाकर बड़ी सेवा की, इस सेवा से प्रसन्न होकर गवर्नमेन्ट ने आपको "राय साहिब,, बनाया। दो बार महासभा के महामन्त्री पद पर आपने कार्य किया। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आपकी रुची उत्तरोत्तर जाति सेवा में बढ़ती है।
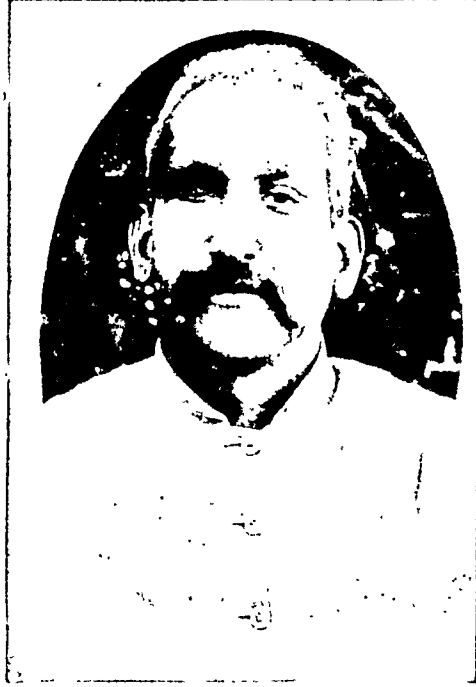
स्वर्गवासी श्रीयुत पंडित तुलसीराम स्वामी
सम्पादक वेदप्रकाश मेरठ.

पंडित हरियशरामजी शास्त्री-आप बड़े भारी नैयायिक थे और इस प्रांत में बड़े प्रतिष्ठित विद्वान् थे।

छत्रपति पंडित श्रीधरजी शास्त्री-इस प्रांत में आप की विद्वत्ता प्रसिद्ध हैं आप गौड़कुलभूषण हैं।

श्रीयुत पं० तुलसीरामजी स्वामी।

नाहन राजधानी में स्वामी वंश में पं० धर्मदास जी रहते थे तत्कालीन महाराज से दान न लेने पर वैमनस्य होजाने पर आप देववंद होते हुए परीक्षितगढ़ आकर रहने लगे। आपके पुत्र हीरामणिजी हुए। इनके स्वामी रूपलालजी हुए। इनके सेवाराम १ उत्तमचंद्र २ राधेलाल यह तीन पुत्र हुए उत्तमचंद्र जी के २ पुत्र १ पं० चिरञ्जीवलाल २ ठाकुरदास हुए। चिरञ्जीवलाल जी के वासुदेव और हजारीलाल यह दो पुत्र हुए उपर्युक्त सब विद्वान् और धर्मात्मा थे। पं० हजारीलालजी के १२ संतान होकर नष्ट होचुके थे। आपके यहां ज्येष्ठ शुक्ला ३ शुक्रवार संवत १९२४ को परीक्षितगढ़ में पुत्र रत्न उत्पन्न हुए। आपका शुभनाम तुलसीराम रक्खा गया। आपके दो वर्ष पश्चात् [सं० १९२७] में पं० छुट्टनलाल जी स्वामी का जन्म हुआ।

पं० तुलसीराम की विलक्षण बुद्धि थी बचपन से ही पढ़ने में चित्त लगता था ५ वर्ष के होनेपर अक्षराभ्यास कराया गया परंतु पिताजी मदरसे में न भेजकर अपने आपही पढ़ाया करते थे और जब कोई बूझता था कि लड़कों को मदरसे में क्यों नहीं भेजते तब यही उत्तर देते थे कि आजकल लड़कों में दुराचार की मात्रा बढ़ रही है बिन पढ़ा सदाचारी अच्छा और पढ़ा दुराचारी बुरा होता है।

पं० तुलसीराम जी के पिता शतरंज खेलने में बड़े चतुर थे इसी लिए इनकी बैठक ठाकुरद्वारे में खिलाड़ी या सीखनेवाले बहुत आते थे। एक दिन पढ़ते २ तुलसीराम ने शतरंज की ओर देखा और पिताजी ने डपटा फिर स्वयं कुछ सोचकर शतरंज घर के चबूतरे पर जो कूआ था उसमें फेंकदी। उस दिन से यह जाना कि यह शतरंज पढ़ने में विक्षेप करेगी खेलना बंद कर दिया।

९ वर्ष की अवस्था संवत् १९३३ के आषाढ़ कृष्णा ८ मी को यज्ञोपवीत हुआ उसी दिन बड़ा ब्रह्मभोज हुआ जिसमें बहुत रुपया व्यय हुआ। यज्ञोपवीत के दिन से ही १००० गायत्री नित्य जपने का नियम कराया था उस समय की प्रथा के अनुसार उसी अवस्था में विवाह भी कर दिया गया। विवाह के पत्र सर्वत्र भेजने से पूर्व १ पत्र श्री कृष्णचन्द्र भगवान के नाम लिखकर ठाकुरजी के सिंहासन पर धरा करते थे सब कार्यों में इसी प्रकार बुलाते थे कि गोलोक से आइये। गढ़मुक्तेश्वर बरात गई सानंद बरात घर आई। ९ वर्ष की अवस्था से ही पिता की आज्ञा से १००० गायत्री नित्य जपते थे नित्य प्रातः स्नान करते थे। २ घंटे गायत्री जाप्य सन्ध्या में लगाने अवश्य ही होते थे इसी प्रकार कई वर्षतक गायत्री जप किया।

पं० तुलसीराम के पढ़ाने की प्रबल इच्छा रही परन्तु गायत्री जाप्य को कहा करते थे कि जो देरी जाप में होगी उससे बुद्धि शुद्धि होगी और फिर पाठ शीघ्र याद होगा कई लक्ष गायत्री का जाप पं० तुलसीरामजी ने किया।

१९३४ संवत् का भयंकर दुर्भिक्ष आया स्वामी हजारीलाल के विद्यार्थियों को भिक्षा कम मिलने लगी तब एक सीताराम विद्यार्थी को अपने शिष्यों के ग्राम सबीसे भिक्षा का प्रबन्ध कराया।

पं० तुलसीराम जी के पढ़ाने को समय कम मिलता जान एक पं० नारायणदत्त दौताई निवासी को अपने स्थान पर रख लिया। संवत् १९३५ के चैत्र में पं० तुलसीराम ११ वर्ष के थे कि भयंकर शीतला रोगाक्रांत हुए। स्वामी हजारीलाल पुत्र स्नेह से ईश्वर प्रार्थना करते थे २० दिन के अनुमान त्वचा हीन मांस पिंड के समान राख में पड़े रहे। बहुत लोग कहते थे कि स्वामीजी आप कुछ दिन को स्नान करना छोड़दें तुम्हारे पुत्र पर परछावां पड़ा है। पंडितजी ने उत्तर दिया कि स्नान करना नित्य कर्म है सन्ध्या स्नान छोड़ने से ब्राह्मणत्व नष्ट होता है। स्नान करना अधर्म नहीं जो भगवान अप्रसन्न हों। स्वामी हजारीलाल ने हजार बार लोगों के कहने की कुछ पर्वा न की और नित्य स्नान सन्ध्या पूजा करते

रहे ईश्वर प्रार्थना रात भर भी कई दिन करते देखे गये। अधिक शोक इस बात का था कि तुलसीराम जी का विवाह होचुका था।

उस परम पिता जगरक्षक प्रभु ने सच्चे भक्त की प्रार्थना स्वीकार की और दिन २ तुलसीराम को आराम होता चला सं० १९३६ में तुलसीराम जी को कोश कुछ व्याकरण का साधारण बोध होगया। सारस्वत समाप्त होचुका चन्द्रिका रघुवंश काव्य का आरम्भ किया।

पिताजी को संतान जीवन की निराशा ने यह प्रभाव डाला था कि जो बड़े२ लिखे पुराने नये पुस्तक हैं सबको जो जिसने मांगा उसे देदिया दान कर दिया किसी को पुस्तक के साथ लोटा या वस्त्र भी कोई २ देदिया करते थे।

अब पं० तुलसीराम पढ़ने लगे और जीवन की आशा हुई तब पुनः अनेक संस्कृत के ग्रंथ संग्रह किये मोल लिये कुछ स्वयं लिखे।

संवत् १९३६ तक स्वयं व्याकरण पढ़ा कर फिर सीताराम विद्यार्थी के साथ गढ़मुक्तेश्वर में पढ़ाने के लिये पं० तुलसीदास जी को पिता जी ने भेजा और कुछ मास तक श्री पं तुलसीराम जी की माता ने भी वहां वास किया श्री पं० तुलसीराम जी की ननसाल भी गढ़मुक्तेश्वर में ही थी और सुसराल भी। संवत् १९३७ से ३९ तक ३ वर्ष वहां पं०-श्री लज्जाराम जी से पढ़े। व्याकरण काव्य में अच्छा प्रवेश था। भागवत के श्लोक महा कठिन २ पिताजी बूझा करते थे। संवत् १९३९ में छोटे भाई (छुट्टनलाल) का विवाह हुआ घर पर रहना हुआ, सम्वत् १९४० विक्रम में मवाना श्री पं० सोहन-लाल जी के पास पढ़ने गये वहां व्याकरण के ग्रन्थ पढ़े।

संवत् १९४१ में फ़ैली ग्राम में भागवत की कथा बांची जिस में -रुपया और ५ बीघा भूमि भी भेट में-प्राप्ति हुई और संवत् १९४१ में ही कुछ अंग्रेजी पढ़ने की इच्छा हुई और परीक्षितगढ़ में ही लाला ग्यासीराम पटवारी के स्थान पं० बालमुकुन्द पांडे मास्टर से ३।४ मास में ३ किताबें पढ़ली वहीं सत्यार्थप्रकाश का अवलोकन किया और वेदांगप्रकाश वेदभाष्य भूमिका देखकर आर्यसमाज की

और झुकाव हुआ संवत् १९४२ में देहरादून जाकर श्री पंडित युगलकिशोर जी आर्यसमाज की पाठशाला के अध्यापक थे। अष्टाध्यायी महाभाष्यादि उनसे पढ़ा संवत् १९४३ में जन्माष्टमी का दिन था।

परीक्षितगढ़ में पहिला व्याख्यान।

लाला घासीराम जी के विशाल सहन में हुआ इस दिन तक इस नगर निवासीयोंको कभी किसी के व्याख्यान का ज्ञान भी न था लाला घासीराम मेरठ समाजके सभासद् थे इस समय सन् १८८६ ई० था इसी सन् में लाहौर में कालिज स्थापित हुआ था कुछ दिन पीछे पुनः तुलसीराम जी देहरा पधारे और पं० दिनेशराम जी वहीं पढ़ाते थे फिर उनके पद पर भी तुलसीराम जी ने कुछ दिन काम किया।

परीक्षितगढ़ पुनः आकर फिर जन्माष्टमी के ही दिन १२।८।१८८७ को व्याख्यान हुआ और उसी दिन वहां समाज भी स्थापित हो गया और दोनों भाई समाज में नामांकित हुए।

इसी संवत् में मेरठ नगर में श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा का प्रथम संगठन हुआ।

देवनागरी स्कूल मेरठ में आगमन।

पं० तुलसीराम स्वामी उक्त स्कूल में संस्कृत टीचर हुए थे तव पिताजी ने वहुत कहा कि जो वेतन वहां मिलती है इतना हम स्वयंदेंगे तुम मेरे को भागवत सुना दिया करो मेरी अव वृद्धावस्था है परन्तु तुलसीराम जी को स्कूल में रहना ही पसन्द आया और उसी सन् ८८ में संस्कृत प्राइमर बना कर राम प्रेस लेथो मेरठ में छपाया मूल्य -) रक्खा।

संवत् १९४५ में महाराज कुचेसर के यहां मान प्राप्त किया उनके पण्डितों से शास्त्रार्थ हुआ। संवत् १९४६ में परीक्षितगढ़, मवाना, आरा, दानापुर, किरानादि अनेक नगरों में सास्त्रार्थ किये संवत् १९४७ में पिता जी का देहांत होगया। संवत् १९४८ में

श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशक हुए । प्रयाग, बनारस, मिर्ज़ापुर, आदि अनेकों नगरों में व्याख्यान दिये शास्त्रार्थ किये । सम्वत् १९५२ में बहुत बीमार रहे ।

संवत् १९५० में सरस्वती प्रेस प्रयाग में मैनेजर हुवे उस समय प्रेस उन्नति पर पहुंचा कर आर्यसिद्धान्त में लेख लिखे, विपक्षियों को उत्तर दिये, अनेकों शास्त्रार्थ किये, अनेक पुस्तक रचीं, छपाईं । संवत् १९५१ से मेरठ में स्वामी प्रेस खोला, वेदप्रकाश मासिक पत्र निकाला और भास्कर प्रकाश आदि अनेक ग्रन्थ रचे ।

श्री पं० तुलसीराम स्वामी ने जनवरी सन् १८९७ में वेदप्रकाश मासिक पत्र मेरठ से आरम्भ किया और अपना स्वामी प्रेस खोला, मासिक पत्र के लेखों ने आर्यसमाज को आकर्षित किया ।

सं० १९०१ में श्रोत्रिय शङ्करलाल का मुकद्दमा उक्त महाशय ने 'तीर्थस्नान से पाप नहीं कटते' इस पर ५००) की शर्त धरदी थी देवबन्द की मुन्सफी में मुकद्दमा चला, काशी पञ्जाब यू० पी० आदि देशों के १८ पण्डितों की गवाही मांगी गई । गवाही में सनातनी अधिक थे, पं० तुलसीराम जी एक ही आर्य थे, तो भी अदालत में पं० तुलसीराम जी के पक्ष का विश्वास कर दावा श्रोत्रिय जी के अनुकूल हुआ । आप कई वर्ष तक आर्य प्रतिनिधि सभा यू० पी० के प्रधान रहे । आर्यसमाज के पक्ष में बहुत ग्रन्थ आपने बनाये ।

सन् १९१३ के आरम्भ में श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यक्रम से असन्तुष्ट होगये उस के सुधार से निराश हुए । गुरुकुल को कांगड़ी के पीछे अंग्रेज़ी की लहर में बहता देख बहुत खिन्न हुए यत्न करने पर भी कार्यकर्त्ता नहीं माने तब वहां से त्याग पत्र देनाही उत्तम जाना अन्त में त्याग पत्र दिया सन् १५ में कुम्भ के मेले में आर्यविद्वत्सभा की ओर से वैदिकधर्म प्रचार धूम से किया १०० रावटी १ बड़ा पंडाल था ५० उपदेशक थे । तभी महाविद्यालय ज्वालापुर के मुख्याधिष्ठाता हुवे उसी के कार्यार्थ जूनमास में हरद्वार देहरा भ्रमणकर ९ जुलाई को मेरठ आये थे १२ को विशूचिका हुई १७ जुलाई को देह त्याग दिया । हाहाकार सर्वत्र मचगया । अत-

माने २०० पत्र समाजों की अन्तरंग सभा और सभाओं के आये। १ पत्रमेस्टनसाहब छोटे लाट इलाहाबाद का भी आया। अनेक पत्रों में चित्रछपे अनेक लेख काव्य वेदप्रकाश में छपे ऋग्वेदभाष्य की पूर्त्तिका संकल्प तो उनको मृत्यु तक रहा।

श्रीयुत पं० क्षेत्रपाल शर्माजी।

इनका जन्म आगरे के अंतर्गत गोंछ नाम के ग्राम में विक्रम सं० १९२७ की माघ शुक्ला प्रतिपदा को हुआ था इनके पितामह का नाम पं० हीरालाल था इनके पूज्य पिता जी का नाम चतुर्भुज जी था इनके पिता तीन भाई थे, परन्तु तीनों के बीच सन्तान केवल इनके पिता के ही भाई हैं। आदि गौड़ ब्राह्मण हैं और गोत्र मुद्गल हैं आपके छोटे भाई का नाम जयकृष्ण है यह बात बतो देना तो असंभव है कि किस संवत् में कौनसी घटना हुई है जिसे संवतसर के क्रम से बता सकूं इस लिये पं० जी से पूछने पर जो मालूम हुआ है सो लिखता हूं।

गांव की पाठशालामें आपको केवल५वीं कक्षा तक नागरी पढ़ने का समय मिला इस के उपरान्त आपके पिताजी ने संस्कृत पढ़ाने की व्यवस्था की। इसके लिये सौभाग्य वश एक सन्यासी मिल गये जिन्होंने आपको संस्कृत पढ़ाना आरम्भ किया,उनके घोर परिश्रम से आपने ६ महीने ही में लघुकौमुदी पढ़कर समाप्त करली इस के उपरान्त आपको अपने एक मित्र की सम्मति से मथुरा आनेकी इच्छा हुई। मथुरा में आपने श्रीमान् पं० उदयप्रकाश देव शर्मा जी के पास आकर अष्टाध्यायी पढ़ना आरम्भ किया साथही कुछ काव्य भी पढ़ता रहे आपके विचार आर्यसमाज केसे होने के कारण और विद्यार्थियों के साथ प्रायः अन बन रहती थी, इसी से आपको वहां का रहना छोड़कर श्रीयुत पं० भीमसेन शर्मा जी के पास प्रयाग जाना पड़ा उन दिनों वैदिक प्रेस प्रयाग ही में था, श्रीयुत पं० भीम सेन शर्मा जी उसी प्रेस में काम करते थे, उन्होंने दयानन्द विश्व-विद्यालय नाम से संस्कृत पढ़ाने के लिये एक पाठशाला खोल रखी थी उसी में जाकर पढ़ने लगा इसमें संदेह नहीं कि वहां पढ़ाने की
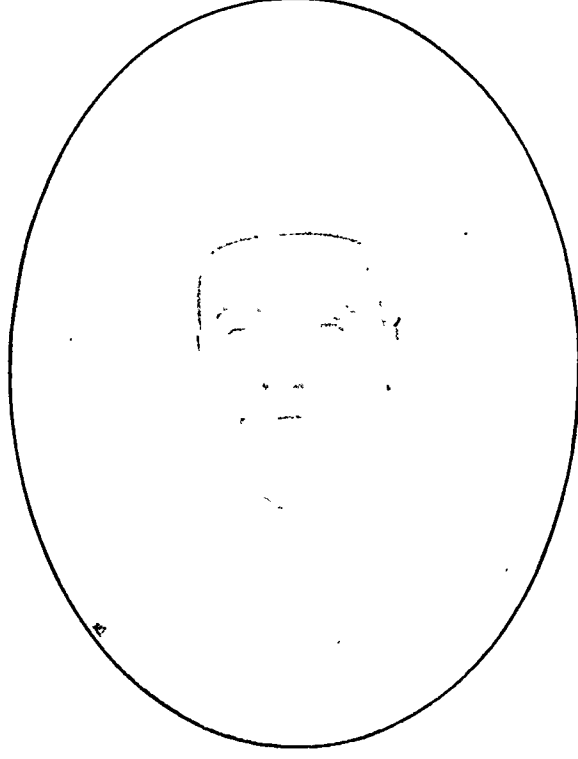
क्षेत्रपाल शर्मा, मालिक, सुखसंचारक कंपनी, मथुरा।

Art Printers, 14, College Sq. Cal.

व्यवस्था उत्तम थी अष्टाध्यायी तो प्रायः समाप्त हो ही चुकी थी महाभाष्य वहां जाकर पढ़ना आरम्भ किया था। एक पं० बलदेव प्रसाद जी रहते थे, उनको साहित्य का अच्छा ज्ञान था उनसे कादंबरी पढ़ना आरम्भ किया कादंबरी पढ़ने का फल यह हुआ कि संस्कृत के काव्य ग्रन्थों का पढ़ना मुझे बहुत सरल हो गया। साहित्य का भी ज्ञान कुछ २ उनही पण्डित जी कृपा से हो गया उक्त पण्डित जी बड़े ही परिश्रमी और सादा स्वभाव थे व्याकरण के अतिरिक्त और जो संस्कृत शिक्षा प्राप्त हुई वह उन्ही की कृपा का फल है। खेद है कि अब उनका कुछ पता विदित नहीं है। न उनकी उसके पीछे कोई खबर मिली कि कहां हैं।

इसके उपरांत आपको अपनी संस्कृत शिक्षा समाप्त करनी पड़ी आपके पिता और पितामह कर्मकांड द्वारा जीविका निर्वाह करते थे। इस कृत्य के द्वारा प्रायः दो हजार रुपये वार्षिक की आय होती थी आपको भी थोड़े दिन तक यहां कार्य करना पड़ा परन्तु सहसा आपको इस कार्य से घृणा होगई क्योंकि किसी प्रकार से क्यों न हो, हैं तो भिक्षा वृत्ति ही, जिसमें दाता लोग सब धान बारह पंसेरी के हिसाब से तोलते हैं ऐसेही कारणों से मनमें यह निश्चय किया कि घर से बिना एक पैसा भी लिये मैं उपार्जन कर सकता हूं वा नहीं। इसी बीच में आपकी माता का स्वर्गवास होजाने से घर श्मशान के समान दीखने लगा, उन दुःखों को यहां प्रकट करना आवश्यक नहीं जो आपको अपनी माता के स्वर्गवास से उठाने पड़े थे क्योंकि घर में अपनी माता के सिवाय और कोई न था अपनी छोटी बहिन श्वसुरालको जाचुकी थी इस कारण से भी अब घर में रहना अच्छा न लगा। अपने एक मित्र से (५) रुपये उधार लेकर कलकत्ते गये वहां रालि ब्रादर्स आफिस में आपके पिताजी के एक मित्र और आपके मामा रहते थे उन्हीं के पास जाकर ठहरे आपके पिताजी के मित्र ने यह समझ कर कि कहीं हमही से किसी व्यापार के लिये न कहें आपसे कहने लगे कि अब तुम पढ़ लिखकर इतने होशियार होगये हो कि रजवाड़ों में घूमकर अच्छा उपार्जन कर सकते हो। आपने उनका तात्पर्य समझकर कहा कि आपको मेरे लिये कुछ भी चिंता न करनी

पड़ेगी सिवाय इसके कि यहां आकर सोरहा करूं। आपने किया भी ऐसा ही, कलकत्ते में जाकर आपने अपना खर्च चलाने के लिये आरंभ में आर्यावर्त प्रेस में १०) मासिक की नौकरी करली परंतु कुछ महीने बीतते ही आपका कार्य देखकर मालिक ने प्रेस का सब काम आपके ऊपर छोड़ दिया, मासिक वेतन २०) रु० कर दिया इन्हीं दिनों आपने बंगला बांचने और उससे भाषान्तर करने का काम भी सीख लिया था जिससे बंग देश के विज्ञापन दाता जो नागरी में विज्ञापन छपाने को आते उनको उस प्रेस में छपाने से बड़ी सुगमता रहती, भाषान्तर सहज में होजाता इसमें आपको और प्रेस, दोनों को लाभ होने लगा; इस रीति से आपकी आमदनी ५०) रु० मासिक होने लगा तब भी अपने पास समय बहुत बच रहता इसलिये आपने सांख्य शास्त्रका पढ़ना आरंभ किया आपको प्रत्येक विद्या की उन्नति संबंधी कार्य में श्रीयुत पं० रुद्रदत्त जी ने (जो उस समय आर्यावर्त के संपादक थे) बड़ी ही कृपा और सहायता पहुंचाई इसके लिये आप उनके कृतज्ञ हैं। कलकत्ते में रहने के समय आपने सांख्य शास्त्र का भाषानुवाद अवकाश के समय में लिखना आरम्भ किया जिसको एक महाशय के साझे में छपवा कर प्रकाशित किया जिससे सब खर्च काट कर प्रायः पांच सौ रुपये का लाभ हुआ। अब आपके सब कार्यों से मिलाकर प्रायः ६०) रु० मासिक की आमदनी होगई। १-१॥ वर्ष कलकत्ते रहने के उपरांत आपको १ मास की छुट्टी लेकर अपने घर आने की इच्छा हुई एक दो दिन रहने के उपरान्त आप मथुरा आये क्योंकि पठन पाठन के निमित्त कुछ समय मथुरा रहने के कारण आपको यह बहुत प्रिय होगई थी। यहां पर कलकत्ते के एक महाशय ने साबुन बनाने और दियासलाई बनाने के नाम से एक कम्पनी खोल रखी थी जिससे बाहर के लोगों से शेयर [हिस्सों] का रुपया लेकर मौजसे उड़ाते थे परन्तु शायद दोनों चीजों में से एक को भी पूरीरीतिसे जानते न थे यह बात सम्वत् १८९० ई० की है आपको मथुरा रहना अभीष्ट है यह समझकर उन्होंने आपसे वैसी ही बातें कीं कि जिससे आप उनके यहां नौकरी करने पर राजी होगये और सब का संक्षेप यह कि जो कुछ रुपया आपके पास था वह सब

कुछतो शेयर खरीदवानेके पहले और कुछ अपने निजके लिये उधार लेकर एक दम कोरा बना दिया और भोजन मात्र तक के लिये उनका आश्रित सा होना पड़ा, तब आप अपनी इस मूर्खता पर पछताने लगे, और सोचा कि रुपये का संचय जितना कठिन है रक्षा करना उससे भी कठिन है। उनसे वसूल होने की कोई आशा न थी इसलिये झगड़ा करना व्यर्थ समझा, पास रहने से उनके बहुत से चरित्र और स्वभावों का पता लगने पर उनका संसर्ग शीघ्र ही छोड़ना निश्चय कर के साबन बनाने का काम अलग करनेका निश्चय कर अपने एक मित्र से कुछ रुपया उधार लेने गए उन्होंने सौ रुपये के अन्दाज आपको कर्ज तो दिया परन्तु साथही अपने बेकार भाई को साझी बनाकर आपके साथ भेज दिये परन्तु वह ऐसे क्षणिक वृत्ति थे कि दो तीन महीने ही में काम छोड़ कर अपने घर चले गए, इधर आप ने साबुन बनाने का कार्य आरंभ किया जिससे आप भली भांति नहीं जानते थे उन दिनों आज कल की तरह देशीय साबन की दुर्दशा न थी लोग पवित्र कों बड़े आदर और आश्चर्य की दृष्टि से देखते थे, बड़ी कठिनताओं के उपरान्त एक साधारण साबुन बनाने में समर्थ हुये और २॥ रु० मासिक लेकर का एक कमरा बाजार में किराये लेकर कार्य आरम्भ किया थोड़ी पूंजी, कोई भी दूसरा काम करने में सहायक नहीं, व्यापार सम्बन्धी ज्ञान का अभाव इन सब बातों ने आपके सामने कितनी कठिनायां उपस्थित की, उन सब का उल्लेख यहां आवश्यक नहीं है आपने अपने कार्यालय का नाम सुखसंचारक कम्पनी रखा। और आपके मित्र बाबू नन्दलाल जी बर्मा ने फ्रेंड्स एंडकम्पनी के नाम देशीय चीजें बेचने के लिये काम खोला रुपये की कमी के लिये फिर आप ने अपनी लेखनी उठाकर अनेक वस्तुओं के नुसखें संग्रह करके एक पुस्तक लिखी जिसका नाम संसार सुख रखा इस पुस्तक को लोगों ने उपयोगी समझ कर खूब पसन्द किया, इसकी आमदनी से आप को अच्छा लाभ होने लगा, जब आप स्टेशनों पर अंग्रेज सौदागरों के विज्ञापन लगे देखता तो हृदय में यही भाव होता कि क्या यह काम इन्हीं के हिस्सों में है कि हमारे देशका रुपया ये विज्ञापन द्वारा अपने देश में लेजांयगे हमारे देशका कोई इस काम को नहीं कर

सकता । साथ ही दूसरा भाव जो आपके हृदय में प्रायः आंगता रहता था वह यह कि हमारे देश के बड़े से बड़े विद्वान् सदैव द्रव्य के लिये वैश्य जाति के सामने हाथ फैलाये दीन वचन कहा कहते रहते हैं इन्हीं दो बातों ने आपको अपने कार्यमें बड़ी सफलता दिलाई थी ज्यों ज्यों लोग आपका अनुकरण करते गये, आप आगे बढ़तेगये इसी अवसर में आपने सुधासिन्धु नामक औषधि का आविष्कार किया जिसे लोगों ने बड़े आदर से ग्रहण किया ।

आपके पास एक पंडित पुरुषोत्तम नामक प्रायः आया जाया करते थे उनके सत्संग से आपको बहुत से सांसारिक अनुभव व्यवहारिक शिक्षायें मिलीं, ऐसे समय में उनके सत्संग से बडा भारी लाभ पहुंचा, उन्होंने अपने जीवन भर आप के साथ सच्चे मित्रके समान कृपा की, जिनका अभाव आपको आज भी अखरता है ।

विवाह के प्रकरण में आपने प्रतिज्ञा कर रक्खी थी कि जब तक आपके पास दस हजार रुपये की सम्पति न होजावेगी विवाह नहीं करूंगा क्यों कि धन हीन कुटुम्बियोंके कष्टोंको आप दिन रात देखते थे । परमात्मा की कृपा से वह समय आगया और आप ने अपना विवाह संभल निवासी श्रीयुत पं० रामभेजदत्त जी की पुत्री के साथ कर लिया, यद्यपि आप चाहते तो विवाह में खूब रुपया उड़ा सकते थे, परन्तु आपने एक पैसा भी व्यर्थ व्यय नहीं किया । आप अपने कार्यालय के काम को आराध्य देवके समान संपादन करते थे प्रति दिन के कार्य को पूराकरने में कभी कभी १८ घंटे तक स्वयं काम करना पड़ता परन्तु इससे आप जरा भी खिन्न वा उदास न होते थे आवश्यकता पड़ने पर ब्राह्मण के लड़कों को ही काम सिखा कर नियुक्त करते ।

विवाह होजाने से आपको घर के कार्य्यों की सुव्यवस्था के सिवाय मानसिक बड़ी भारी शान्ति मिली जिसके कारण अपने काम को और भी उत्साह के साथ करने लगे सुख संचारक नाम का एक प्रेस आपने अपने कार्य की सुगमता के लिये स्थापित किया था कार्य के बढ़ने के साथ २ उसकी भी उन्नति करते रहे, इस

समय आपके निज के प्रिंटिंग वर्क्स में इंजिन से चलनेवाली दो बड़ी मशीन हाथ से चलनेवाले हैंड प्रेस पैरसे चलनेवाले ट्रेडिल प्रेस काटने की मशीन, स्टीरियो प्लेट बनाने की मशीन आदि प्रेस का सभी आवश्यकीय सामान है इसमें आप बाहर का एक टुकड़ा भी नहीं छापते सब अपना ही विज्ञापन संबंधी काम छपता है। इसके सिवाय भारतवर्ष सीलोन आदि देश में प्रायः बाईस हजार एजेंट माल भेजने के लिये नियुक्त हैं काम की सुव्यवस्था के लिये गवर्नमेंट से निवेदन करने पर अपने ही मकान में सुख संचारक नाम का पोष्ट आफिस नियुक्त करा लिया है जिससे ग्राहकों के पास माल भेजने में सुगमता होती है प्रायः एक हजार रुपया मासिक कर्मचारियों के वेतन में खर्च होता है कई बड़े २ मकान इस काम में रुके हुये हैं।

आप इस अन्तिम प्रकरण में कुछ अपनी आत्मश्लाघा नहीं समझते और न इतनी उन्नति को ही यथेष्ट उन्नति समझते हैं क्योंकि विलायतवालों के कामके सामने यह सब कुछ भी नहीं के समान हैं, जहां सिंगर, एडीसन, बीचमस, हालवे, पियर्स, आदि सज्जनों ने अपने ही जीवन में करोड़ों रुपये उपार्जन किये हैं संसार में जिनका व्यापार प्रचरित है। लाखों मनुष्य जिनके द्वारा जीवन निर्वाह करते हैं वहां यह सब कूपमंडूक के समान मान बैठना ही है फिर भी इतना सब लिखने का प्रयोजन अपने उन ब्राह्मण भाइयों को सावधान करने के सिवाय और कुछ नहीं है जिनके मातापिता धनवान होने पर भी अपनी संतान को कहीं नौकर करा देने को ही परम पुरुषार्थ समझते हैं, अथवा पेट भर रोटी मिलने ही से इतरा जाते हैं और भांति २ के शौक लगाकर जीवन को मिट्टी में मिलाते हैं तथा भाग्य और समय को रोया करते हैं उनको उचित है कि "सत्यश्रमाभ्यां सकलार्थ सिद्धिः" इस मूलमंत्र को सामने रख कर कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण हों औरों से मांगने की तो बात ही क्या है "मांगना भलो न बाप को" इस कहावत के तत्त्व को समझें जो ब्राह्मण जाति आज भी सब वर्णों को आरंभिक शिक्षा करती है उसी की निज की सन्तान मूर्ख रहे जिनके पढ़ाये वैश्य लखपति

करोड़पति बने और लाखों रुपये धर्मार्थ कामों में खर्च करदें उसी समुदाय के लोग रसोइया, पुजारी और पानी पांडे बनकर जीवन निर्वाह करते हैं यह देखकर आपका दिल बुरी तरह जलने लगता है जो ब्राह्मण होकर भिक्षावृत्ति और मांगने को अथवा पुस्तैनीधर्म बताता है उससे आपको बात करने में भी संकोच होता है और ऐसे मंगतों को आप कभी आदर नहीं देते।

इस समय आपकी आयु ४५ वर्ष की है आपके ३ कन्यायें और दो पुत्र हैं आपकी संसार यात्रा और गृह प्रबंध में आपको स्त्री से जैसा सुख और शांति मिलरही है वैसी सुख शांति के अधिकारी शायद विरले ही हो सकते होंगे जिसका कि होना मनुष्य जीवन के लिये आवश्यक है।

अब अपने ब्राह्मण भाइयों से यह निवेदन करताहूं और इस लेख को समाप्त करता हूं कि वह भिक्षावृत्ति को छोड़कर अपनी संन्तान को किसी भी व्यापार में लगावें अब भी छोटी पूंजी और अधिक परिश्रम से करने को बहुत काम पड़े हैं।
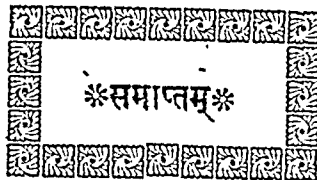
'चौरासिया' कुलभूषण

महामहोपाध्याय पण्डित दुर्गाप्रसादशास्त्री.

चौरासिया भेद ।

यह जाति राजपूताने में है। इतिहासज्ञ कहते हैं, अकबर बादशाह ने इनको ८४ ग्राम माफी में दिये थे। उसी नाम से इनका नाम चौरासिया हुआ।

श्रीयुत महामहोपाध्याय पं० दुर्गाप्रसादजी।

काश्मीराधिपति के राज पण्डित ब्रजलाल जी जम्बू में रहते थे। आप काश्मीर नरेश की सभाके रत्न थे। राज्य में उच्च प्रतिष्ठित थे। आप के कार्तिक सुदी प्रतिपदा सोमवार सम्वत् १६०३ वि० को पुत्ररत्न उत्पन्न हुवा। आप का शुभनाम दुर्गाप्रसाद रक्खा गया। काश्मीर महाराज श्री रणवीर सिंह जी के पुत्र महाराज गुलाब सिंह जी तथा पिता जी के अनुशासन में ५ वर्ष की अवस्था से शिक्षा प्रारम्भ हुई। वर्तमान महाराज मही महेन्द्र काश्मीराधिप श्री १०८ सर प्रताप सिंह जी वर्मा के अध्यापक पण्डित सोमनाथ जी से आप पढ़ते रहे। पिताजी से भी कुछ २ पढ़ा। इन्हीं दिनों में ज्योतिर्विद्यापारङ्गत पण्डित देवकृष्ण जी काशी से महाराज ने बुलाये थे। पं० दुर्गाप्रसाद जी ने इन से गणित पढ़ी। महाराज कुमार के साथ अत्यन्त प्रीति होने के कारण साथ २ क्रीडा करते हुवे इंगलिश भी कुछ २ पढ़ते रहे।

इन नवीन पण्डित जी पर सुशीलादि गुणवाली महाराजा रणवीर सिंहजी की महारानी (वर्तमान महाराजाधिराज की माता) बड़ा ही अनुग्रह रखती थीं और इन्हें अपने कुमारों के समतुल्य समझती थीं, जब इनको विद्या में गति होने लगी तो उक्त महारानी साहेबा ने इन से स्तोत्र पाठ पूजादि सुना इस समय इन की १६ सतरह वर्ष की अवस्था थी बड़े आनन्द पूर्वक अध्ययन किया करते थे और यज्ञोपवीत तथा विवाह संस्कार भी इन के हो चुके थे।

अब इस समय से इन पर, जिस ने दुःख का नाम भी नहीं सुना था एक साथ आपत्तियां पड़ीं और बहुत काल तक बनी रहीं। सच पूछो तो उस सुख का अनुभव, मरने के वर्ष दो वर्ष पहले ही हुआ होगा जो उन्होंने निःसंदेह अपने बालकपन में भोगा था।

इस १६ वर्ष की अवस्था में इनके पिता का परलोक होगया और उन का परलोक होना इस युवा पुरुष की दुःख श्रेणी का आरम्भ होना हुआ।

अपने पिता के मृत्यु शोक और विरह में ये जम्बू के अनेक प्रदेशों में घूमते रहे अन्त में महाराजा रणवीर सिंह जी की शीतल छाया में आकर फिर अपने पिता की नाईं आनन्दपूर्वक रहने लगे। उक्त महाराजाधिराज ने इन को दो तीन बार अपने साथ काश्मीर भूमि की सैर कराई और दर्शनीय प्रदेशों को भली प्रकार दिखाया। इस समय इनकी अवस्था भी २० वर्ष के लग भग पहुंच चुकी थी। इस लिये इस यात्रा में इन्हों ने हर एक पदार्थ को बड़े विचार पूर्वक देखा—इस कश्मीर को कवियों की जन्म-भूमि जान कर उन्होंने अपने भविष्यत् काव्यों की माला के लिये हर एक मनोहारी तथा सुगन्धित पुष्पधारी काव्यरूप लताओं के आश्रय कवि-कानन इस विचार से चीन्हना आरम्भ किया कि जब माला बनाने की इच्छा होगी तब इन २ बल्लियों से इस २ पुष्प को ले लेंगे सो वास्तव में उन्होंने काव्यमाला प्रकाश करते हुवे उस भूमि से बहुत से ग्रन्थ मंगाये और इसको पाठकगण भी जानते होंगे कि इन कश्मीरी पुष्पों ने इस माला में कैसी शोभा दी है। इन पण्डित जी ने अभिनव गुप्त सम्प्रदायानुगत अभिज्ञादर्शन का भी अभ्यास किया था। यद्यपि इन दिनों इन के चित्त को कुछ २ शान्ति होती जाती थी, परन्तु दैव का कोप अभी तक बना हुआ था, अब इनकी पत्नी का शरीर कालवश से छूट गया और कुछ दिनों पश्चात् इनके कनिष्ठ भ्राता ने भी उसी मार्ग की राह ली। अब केवल ये दोनों मा बेटे

रह गये । इस नवीन विरह से खिन्न हुवे महाराजा साहब से बिना आज्ञा लिये ही पहाड़ों और जंगलों में घूमते घूमते अमरनाथ (जो कश्मीर प्रान्त में अमरावती नदी के तट पर है) में पहुंचे और वहां दो तीन दिनों तक पाठ पूजा करते रहे । वहां से लौट आने पर कुछ चित्त की स्थिरता हुई । *

कश्मीर त्याग ।

परन्तु इन सब बारम्बार के क्लेशों से दोनों मा बेटों का चित्त कश्मीर से ऐसा उचट गया था और नित्य इसी विचार में रहते थे कि यहां से कब चलें । सत्य है जब उत्तमोत्तम देश में भी आपत्ति आने लगती है तो वही भयंकर प्रतीत होने लगता है । इस शोक दशा में अपने पूर्वजों के ग्राम हमजापुर आने का विचार किया और इसी निमित्त महाराजाधिराज से कई मास के लिये आज्ञा ली । चलते समय इन्होंने अपनी सब गृह सामग्री अपने साथ ली और कश्मीर उलटा आने का विचार दूर कर दिया । मार्ग में जालन्धर पीठ देवता की स्तुति की यह वही स्थल है जहां इनके पिता जी ने तपस्या की थी । वहां पर पण्डित कालीदत्त जी कूर्म्माचली ब्राह्मण से मिले । इन से इनके पिताने इनका उपनयन संस्कार करवाया था । अगले दिन वहां से कुछ ब्राह्मण भोजनादि कराके चले कई दिनों में हमजापुर आ पहुंचे ।

अपने पूर्वजों के ग्राम में आकर वर्ष भर के लग भग वास किया । इन की माता बड़ी बुद्धिमती और धर्मात्मा थीं (जैसा वे स्पष्ट कहा करते थे ।) इसी अवसर में इन का दूसरा विवाह भी हो गया था ।

* वहां पर पण्डित जी ने स्रग्धरा छन्दमें सात आठ श्लोकों से अमरनाथ की स्तुति की थी ।

जयपुर आना।

इन दिनों जयपुर के महाराजाधिराज सवाई श्री रामसिंह जी की उदारता तथा गुणग्राहकता देश देशान्तरों में प्रसिद्ध हो रही थी। और हमजापुर ग्राम निकट होने के कारण इन युवा विद्वान् के कानों में प्रतापी नरेन्द्र के यश शब्द की ध्वनि वार २ पहुंचती थी। ये भी जो जन्म से राज्याश्रित रहे थे यही सोचा करते थे कि कश्मीर जाना ठीक नहीं, परन्तु राज्याश्रय के विना रहना भी अच्छा नहीं। सत्य है "अनाश्रया न शोभन्ते पण्डिता वनिता लताः"

इसलिये जब इन की अवस्था पच्चीस छब्बीस वर्ष के लग भग थी उस यशस्वी महाराज की छाया में आश्रय लेने के लिये जयपुर चले।

इन महाराजा साहब ने ऐसे बड़े ज्योतिर्वी का पुत्र और ज्योतिषशास्त्र में निपुण जान इन को ज्योतिषियों में ६०) मासिक का पण्डित कर दिया। महाराजा साहब इन पर बड़ा अनुग्रह करते थे। जो सुख इन्होंने बचपन में भोगे थे मानो उन के अंकुर फिर दूसरी वार उगते हुये दीखे। और पीछे २ तो उन अंकुरों के वृक्ष तथा पुष्प भी, और तो क्या कोई २ फल तक भी देख लिये। परन्तु शोक है कि जब फल पक कर तय्यार हुवे तो उस बोने वाले की यहाँ से बदली होगई।

पण्डित जी का जयपुर में रहने का कुछ हाल यहां पर लिखते हैं—ये बड़े सीधे साधे रहा करते थे। मैत्री इन की बड़ी सच्ची थी जिस को सब सज्जन इष्ट मित्र जानते हैं। व्यवहार बड़ा ही स्वच्छ था और लौकिक कार्यों का चातुर्य बहुत ही बढ़ा हुआ था जिस किसी ने किसी विषय में इन की अनुमति ली उसने इनके शब्दों को पूरा और सच्चा पाया। इन की विद्या में पूरी रुची थी इसी लिये इन दिनों में बहुधा जयपुर पबलिक लाइब्रेरी Jeypore

Public Library में ये मिलते । ये पण्डित जी ज्योतिष तथा साहित्य में बड़े निपुण थे इन्हीं विषयों के विद्यार्थी भी इन के पास पढ़ा करते थे। इन्होंने श्रीमन्महाराजाधिराज की अनुमति से अपनी माता और गृहिणी सहित बद्रीनारायण की यात्रा के लिये प्रस्थान किया । मार्ग में हरिद्वार हृषीकेश, देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, केदारनाथादि स्थलों में विचरते हुये बद्रीनारायण पहुंचे वहां चार पांच दिन ठहरकर यथोचित पूजादि क्रिया करके सजल पर्वत और निर्झरों को देखते हुवे जयपुर आये ।

महाराजा रामसिंह जी इन दिनों जब कलकत्ते में Vice roy वाइसराय से मिलने को पधारे तो इनको भी अपने साथ लेगये। वहाँ पर इनके पहिले रक्षक महाराजा रणवीरसिंह जी और महाराजा रामसिंह जी से भेंट हुई।

इस समय कश्मीर के महाराज ने इन पण्डित जी को देखकर बड़ा क्रोध प्रकाश किया और यह फरमाया कि तुम जम्बू से क्यों चले आये (यह स्वयं पण्डित जी कहा करते थे)। इन दिनों जयपुर में वे अपने मित्र मंडल में बड़े आनन्दपूर्वक रहा करते थे, परन्तु एक चिन्ता इन को सदा बनी रहती थी । वह यह कि इनको कुछ ऋण था जिस के उद्धार के लिये उपाय सोचा करते थे । इस निमित्त पहिले पहल इन्होंने कुछ संस्कृत के ग्रंथों की भाषा मुन्शी नवलकिशोर C. I. E. रईस लखनऊके यन्त्रालय में छपाना आरम्भ किया ।

फिर एक दिन अकस्मात् उक्त पबलिक लाइब्रेरी (Public Library) में * डाक्टर पी०पीटर्सन साहब प्रोफेसर एलफिन्स्टोन

* डा० पी० पीटर्सन ने वल्लभदेव की सुभाषितावली की भूमिका के प्रारम्भ में जयपुर यात्रा के वर्णन प्रसंग में यों लिखा है:—

I Was considering Whether I had not better

कालिज मुम्बई से भेंट हुई। ये डाक्टर महाशय जयपुर में पुस्तकान्वेषण के लिये आये थे। इस समय इन पण्डित जी को तो यह आवश्यकता थी कि कोई आजकल की रीति भांति का विद्वान् मिले तो कुछ विद्या से लाभ उठावें। और इन डाक्टर साहबको यह इच्छा थी की कोई सर्व विषयदर्शी पण्डित मिले तो कुछ काम करें। ईश्वर की कृपा से दोनों का वाञ्छित संयोग होगया। और तत्काल ही दोनों में ऐसी दृढ़ प्रीति होगई जैसी भाइयों में होती है। सत्य है "मैत्री स्याद्दर्शनात्सताम्"।

अब इन दोनों मित्रों ने मिलकर सुभाषितावली नामक ग्रन्थ प्रकट किया। दिन दिन परस्पर प्रीति बढ़ने लगी, यहां तक स्नेह हुआ कि उक्त डाक्टर महाशय ने इन को पुस्तकान्वेषण प्रसङ्ग से द्रविड़, कर्णाट, तैलङ्ग, महाराष्ट्र, गुजरात इन प्रदेशों की सैर कराई, इन पण्डित जी ने स्वयं तीर्थादि निमित्त से अङ्ग, वङ्ग, कलिङ्ग, मगधादि भी भली प्रकार से देखे थे।

अब ये पण्डित जी बहुत से भारत के प्रदेशों को देख चुके थे और स्थल २ में बहुत से विद्वानों से परिचय कर चुके थे।

Make a virtue of neeessity and. leave Jeypore to revisit the placo under better aecspices. When some good fortuneled me to the public. Librory Dhere Was no one in the room but a young scholor who was reading, as I could see a volume of the Benores Pondit Ipluekedup'caurage and samskritam asritya (संस्कृत माश्रित्य) introdu ceed myself to him as a fellow stuadent.

जयपुर में आकर कश्मीरी वाटिका तथा और २ देशों के पुष्प जो इन्होंने अपनी यात्राओं के समय संग्रह लिये थे याद आये। इसी से इन्होंने सन् १८८६ ईस्वी में उस मनोहर जगद्विख्यात माला का वनाना आरम्भ किया, जिसकी प्रशंसा वहुत से विद्वानों ने की है। और इसके ग्राहकों को तो प्रत्यक्ष ही है। इसके देखने से ही जाना जाता है कि किस २ देश के कवि पुष्पों की लपट आरही है। यह ग्रन्थ माला सेठ जावजी दादाजी चौधरी अधिपति निर्णयसागर, तथा पण्डित काशीनाथ पांडुरंग पर्व की सहायता से प्रकट होने लगी। इस काव्यमाला का आरम्भ होना मानों उनके सुखकी सामग्री होना था। इस समय इनके एक पुत्र हुआ, और दो कन्या थीं। इस समय से दो तीन वर्ष के परिश्रम से इन्हों ने अपने ऋणादि सब चिन्ताओं को मिटा दिया। इस काव्यमाला के प्रसङ्ग से इनके परिश्रम का भी कुछ हाल देना उचित दीख पड़ता है।

वहुत प्रातःकाल उठते और स्नान ध्यानादि से निवृत्त होकर चाय पीकर काव्यमाला का कार्य आरम्भ कर देते और इसको १०। ११ वजे तक करते। उनको मित्र मण्डल तथा शिष्यवर्ग में इतनी रुची थी कि जो कोई इस समय मिलने तथा पढ़ने को आता तो प्रसन्नतापूर्वक मिलते तथा पढ़ाते। ११ वजे के लग भग लेटे हुये वा टहलते हुये समाचार पत्र वा कोई नवीन छपी हुई पुस्तक को देखते। फिर एक वजे से अपना लेखन शोधन का कार्य तीन वजे तक करते। और फिर ४ वजे संध्या के मित्र मण्डल के मेल चेल के लिये और भ्रमणार्थ घर से चलते। घर आने पर संध्यादि कर्म कर भोजन करते। इसके पश्चात् अर्धरात्रि पर्य्यन्त काव्यमाला में लगाने के लिये ग्रन्थों को देखते और उस समय कभी २ पढ़ाया भी करते थे, परन्तु रात्रि को कभी नहीं लिखते थे और यही कहा करते थे कि रात्रि का लिखना ठीक नहीं।

इस उक्त परिश्रम को केवल काव्यमाला के लिये ही नहीं खर्च करते थे, परन्तु और भी पुस्तक शोधकर छपाने के लिये तय्यार करते थे। सुभाषितावली, कथासरित्सागर कामसूत्रादि बहुत से पुस्तक इसी परिश्रम के भाग में से प्रकाशित किये हैं, इन पण्डित जी ने शारदातिलक की एक टीका भी बनाई है। परन्तु वह छपी नहीं।

अब इनकी ख्याति दूर जगह होने लग गई थी। सन् १८८९-९० तथा ९१ में पञ्जाब यूनीवर्सिटी (Panjab University) के परीक्षक हुये। इस पिछली साल में इन्हों ने अपना कीर्त्तिस्तम्भ अपने ग्राम हसनपुरमें एक शिवालय, कूप, और एक गृह बनवाया और इनके स्थापन तथा प्रवेश में एक अच्छा उत्सव किया। इन्हीं दिनों जयपुर में कवि गुरुदयाल जी के पुत्र श्यामनाथ तिवारी जी ने एक स्थान एक वर्ष भर की सामिग्री के साथ दिया जिसको इन्होंने तुड़ा फुड़ाकर उत्तम बनवा लिया। इस नवीन स्थानमें एक संस्कृत प्राचीनत्ववर्द्धिनी सभा होती थी जिसमें बहुधा विद्वान् और विद्यार्थी लोग आया करते थे। और अनेक विषयों पर व्याख्यान संस्कृत में होते थे। इसका उद्देश्य संस्कृत में प्रगल्भता बढ़ाने का था। और विशेष कर विद्यार्थियों के लिये यह बहुत लाभदायक समझी गई थी। यह एक अच्छासा समागम विद्वानों का प्रतिपक्ष होता था।

इस समय तक इन पण्डितवर की कीर्त्ति यूरोप और अमेरिका के विद्वानों के श्रोत्रगत हो चुकी थी। और जगह २ से प्रशंसा की ध्वनि सुनने में आती थी। अन्तमें यह ध्वनि गवर्नमेंट (Government of India) के कानों में भी पहुंची और इसी लिये सरकार से इनको महामहोपाध्याय की उपाधि मिलने का विचार हुआ, परन्तु श्री महाराणी विक्टोरिया के जन्मोत्सव Empress Victoria के ३ मास अवशिष्ट थे। यह सब

वृत्तान्त इन पण्डित जी को तीन मास पहिले ही एक मित्र के पत्र द्वारा विदित हो चुका था।

इन्हीं दिनों काल महाराज विसूचिका का अवतार धारण किये हुये आर्यावर्त्त में हरिद्वार के मार्ग होकर धूम शकटी पर सवार यात्री रूपी दूतों के द्वारा अपने दुष्टागमन का संदेशा नगर २ तथा ग्राम २ में भेज रहे थे। इधर से इन पण्डितजी की कीर्त्ति शनैः २ अपने नियत स्टेशन विक्टोरिया जुब्ली हलव पर पहुंचने को थी कि उधर से करालकाल दूतों द्वारा सूचना भेजता २ अपनी तीक्ष्ण गति से इन के ग्राम हमजापुर में आ पहुंचा। यह हम पूर्व लिख चुके हैं कि पण्डित जी के दो कन्या और एक पुत्र था। परन्तु इसी साल में एक कन्या और भी जन्मी थी।

इस दुष्ट रोग में पहिले उनकी दोनों बड़ी लड़की ग्रस्त हुईं। यह देख पण्डितानी जी ने तार द्वारा जयपुर में सूचना दी और यह भी लिखा कि आप शीघ्र आवें। यह तार १३ मई को उन्हें जयपुर में मिला। उनका यह नियम था जब कभी कहीं जाते तो अपने निज मित्रों को सूचना देते और बिना मिले न जाते। परन्तु यह समय मृत्यु का भेजा हुआ ऐसा अचानक और शीघ्र आया कि किसी से न मिल सके तत्काल ही ५ बजे संध्या की गाड़ी में सवार हो अपने ग्राम अगले दिन जा पहुंचे वहां आकर दोनों कन्या-ओं को शान्त पाया और उसी भयंकर शत्रु से पुत्र को भी ग्रस्त देखा।

जयपुर से ये अपने साथ कैम्फर (Campher) की शीशी ले गये थे जिससे ईश्वर की कृपा से उनके पुत्र को आराम हुआ और ग्रामके भी कई रोगियों को इस दुष्ट शत्रु से बचाया। इन्होंने जयपुर में यह पत्र भेजा कि कन्या दोनों शान्त हो गईं परन्तु परमात्मा के अनुग्रह से केदारनाथ को लघुशंका खुलकर आया है और आशा शीघ्र आराम की है। वहां जाने पर केवल यही एक पत्र आया, जब

इस प्रवल शत्रु ने देखा कि मेरी गति को रोकने वाला यह कहां से आया तो इन स्वयं पण्डित जी पर अपना आवेश चढ़ाया ।

शोक ! शोक ! शोक ! कि ऐसे बुद्धिमान पण्डित को जो एक बड़े मित्र मण्डल के प्रिय थे उस एकान्त ग्राम में इस दुष्ट रोग ने आ दवाया ।

यह रोग उनके दो रोज रहा कैम्फर आदि सव उपाय यथा सामर्थ्य किये गये । अन्त में १८ मई को इस असार संसार से मित्र मण्डल तथा शिष्यवर्ग को अश्रुपात कराते हुये परलोक सिधारे ।

जयपुर इस शोक दायक समाचार की सूचना दो सप्ताह तक नहीं हुई । अनेक पत्र उनके पते से भेजे गये कि जिनके पास कोई डाक पहुंचने में समर्थ न थी । फिर दो पुरुष इसी शोक के पश्चात् भेजे गये । परन्तु कोई हाल न मिला । अन्त में पण्डितानी जी द्वादशाह आदि कर्म कराके जयपुर आयीं । और उनके मित्रों के लिये जो चातक के नाईं उनके वर्षारूपी प्रिय भाषण की वाट देख रहे थे । यह समाचार लाईं कि अव वह वर्षा कभी नहीं वरसेगी । पाठक लोग जान सकते हैं कि उन विचारे प्रतीक्षा में लगे हुये चातकों की क्या दशा हुई होगी । कोई तो रो २ कर थक गये कोई शोक वाहुल्य से रो न सके भीतर ही भीतर घुट गये । वास्तव में ऐसे पुरुष की मृत्यु त्यागियों को भी सहन करा देती है ।

२४ में के 'वर्थ डे ओनर्स गज़ट, में शनैः शनैः चलती हुई वह महामहोपाध्याय की उपाधि भी आ पहुंची । किन्तु उन मित्रों को जो उस उपाधिधारी के दर्शनेच्छु हो रहे थे और नित्य उत्सव करने के विचार से लगे रहते थे वह उपाधि का प्रकट होना कुछ हर्ष न दे सका । शोक यह किसी को विदित न था कि उनको वड़ी सर्कार से सव व्याधियों के मिटाने वाली वड़ी उपाधि प्राप्त होगई है।

सब भद्र पुरुषों ने धैर्य धारण कर उनके कार्यों की। स्थिति पर विचार किया उन की स्त्री तथा पुत्र को हर प्रकार का आश्वासन कराया। शोक करना वृथा जाना सो सत्य ही है।

"जातस्य हिं ध्रुवो मृत्यु ध्रुंव जन्म मृतस्यच ।

उनके इष्ट मित्रों को सूचनार्थ यत्र तत्र पत्र भेजे। और उनके कामों को चलता रहने के उपाय सोचे। इस समय इस भयंकर समाचार का एक पत्र इन के मित्र डाक्टर पिटर्सन साहब के पास भी भेजा गया। उसके उत्तर में जो उक्त डाक्टर महाशय ने-पत्र लिखा सो उन के लिये यह भाई की मृत्यु समान शोक दर्शाता था। और यदि पण्डितानी जी तथा उन के पुत्र केदारनाथ के लिये बड़ा आश्वासन लिखा कि मैं हर प्रकार से तुमको सहायता दूंगा और जो कार्य मेरे मित्र का मुझे करने को कहोगे सो भी बड़ी प्रीति के साथ करूंगा वास्तव में उन्होंने अपनी सच्ची मित्रता का कई प्रकार से उदारण भी दिखला दिया। सा० बहादुर ने राजतरंगिणी की (जिसके छपाने की आज्ञा बम्बई गवर्नमेंट ने दे दी थी और कुछ थोड़ी सी छप भी गई थी) पुस्तकें मंगाले और यह कहा कि यह मैं तय्यार करदूंगा।

इधर जयपुर में इनके मित्र और शिष्यों ने और २ काम बाँट लिये। इन ही लोगों में से महामहोपाध्याय पण्डित शिवदत्त जी वर्तमानमें सुपरेण्टेण्डेण्ट ओरियण्टल कालेज लाहोरने काव्यमाला का कार्य चलाया। और बड़ी उत्तमता एवं प्रीतिके साथ किया।

अब देखिये बड़ों की बड़ाई।

मित्र लोग तो अपने मित्र की शुभ इच्छाओं को पीछे से पूर्ण करने में प्रवृत्त थे ही उधरसे हमारे धर्मवीर प्रतापी महाराज श्री १०८ श्री सवाई माधवसिंह जी देव बहादुर (वर्तमान जयपुराधीश) ने, तथा उनके पूर्ण विश्वास भाजन राव बहादुर बाबू

कान्तिचन्द्र मुकर्जीने (जो दोनों इन्द्र और बृहस्पतिकी समानता में प्रसिद्ध हैं) पण्डितजी के कुटुम्ब का भरण पोषणका प्रबन्ध उत्तम रूपसे किया । और बालक को शिक्षा दिलाने की आज्ञा हुई । और यह भी कि प्राप्त वयस्क होने पर योग्य कार्य दिया जाय । धन्य है यह जयपुरनगर जहां के सर्वमान्य कृपालु राजा इस प्रकार के विवेकी हैं ।

उक्त पण्डितजी के चिरंजीव और हमारे अनन्य हृदय परममित्र पं० केदारनाथजी M, R. A. S. महाराजा जयपुरके राजपण्डितों में हैं और काव्यमाला का सम्पादन करते हैं । महाराज मही महेन्द्र काश्मीराधीश नेभी प्राचीन सम्बन्ध के कारण प्रशस्ति श्लोक, एवं राजतरङ्गणी के प्रकाशन से प्रसन्न होकर जम्बू राज्य से अच्छा सन्मान किया है ।
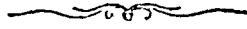
गौड़ों के अन्य विभेद ।

पुष्कर ब्राह्मण सिंध और मारवाड़ में हैं । पुष्कर क्षेत्र जो अजमेर के पास है वहां रहने से नाम पड़ा । इनके गोत्र भी श्री मालियों के समान नहीं हैं । शायद राजा पुंज के समय में ही इनको अन्य देशों से बुलाया गया था, संख्या इनकी ५०००० थी । इनके कुछ शासनों का वृत्तान्त नीचे दिया जाता है ।

(अ) व्यास—चत्ताणी व्यास ।

व्यासों के अनेक कुलों में चत्ताणी व्यास प्रसिद्ध हैं इनके पूर्व पुरुष चत्ता जी १६०० संवत् विक्रमीय के लगभग हुवे हैं तब से इनका नाम उनके नाम पर हुवा ।

(आ) नाथावत व्यास ।

नाथा जी सूरसिंह जी के मन्त्री थे । इन्होंने अपनी जाति के

हित के अनेक कार्य किये। इन्होंने थान देकर अपने पास मारवाड़ में एकवार ब्राह्मणों को रख लिया था मालवे नहीं जाने दिया। इनकी आयु केवल ३२ वरस की हुई। प्यासों को आचारज वहुत तंग किया करते थे। नाथाजी ने सहस्रों रुपये देकर इनको प्रसन्न किया। और अपनी व्यवस्था वांध दी।

(इ) गिरधरोत व्यास।

गिरधरजी राव अमर सिंह जी के नौकर थे आगरे की लड़ाई में सम्वत् १७०१ श्रावण शुक्ला ३ को मारे गये दाह कर्म अवकाश न होने से न हुवा गाड़े गये तव से ये पुजने लगे। ३ श्रा० शु० को इनके यहां शोक होता है।

[ई] पुरोहित।

इनके कई वंश हैं प्रसिद्ध श्री पुरोहित हैं। इनके पूर्व पुरुष जयदेव ने श्री महाराज अजीतसिंह का पालन किया था, महाराजा जव मारवाड़ के राज्याधिकारी हुवे तो उन्होंने जयदेवजी के पुत्र जग्गू को श्री पुरोहित की पदवी दी। इसी से अव तक इनको सन्तान राटौड़ कहलाती है। महाराज अजीतसिंह के हस्ताक्षरयुक्त पत्र सं० १७७० का इनके पास है उसमें यह दोहा अंकित है—

माता म्हारी थावरी पिता प्रोत परमाण।
जन्म लियो जसवन्त घर जोधा तिलक जो धाण॥

[उ] पौल के पुरोहित।

जव कि राव जोधाजी ने किला वनाना प्रारम्भ किया तव त्रिडयानाथ जी का श्राप मेटने के लिये एक ब्राह्मण ने अपनेको किले की नीव में सुलादिया था। इस लिये राव रिडमल जी ने उसके भाई को व्यास की पदवी दी।

[ऊ] चंडवाली जोशी।

यह पदवी इनके कुल में १०००वर्षसे है। इनके पूर्व पुरुष
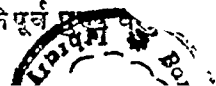
जी खेती करते थे इनके ७ बेटे थे । देवराज भाटी ने उनके पास आकर कहा मुसलमान आते हैं मुझको बचाओ तब अपने वस्त्र और यज्ञोपवीत उसको देकर हल फिरवाने लगे इतने में यवनों ने आकर पूंछा वासुदेव ने कहा यहां कोई नहीं आया फिर यवन आगे ढूंढ़कर आगये और कहने लगे कि हमारा चोर यहां ही है इन्होंने कहा यहां मैं और मेरे बेटे हैं यवनों ने कहा अच्छा हमारे साथ खाओ वासुदेव ने ६ पुत्रोंको २-२ करके १ पंक्तिमें बिठाया और सातवें पुत्रके साथ देवराजको बिठाकर भोजन कराया यह देखकर यवन चले गये । पश्चात् और भाइयों ने अपने ७ वें भाई रला को देवराज के साथ भोजन करने के कारण अपने में न रक्खा । फिर देवराज ने राज्य पंडित वसुदेव को अपना पुरोहित बनाया । इन के राघो जी हुवे राघो जी के चंडू, दामोदर और विद्याधर ३ पुत्र हुवे इनमें से चंडूने सम्वत् १५८८ वि० में अपने नामका चंडू पंचांग चलाया जो अबतक चलता है इन्हीं चंडूजी की सन्तति यह चंडवानी जोशी हैं । इनके वंश में पं० शम्भुदत्त हुवे उन्हों ने मानसिंह जी के गुरु आयस लाडूनाथ जी को पढ़ाया था । और जालन्धर पुराण बनाया था । इनके पुत्र प्रभुलाल जी ने श्री तख्तसिंह जी के समय सं० १८०२ में बहुत धन व्यय करके अपनी जाति वालों को दूर २ से बुलाकर ७ दिन तक सहभोज किया था ।

[ऋ] खेतर पालिया पुरोहित ।

इनका पूर्व पुरुष भाटियों का पुरोहित था जोधपुर में राव सातल जी की रानी फूला भाटिया के साथ आया था और लड़ाई में मारा गया तब से उसका नाम खेतरपाल हुवा वहीं उसके नाम पर चौंतरा बना है इसकी सन्तान खेतरपालिया हुई ।

[ॠ] उपाध्याय ।

राव जोधा जी ने जोधपुर का किला बनाना प्रारम्भ किया उसकी

नींव ज्ये० शु० ११ शनि० सं १५१५ को जोशी गणपत ने रखाई तब से उपाध्याय पदवी हुई । इनकी सन्तान राजा के कबूतर पालने लग गई थी इसलिये अन्य ब्राह्मणों ने इनको पृथक् करदिया था फिर कई ने क्षमा मांगली वह फिर जाति में मिल गये ऐसे एक जाति बहिस्कृत और दूसरे सम्मिलित हैं । जोधपुर में इनको कबूतर वाले भी कहते हैं ।

[ल] पुरोहित ।

इनके कई भेद हैं पुरोहित के कुछ भेदों के शासन नीचे लिखे जाते हैं—

——o——

(A) राज गुरु पुरोहित ।

१ आंबेटा	७ पीडिया
२ करलया	८ ओझा
३ हराऊ	९ वरालेचा
४ पीपलया	१० सीलोरा
५ मंडार	११ वाडमेरा
६ सीदप	१२ नागदा

(B) ओदीचा पुरोहित

१ फांदर	१० मकवाणी
२ लाखा	११ नवाडी
३ ढमढमियां	१२ रावल
४ डीगारा	१३ कोपाऊ
५ डावीआल	१४ नेत्रड
६ हलया	१५ लछीवाल
७ केसरिया	१६ पाणेचा
८ वोरा	१७ दूधवा
९ वावरिया	१८ टोटिया

(C) सीहा पुरोहित ।

१ सीहा
२ हातला
३ केवाणचा
४ राडवडा
५ वोतिया

(D) पाल्लीवाल पुरोहित ।

पल्लीवाल ब्राह्मण पुरोहितों में पल्ली टूटने पर सम्मिलित होगये थे इनके शासन—

१ गूंदोचा
२ मूता
३ चरख
४ गोटा
५ साथवा
६ नन्दवाणा
७ नाणावाल
८ वलवचा
९ ध्रमाणिया
१० आगसेरिया
११ गोमतवाल
१२ माडे
१३ पोकरना
१४ थाणक
१५ करमाण
१६ भगोरा

(E) दूधा पुरोहित ।

१ कतवा
२ लाफोजर
३ हाडी
४ मडवी
५ व्यास
६ गाविया
७ लाहारिया
८ केदारिया
९ संखवालचा
१० पादरवाल
११ रेढलिया
१२ समथला
१३ मय्या
१४ रूदवा
१५ लापल
१६ महीवाल
१७ गन्धा

इनके १४ गोत्र हैं ।

गोत्र	प्रवर	शासन
लोऽनस	अवेतिथ, आंगिरस, वार्हस्पत्य	१ वायता २ मेडनाल ३ कपिल ४ आँवलिया ५ पूछतोड़ ६ पाडेचा ।
भारद्वाज	भारद्वाज, वार्हस्पत्य, आंगिरस	१ काकरेचा २ टंकसाली पदवी व्यास ३ माथुर ।
शाँडिल्य	असित; देवल शांडिल्य	१ वोधा पदवी पुरोहित २ हीडाऊ ३ मूचड़ ४ कादा ५ फिरता ६ नवला ।
गौतम	आंगिरस, गौतम, आवोतिथ	१ कवलिया पदवी त्रिवाडी २ जोशी ३ माधु ४ माधा ५ गोदाना ६ गोतमा ।
उपमन्यु	आंगिरस, वार्हस्पत्य, भारद्वाज,	१ ठक्कर २ कंदेल ३ दोटा ४ वटु ५ मामता ६ वजडा ।
कपिल	वसिष्ठ, भारद्वाज, इन्द्र	१ कवसथलिया पदवी छंगाणी २ कोलाणी ३ जड़ ४ माला पदवी ५ गंठिया पदवी ६ जोशी ७ जट ।
चन्द्रास	अत्रि, गार्गिष्ठ, ललोप	१ दगड़ा २ पेठा ३ रामा ४ परमेणा पदवी मूता ५ जीवणिया ६ लापसिया ।

पाराशर	वशिष्ठ, शक्ति; पाराशर	१ चोवटिया पदवी जोशी २ हरस ३ पणिया ४ ओझा ५ वाआ ६ मुंडा।
काश्यप	नैध्रुव, वच्छात्स काशीपात्र	१ कटई २ करमण ३ लुद्रपदवी ४ कल्ला।
हारीत	हरियाणी, हरीय च्यवन	१ रङ्गा २ रामदेव ३ उपाध्याय ४ अंचू ५ शेथधर ६ ताक पदवी मूंता।
सनकस्य (?)	सूद्री, गृत्समद गार्त्समद	१ बिस्सा २ वाइगेइया ३ वीरंग ४ टेटर ५ रत्ता ६ वल्ला।
वत्स	भृगुचवन, औचान आप्लवान, च्यवन जमदग्नि	१ मत्तड़ २ हुच्छड़ ३ पडयारिया ४ वडा ५ सोमनाथ ६ टोडपलिया।
कौस्यम (?)	विश्वामित्र, देवराज, अवटलति	१ कवडिया २ कीराम ३ व्यास ४ वासू ५ किराड ६ चूरा।
मुद्गल	आंगिरङ्क, भ्रामध्य, मुद्गल	१ गोटा २ सीहा ३ गोदाणा ४ सोखड़ा ५ रवीसा ६ बुदाणा।

अन्य भेद।

ठाकुरायण राजपूताने में ठाकुरों के पुरोहित। भोजक और फकड़िया राजपूताने में हैं।

(लृ) छन्यात ब्राह्मण।

१७५ वर्ष प्रथम महराज सवाई जयसिंहजी जयपुर वालोंने अश्वमेध यज्ञ किया वहां देश २ के ब्राह्मण आये थे तब महाराज ने चाहा कि सब ब्राह्मणों को एक करदें जिससे कि कष्ट दूर हो जावे इस लिये एक पंक्ति में इनको भोजन कराना चाहिये अपना नाम हो, परन्तु ब्राह्मणों ने नहीं माना फिर अपने देशवासी ब्राह्मणों को महाराज ने कहा उन में से सारस्वत, दाधिमथ, पारीक; गूजर गौड़, और खडेलवाल ब्राह्मणों ने सम्मति करके भोजन कर लिया तब से ६ न्यात प्रसिद्ध हुई। इनके ६ भेद।

१–दाधिमथ ब्रा०।

महाराज मानधाता ने मारवाड़ में दधिमती मन्दिर के पास यज्ञ किया तब ब्राह्मण नैमिषारण्य से बुलाये यज्ञ के पश्चात् भूमि देकर इनको यहीं रख लिया तब से यह दाधिमथ प्रसिद्ध हुये और जो २ गांव इनको दिये गये थे। उन्हीं के नाम पर इन के शासन हुये इनके शासन १४४ हैं मारवाड़ में ६० मिलते हैं। दधिमथी देवी के मन्दिर से १ पुराना ५८६ सम्वत् का एक लेख मिला है। यही समय इन के यहां आने का निश्चित हुआ है।

ब्रह्मा के बेटे अथर्वण, अथर्वण के दधीची, दधीची, के पिप्पलाद और इनके १२ हुये।।नीचे गोत्र और शासन दिये जाते हैं—

गोत्र	शासन
गौतम	१ पाटोदिया २ पल्हौड़ ३ नाहावाल ४ कूंया ५ कठ ६ बूडाढड़ा ७ खटोड़ ८ बुडसुणां ६ बांगड्या १० ...डवल

११वांदरासी दरया १२ लीलोदिया १३ काकडा १४ गङ्गावाणया १५ मुंवाल ।

घत्स १ रतावा २ पोली वटल ३ परगदवा (वलदवा) ४ रोलानिया ५ सोलंखिया ६ जोपट ७ इंटोदिया ८ पोलगला ९ नोसरा १० नामेवाल ११ अजमेरा १२ कुंकडा १३ तरनावा १४ अवडीग १५ डोडीना १६ मूसिया १७ मग ।

भारद्वाज १ पींडवाल २ सकुल ३ करेसा ४ मालाठिया ५आसोपा ६ जवाली ७ वरमोटा ८ इंदोखवाल ९ हलसूरा १० भटोलिया ११ गदिया १२ सोलाणी।

..गव १ ईदाणिया २ पाथाणिया ३ कासलिया ४ सिणोदिया ५ कुराडव ६ जाजावाल ७ खेवर ८ वेसाव ९ लाडानिया १२ वडानवा ११ कडलवा १२ कापडवा ।

कौच्छस १ डीडवाणिया २ मोलोदिया ३ धायरोडिया ४ जायलया
(त्स) ५ डीवा ६ मुंडेल ७ मांजवाल ८ लोजी (सोसी) ९ घोटेचा १० कुदाल ११ रेतावाल ।

काश्यप १ बोरावल २ दीरोला ३ जमवाला ४ सरगोटा ५ राजस्थल ६ वडवा ।

शाण्डिल्य १ रणवां २ टोरिया ३ ईड ४ घोटडावाल ५ देवाल ।

आत्रेय १ सूंठवाल २ जोजनूदिया ३ डवाणिया ४ सुकलिया ।

पाराशर १ वेडा २ पराशर ।

कपिल १ खीपडा ।

गार्ग्य १ तुलछा २ मनुकजा तवीडज ।

---

१२ व मम्रक की सन्तान धर्म भ्रष्ट हो गई । ।

महामहोपाध्याय प्रो॰ पं॰ शिवदत्तजी शर्मा जैपूर॰

"महामहोपाध्याय विद्वद्वर दधिमथकुलभूषण श्रीशिवदत्त शर्मणां संक्षिप्त जीवनचरित्रम्"

श्रीमद्बदरीलालो भूपा दाधिमथशुद्धवंशस्य ।
अविनयनाशन निपुणश्छात्राणां मोदकश्चासीत् ॥ १ ॥
तस्मा च्छ्रीशिवदत्तः सकलशिवानां खनिर्जनिं प्रापत् ।
शशिशरवसुशशि १८५१ सङ्ख्ये ख्रिस्ताब्दे जयपुरे रम्ये ॥ २ ॥
तस्य तृतीये वर्षे जननी प्रययौ दिवं रुजा गोदा ।
सूनु समर्प्य सुभगा रम्यं श्वश्रूसमुत्सङ्गे ॥ ३ ॥
बालावननिपुणायाः परिपूर्णायाश्च वत्सलत्वेन ।
लभमानः परिपोषं वृद्धिं प्रापत्पितामह्याः ॥ ४ ॥
सारस्वतीं तु शिक्षां जग्राहान्हाय मधुरमृद्वीकाम् ।
अध्यापयतस्ताता इवीमत्त श्चान्द्र पौलिमठे ॥ ५ ॥
सुमतिः समाप्य सर्वं तत्रत्यं पाठ्य पुस्तकं सपदि ।
विद्याविलासमुग्धः संस्कृत विद्यालयेऽपाठीत् ॥ ६ ॥
नवशरवस्विन्दुमिते १८५९ ख्रिस्ताब्दे शोभने महोत्साही ।
विद्यार्थिवृत्तिमापत्प्राविष्कुर्वन् स्ववैशिष्ट्यम् ॥ ७ ॥
प्रविवेश संस्कृतमहाविद्याश्रेणिं विशेषशिक्षार्थं ।
दर्भाग्रशेमुषीकः सुश्रीकः शिक्षकानुमतः ॥ ८ ॥
सुहृन्मनांसि तत्राध्यापकवृन्दस्य वन्दनीयस्य ।
अप्रतिमप्रतिभातः शिक्षां दक्षो मुदाऽलभत ॥ ९ ॥
नवमुनिवसुशशि १८७९ सङ्ख्ये ख्रिस्ताब्दे शास्त्रनीति संवेत्ता ।
शिक्षाविभागमुख्ये दीनानाथाभिधे पूर्वम् ॥ १० ।
अध्यापकत्वममलं जनकपदाब्जैर्विसृष्टमुत्कृष्टम् ॥
अङ्गीचकार मौलं संस्कृतविद्यालये महति ॥ ११ ॥

अवरां पाठक पदवीं श्रीयुतहरिदासशास्त्रिणा पूर्णाम् ।
पदवीं प्रिन्सपिलीयां मण्डयताखण्ड विद्येन ॥ १२ ।
विपदङ्काहीन्दु १८६० मिते वर्षे श्रीमान् सचान्पौलिमहे ।
अनुरुद्धोऽध्यापयितुं क्रुद्धो विजहौ पदं स्वीयम् ॥ १३ ॥
उररी चक्रेय तदनु संपन्मूलां स काव्यमालायाः ।
दुर्गाप्रसादविदुषः संपादकतां स्व वैशिष्ट्यात् ॥ १४ ॥
काडन कर्मणि निरतो सूरीभूयाप्य भूत्वयननिष्ठः ।
गोविन्ददत्तनामा सापत्नस्तस्य च भ्राता ॥ १५ ॥
नेत्राङ्कसिद्धिधरणी १८६२ प्रमिते संवत्सरे महोत्साही ।
गोविन्ददत्त धामा दुर्द्दैवाद्भूतलं विजहौ ॥ १६ ॥
श्रुति निधिवसुशशि १८६४ शालिनिवर्षेऽरोषो विशेषपरितोषः ।
मुख्याध्यापक पदवीं पदवीं सन्मानधन यशसाम् ॥ १७ ॥
लेभे लोभेऽलीनः सुलानः ह्यागमार्थशालीनः ।
लवपुरशालिनि रम्ये विद्यानिलये सविश्वपदपूर्वे । १८ ।
विश्रुतकीर्त्तिः श्रुतितति संश्रुतिविमलश्रुतिर्महीमान्यः ।
विद्वद्विस्मृति विषयस्मृति कुशलस्मृतिषु सत्प्रतिभः ॥ १९ ॥
शास्त्रज्ञगोतमित्रच्छात्रप्रातातपत्रसद्गात्रः ।
हृषित विद्यामित्रो मित्रः सद्वंशशत पत्रम् ॥ २० ॥
स्टाइन नामाऽपरिमितधामा रामापरांमुखः सुमुखः ।
संस्कृत वाणीरमणीगुण गण महिमा हृत स्वान्तः ॥ २१ ॥
विभराञ्चकार चतुरोऽध्यापकवर्यैं र्विमण्डितः शौरडैः ।
स्नातो रीतिषु नीतेः प्रिन्सपिलीयां यदाह्वयं पदवीम् ॥२२॥
दुर्गादत्तविबुधवर हरिभक्ताभ्यां सहेमराजाभ्याम् ।
योगीश्वरशिवनाथै र्गङ्गाविष्णवादि विद्वद्भिः ॥ २३ ॥
यदयं शिवोऽत्र शुशुभे, किंचित्कालं प्रपाठनाग्रमतिः ।
तज्जयपुरजाऽकीर्तिः स्वर्गं लोकं प्रविष्टेव ॥ २४ ॥

इयमाएड बिलीनाम्नि महामहिम्नि प्रभूतसवेऽभिनवे।
मुनिनव वसुविधु१८६७माने वर्षे हर्षे परोत्कर्षे ॥ २५ ॥
कविवर पद्वी पथिकोऽभ्युगतपूर्वां महामहापूर्वाम्।
स्वाधीनतां विनिन्ये सम्यगुपाध्यायपद्वीं सः ॥२६ ॥
तज्जनकाऽवरजोऽपि गिरिजाधिराज पदपल्लव भ्रमरः।
अग्निश्रुतिवसुधरिणो १८४३ प्रमिते वर्षेऽनुभूय जनुः ॥ २७ ॥
रुचिरः स चान्द्रमौल्यां शालायां माधवेन्द्ररक्ष्यायाम्।
भूत्वा प्रथितः स्वेनाप्रतिनिधिनाऽध्यापनेन लघु ॥ २८ ॥
श्रीमान् रामकुमारो रामकुमार श्रिया कुमारायः।
मतिमानु गुणवानव्दे गगनविशेशाङ्क शेषाव्दे १६१० ॥ २६ ॥
महामहोपाध्यायस्य चास्य विदुषः शिवादिदत्तस्य।
अस्तीह पुत्ररत्न युगलं विमलं गुणाकीर्णम् ॥ ३० ॥
प्रथमस्तयास्तु शास्त्री भवदत्तो भवसुदत्त वहुभूतिः।
अजमेरभूपविद्यानिलयस्याध्यापकः कुशलः ॥ ३१ ॥
अपरस्तु विष्णुदत्तो जिष्णुः श्रीविष्णुदत्त सद्धियः।
शास्त्री रिंवाडि नरपति विद्यानिलये सुपाठयति ॥ ३२ ॥

पं० बदरीलालजी के यहां सन् १८५१ ई० में आपका जन्म हुआ आपकी शिक्षा जयपुर में ही हुई और पाठशाला में आप अध्यापक होगये सन् १८६४ में लाहोर में ओरिएण्टल कौलिज में मुख्याध्यापक हुये। आपने अनेक उच्छिन्न प्रायः संस्कृत ग्रन्थों का संशोधन मुद्रण से पुनरुद्धार किया। आपके कार्य में महाभाष्य संपादन अभूत पूर्व हुवा। हमने आपकी चरणसेवा से ही कुछ ज्ञान कण उपार्जन किये।

२—(गूजर गौड़) गुर्जर देश के नाम से यह नाम हुआ

इन के गोत्र	उपाधि
१ काश्यप	व्यास
२ औशनस	जोषी
३ अत्रि	दुवे
४ गर्ग	तिवारी
५ वशिष्ठ	आचारज
६ गौतम	उपाध्याय
७ कौशिक	पचोली
८ शांडिल्य	चौवे
६ भारद्वाज	श्रोत्रिय
१० पराशर	"
११ वत्स	"
१२ मुद्गल	"
१३ कश्यप	"

अवटङ्क

	गुणदाड्या
अन्दरूपा	गुंदाड्या
अद्रोज्या	गुंवाल्या
आछरमरुवा	गोरयो
आमघा	गोवल्या
आहुवा	गोहोंधा
उमटाण्या	चढाण्या
कटासतल्या	चाटसुवा
कटोरीवाल	चाडडहोटया
कमठाण्या	चुरेल्या
कराडोल्या	चुडोल्या
कलघाड्या	छहका

छींछावटा	डीडवान्या
जखीमा	डीडवाड्या
जुजोधा	ढमेकल्या
जगण्या	ढांकल्या
जसन्थून्या	ढींकसरा
जांगल्या	थडीवाल
जांजपूरा	पीपलोधा
जीरा होल्या	दीखत
हडक्या	दुगाया
झाडोल्या	नगवाल्या
झूझधा	नायरा
ठोकरया	नराण्या
डवांस्या	पहाड्या
	वरनोल्या

३-खण्डेलवाल-यह बुंदेलखंडके नामसे नाम हुआ

इनके शासन ५२ हैं—यह खंडेले ग्रामों के नामपर ही हैं।

१ सूदरिया	११ डुगोलिया
२ चादिया	१२ तोवला
३ पीपलया	१३ वूचीवात
४ कछवाल	१४ श्रोत्रिय
५ वूडाडरा	१५ वीलवार
६ दूथली	१६ भरभूटा
७ जोशी	१७ मगलियार
८ माटोला	१८ सीवोंडी
९ नेवाल	१९ भाटी वर्डी
१० टाक	२० रणवा

२१ जकनालिया
२२ वर्मीया
२३ वलीवाल
२४ वाठोलिया
२५ जटाणिया
२६ पोखाल
२७ पुजावडी
२८ मडकरा
२९ सोनतिया
३० जुजरोदा
३१ गोदेसा
३२ गोरसा
३३ डोडवाणिया
३४ सांमरा
३५ डावसिया
३६ मवदा
३७ बुरवरा
३८ अजमेरा
३९ भरडिया
४० बूतवाल
४१ कटवाल
४२ गुणावदा
४३ चाटसा
४४ सोरा
४५ भटोता
४६ कूकरिया
४७ भांना
४८ भोमवाल ।
४९ नाना
५० याद्
५१ रजोडग
५२ वोल

४—पारीक ब्राह्मण

गोत्र इन के कई हैं शासन१०३ में से

१ पुरोहित कातडया
२ ,, डांगी
३ ,, सूरेरा
४ ,, दापवा
५ ,, कागड़ा
६ ,, जीपलवाल
७ ,, जोशी
८ ,, तिवारी
९ ,, लापसा
१० ,, गोडवाड
११ ,, जोशी कपडोद्
१२ ,, वाना
१३ ,, व्यास
१४ ,, वोहरा
१५ ,, पांडिया वोंहरा
१६ ,, केसट
१७ ,, पादिया
१८ ,, मकरानिया
१९ ,, दुगोली वोंहरा
२० ,, तावलीश
२१ व्यास गोरवाल
२२ ,, खटोड
२३ ,, मुंडकिया
यह सात हुई हैं ॥—

पल्लीवाल ब्राह्मण

पल्ली ग्राम में रहने से पल्लीवाल नाम हुआ पहिले मारवाड में पल्ली वडा भारी शहर था उस में १ लाख घर बसते थे सन् १२६८ के अनुमान,राव आयस्थान जी राठौड़ वंशीय क्षत्रिय यहां आये उन सब को इन्हों ने अपने पास रक्षार्थ रख लिया था। तदुपरान्त गोरी शाह की सेना लडाई के लिये आई बहुत दिन तक युद्ध होता रहा जब गोरी शाह की विजय न हुई तब एक तालाब में गौओं का वध कर यवनों ने डाल दी इस को देखकर वहां से भाग गये भागते हुये जो ब्राह्मण मारे गये उनके यज्ञोपवीत ६ मन हुये थे और स्त्रियों के हाथी दांत के चूड़े ८४ मन थे जो वहीं सती हो गई थीं। यह वहां से भाग २ कर अन्य देशों में बस गये यह भी आदि गौड़ हैं। पराशर गोत्रीय ब्राह्मणों का राज्य पाली में था

६०० वर्ष के पीछे फिर पल्ली के महाराजा विजय सिंह ने बसाना चाहा उनकी आज्ञानुसार कुछ ब्राह्मण फिर वहाँ बस गये॥

मारवाड़ रिपोर्ट।

राजस्थान इतिहास (टाड प्रणीत) तथा अन्य सर्कारी रिपोर्टों से भी ज्ञात हुआ कि पाली पर सन् ११ में बड़ी विपत्ति आई थी। तब से ब्राह्मण अन्यत्र जा बसे। पाली मारवाड (जोध पुर राज्य) में एक परगना है।

इन के गोत्र १२ मारवाड में—गर्ग, पाराशर, मुद्गल, उपमन्यु, वसिष्ठ, और अत्रि इन गोत्रों के शासन ये हैं

१ जाजिया	८ चरक
२ पूनिद	९ सांढू
३ धामट	१० कोरा
४ भायल	११ हरदोलया
५ ठूमा	१२ वनया
६ पेथड़	१३ जगया
७ हरजील	

गौडों के ४ भेद मैथिल ब्राह्मण गौड

काशी सकाशादीशाने ह्यंग देशसमीपतः।
देशो जनक नामा वै तत्रराजा निमिःपुरा॥
निमिश्चलमिदं ज्ञात्वा ह्यानाप्यान्यान् द्विजोत्तमान्।
मैथिला ब्राह्मणाश्चैव तेन संस्थापिता मुदा।
ते सर्वे-मैथिला जाता निमिपक्षसमागता॥

ब्राह्मण मार्तण्डाध्याय

अर्थात् काशी के समीप ईशान में अंगदेश के पास मिथिलापुरी है। वहां पहिले राजा निमि हुवा। उसने यज्ञ करने को निश्चय कर अपने गुरु तथा मध्यदेश से अन्य द्विजों को बुलाया। उससे बसाये हुवे वहां के द्विज मैथिल कहाने लगे॥

जांगल वा, जांगिड़ा ब्राह्मण

'जंगिड शब्द वैदिक है। जंगिड एक महर्षि थे उन्होंने जिस देश में तप किया था वह जाँगड वा जांगल देश कहलाया।

जांगल देश कुरुक्षेत्र के पास है अर्थात् रोहतक, जींद, कुछ कुरुक्षेत्र प्रान्त, पटियाला राज्य के कुछ भाग भटिंडे तक इधर के ऊपर के पश्चिम भाग को जांगल देश कहते हैं।

शब्दार्थ चिन्तामणि में भी लिखा है-'कुरुदेश समीपस्थे देशे' कुरुक्षेत्र के पास का देश।

स्वल्पोदकतृणो यस्तु प्रवातः प्रचुरातपः।
स ज्ञेयो जांगलो देशः बहुधान्यादिसंयुतः॥

अर्थ—जिस में थोड़ा पानी हो, घास फूंस कम हों, हवा और धूप अधिक हो उस देश का नाम जांगल है।

भाव प्रकाश में लिखा है-

'आकाश शुभ्र उच्चश्च स्वल्प पानीय पादपः।
शमी-करीर-बिल्वा-र्क-पीलु कर्कन्धु संकुलः॥
हरिणैणर्क्ष पृषत-गोकर्ण-खर संकुलः।
सुस्वादु फलवान् देशो वातलो जांगलः स्मृतः॥'

जहां आकाश निर्मल रहे पानी और वृक्ष कम हो जांड, करीर, बिल्व, आक, पीलु, आदि वृक्ष, हरिण आदि पशु हों ऐसा वात प्रधान देश जांगल है ।

पुनः-पुनरतिशयेन वा गलति इति गल यङ्, अच् पृषोदरादित्वात्साधुः ।

और महाभारत में भी आया है ।

कक्षा गोपालकक्षाश्च जांगला कुरुवर्णका
किराता वर्वराः सिद्धा वैदेहास्ताम्रलिप्तका॥
भीष्मपर्व अ० ६ श्लो० ॥५७॥

भारतवर्ष के देश नदी वर्णन प्रसंग में जांगल देश भी कुरुक्षेत्र के समीप है ।

इस जांगल देश में ही 'जंगिड, मुनि ने तप किया । यह जंगिड ऋषि अथर्ववेद के दो सूक्तों के ऋषि हुवे । इन सूक्तों में जंगिड नामक औषध और परब्रह्म का प्रतिपादन किया है । वह सूक्त यह हैं-

दीर्घायुत्वायब्रहतेरणयारिष्यन्तोदक्षमाणाःसदैव
मणिं विस्कन्ध दूषणं जङ्गिडं विभृमो वयम्॥१॥
जंगिडो जम्भाद्विश्राद्विष्कन्धादभिशोचनात्
मणिः सहस्रवीर्यःपरिणः पातु विश्वतः॥२॥

अयं विस्कन्धं सहतेऽयं बाधतेऽत्त्रिणः ।
अयं नो विश्व,भेषजो जंगिडः पात्वंहसः ॥३॥
देवैर्दत्तेन मणिना जङ्गिडेन मयोभुवा ।
विस्कन्ध सर्वारक्षांसि व्यायामे सहामहे ॥४॥
शणश्च मा जङ्गिडश्च विस्कन्धादभिरक्षताम्
अरण्यादन्य आभृतः कृष्या अन्यो रसेभ्यः ॥५॥
कृत्यादूषिरयं मणिरथो अराति दूषिः ।
अथो सहजस्वाञ्जङ्गिडः प्रणआयूंषि तारिषत्॥६॥

अथर्वः कांड २ सू० ४ ।

यहाँ पर कौशिक सूत्रकार ने लिखा है कि जंगिड नाम मणि (औषध को दीर्घायुत्वाय इस सूक्तसे बालक के बांधे) (कौ० सू० ५ । ६) इस सारे सूक्त में जंगिड की प्रशंसा है । आगे १६ कांड सु० ३४ में परमात्मा तथा औषध दोनों का वर्णन किया है । ग्रन्थ बाहुल्य से उसको नहीं लिखते केवल वहां से २ मन्त्र दिये जाते हैं—

त्रिष्ट्वाय देवा अजनयन् तिष्ठितं भूम्यामधि
तमु त्वाङ्गिरा इति ब्राह्मणः पूर्व्या विदुः ॥६ ।

सायण भाष्य—इदानीं भूम्यामधि । अधिः सप्तम्यर्थानुवादी । भूम्यां तिष्ठन्तं त्वां देवाः इन्द्राद्याः त्रिः त्रिवारं अजनयन् उत्पादयन् त्रिपु लोकेषु अवस्थानायेतिभावः । तं तादृशं प्रयत्नेन उत्पादितं त्वा त्वां अंगिरा इति ब्राह्मणो र० फ० ऽङ्ग सम्भूतो रसः अगिंराख्यो महार्षि यद्वा अंगिरा अंगारा: ये अंगारा आसस्ते अंगिरसोऽभवन् यद्वा अगिंरा अंगरा: ये अंगरा आसस्ते अगिंरसोऽभवन् । (ऐ० ब्रा० ३, ३४)

इति ब्राह्मणम् । एवं नामामहर्षिरिति पूर्व्याः पूर्वे भवा ब्राह्मणा महर्षयो विदुः ब्रुवते ।

अर्थ—जंगिड को तीनवार उत्पन्न किया । अंगिरा ऋषि हैं देवताओं ने तुझे अंगिरा जाना है ॥ यहां सायणाचार्य स्पष्ट लिखते हैं जंगिड और अंगिरा एक शब्द हैं ।

अंगिरा असि जंगिड ! अथ० १९

अर्थात् हे जंगिड ! तुम्हारा ही नाम अङ्गिरा है ।

अङ्गिरा और जंगिडा एक ही शब्द हैं । जंगिड शब्द की व्युत्पत्ति जंगम्यते शत्रून् बाधितुम् इति जगिडः । गमेर्यङ्लुगन्ताद्रूप सिद्धिः । अथवा जनेर्जयतेर्वा ड प्रत्यये 'ज' इति भवति । जंगिरतीति जङ्गिरः । कपिलकत्वाद् लत्वम् । पूर्वपदस्यस्य लुगभावश्छान्दसः । खच् प्रत्ययो वा द्रष्टव्यः । अर्थात् गम् जन् जि इन तीन धातुओं से ड, खच् प्रत्यय लगाकर जंगिड शब्द बनता है । जो शत्रुओं का नाश करे जो संसार उत्पन्न करे इत्यादि व्युत्पत्ति द्वारा अर्थ सायणाचार्य ने किये हैं । अङ्गिरा शब्द के अर्थ ब्रह्मा के अङ्गों से उत्पन्न यह सभी ब्राह्मण तथा भाष्यकारों ने लिखे हैं । बस सिद्ध हुवा कि जंगिड ऋषि (वा अंगिरा) के उपासक अङ्गिरा वेद (अथर्व) के पढ़ने वाले जाँगल देश निवासी जांगिडा कहलाये । ब्राह्मणों के भेद सूची में जांगल ब्राह्मण भेद शेरिंग साहब ने भी लिखा है ।

पण्डित पालाराम जी तथा पं० बुधसिंह जी शर्मा कृत जांगिडोत्पत्ति पुस्तक हमने पढ़ी है इसमें जो लिखा है वह सोच समझ कर नहीं लिखा गया यह पूर्वोक्त अनुसन्धान से प्रतीत हुआ क्यों कि इसमें लिखा है:-

१—जांगिडा यह शब्द जोग का अपभ्रंश है । जोग, योग का अपभ्रंश है । यह जोग मैथिल ब्राह्मणों का उपभेद है ।

* किन्ही पुस्तकों में जंगिडा यह भी पाठान्तर है ।

यह शब्द भ्रम निर्मूल है क्योंकि इसमें कोई प्रमाण नहीं है। जबकि मूल शुद्ध यह संस्कृत का शब्द है तो योग इससे जांगिडा इतना बड़ा कैसे क्यों और कब बिगडा इसका कारण और इतिहास ग्रन्थकार ने कुछ नहीं लिखा, दूसरे प्राचीन पुस्तक ब्राह्मण मार्तण्डाध्याय आदि अन्यत्र कहीं योग मैथिलों का भेद भी नहीं लिखा। केवल रिपोर्टों में है। तीसरे योग से जोग, जोग से जांगिडा ऐसे तीनबार क्यों बिगड़ा कोई इसमें कारण प्रतीत नहीं होता।

२—जांगिडा की व्युत्पत्ति भी मन-घडन्त लिख दी है। योगं लाति डाति इत्यादि जब योग में ही प्रमाण नहीं तब यह अर्थ कैसे ?

३—तृतीय भ्रम इस पुस्तककारों को यह हुआ कि कुछ जांगिडा लोग शिल्पकार्य पत्थर लकड़ी तथा अन्य धातुओं पर करते हैं। इस लिये इनको विश्वकर्मा वंशज लिख दिया पर यह सरासर भूल है, क्योंकि इस जाति के लोग महन्त, पुजारी, जयपुर आदि में हैं वह फिर किस श्रेणी में आवेंगे। कोई एक शिल्प ही तो इनकी वृत्ति नहीं अन्य सैकड़ों कार्य कर रहे हैं फिर एक ही शिल्प दारु शिल्प से वर्धकी आदि लिख मारा यह भ्रम असल में जंगहारा शब्द से हुआ। पर यह क्षत्रियों का उपभेद है और खातियों में गिना है जैसा कि क्रुक साहिब ने लिखा है।

इसी जंग-हारे के अज्ञान से इस पुस्तक वालों ने जांगिडा को ही समझ लिया होगा और अपने मतलब के लिये खातियों के भेदों में क्रुक् साहिब के ग्रन्थ में जङ्गिडा शब्द न होने पर भी खाती टांक, मोहा, सुतार के बीच में खाती ' अर्थात् जांगिडा' खाती के आगे यह शब्द आप बढ़ा दिये। वस्तुतः प्राचीन व अर्वाचीन किसी भी पुस्तक में खाती, तखान वा वढ़ई जाति के भेदों में हमें 'जांगिडा' शब्द कहीं नहीं मिला।

देखिये कुक् साहिबने लिखा है—

JANGHARA

A large somewhat turbulent Sept of Rajputs, chiefly found in Rohikhand. Their-name is said to mean "Worsted in war" (Janghara) which was derived from their defeat by Raja Hirandpal of Bayana or Shahabuddin Gouri.

Divisions Tarai and Bhur

Page 21 of tribes and castes of N. W. P. &Oudh vol· III by W. Crook B. A.

कुक साहब बी० ए० ट्राइब्स एँड कास्ट के प्रथम भाग के पृष्ट १६१ में तगानो के भेद हिन्दुओं में ८५६ मुसलमानों में ७६ हैं। इन में से मुख्य २ यह हैं।—

सहारनपुर मे

१ वन्दरिया

२ ढोली

३ मुल्तानी

४ नागर

५तरलोईया

मुजफ्फर नगर में

६ ढालवाल अर्थात् ढाल वनाने वाले

७ लोटा

मेरठ में

८ जंगहारा राजपूतों का भेद

बुलन्द शहर मे

६ भील

अलीगढ़ मे

११ चौहान

मथुरामें

१२ वामन-चढ़ई

१३ सोसानिया

आगरे में

१४ नागर

१५ जंगहारा

फर्रुखावाद में

१६ प्रोतिया

१७ परेतिया

मैनपुरी में

१८ उमारिया

एटे में

१६ अंगवारिया

२० बरमनियां

२१ विसारी

२२ जलेसरिया

२३ ऊपरभोला

बरेली में

२४ जलेसीरया

बलिया में

२५ गोकुल वंशी

२६ बस्ती में

२७ दकिवजा

२८ सर्वरिया

२६ गोंडे में

३० खैरानी

३१ सोंदी

बाराबंकी में

३२ जयसवार

३३ मिर्जापुर में ५ भेद हैं

३४ ओकाशवंशी

३५ मागधिया

३६ पूर्विया

३७ उत्तराहा

३८ खाती

बरेली में

३६ मथुरिया

४० धीमाण

४१ खाती

बिजनौर में

४२ दहमन

४३ अगरया

४४ लाहोरी

४५ ओकोलकास

४६ बस्ती में

४७ कोकाश वंश

४८ लोहार बढ़ई

इन में जांगिडा शब्द भी नहीं आया।

शेरिंग साहिब ने भी कहीं नहीं लिखा।

४—भ्रम इन पुस्तक वालों को यह हुआ कि 'योग' चूंकि मैथिलों का उपभेद है अतः जाँगिडा भी मैथिल हुये परन्तु जोग, जोगी मैथिल और बढई यह इनको कोई भी अपने में नहीं मानते न कभी रोटी—बेटी का व्यवहार हुआ न है। तथा मैथिल मत्स्यादि भक्षक हैं। इनमें मद्यमांस छू तक नहीं गया।

५—वाँ भ्रम इन पुस्तककारों का यह है कि ऊट पटांग बिना सिर पैर और बिना प्रमाण की मनघड़न्त कथायें लिख डाली हैं कि श्रीकृष्ण के लिये लकड़ी चीरी थी तब से यह जाति हुई।

हमारे ऊपर के अन्वेषण से स्पष्ट सिद्ध होचुका 'जांगिडा' यह शब्द वैदिक है, शुद्ध है किसी का अपभ्रंश नहीं है। साथ ही यह भी निश्चित हो चुका कि 'जांगल' भी ब्राह्मणों का एक भेद है। (देखो शेरिंग की पुस्तक भूमिका भाग २)'

यह जाति लकड़ी पर शिल्प करना, पत्थर की मूर्ति आदि बनाना, ठेके लेना, आदि कार्य करते हैं। मन्दिरों के पुजारी और महन्त भी हैं। शिल्पकार्य करने से ही पालाराम जी ने इनको बढ़ई लिख मारा। वास्तव में बढ़ई कोई स्वतन्त्र जाति नहीं क्योंकि इस काम को ब्राह्मणादि चारों वर्ण करते हैं परन्तु अन्य यवन भी करते हैं। इस कर्म को पूर्वकाल में भी सब वर्ण करते थे जैसा कि लिखा है।

'त्रैवर्णिको रथं कुर्यात्तस्य आत्यंतरस्यच,
(बौधायन)

अर्थात् तीनों वर्ण रथकार्य, बढ़ई आदि का कार्य करते हैं तथा अन्य जातियें भी। इसीसे अन्य शूद्रादि जाति के बनाये हुवे काष्ट के यज्ञ पात्रों का यज्ञ में निषेध है—

'अचक्रवर्तामशूद्रकृतामूर्ध्वकपाला—
मग्निहोत्र स्थालीं' हिरण्यकेशीय सूत्र ३।७

अग्निहोत्र की थाली शूद्र कृत न हो। यह इन प्रमाणों से स्पष्ट सिद्ध है कि बढ़ई जाति कोई स्वतन्त्र जाति नहीं है अपि तु इस कर्मको तीनों वर्ण पूर्व से ही करते चले आये हैं। इस विषय का अधिक विवेचन शिल्पश्रेणी में लिखा जावेगा। सो इस जाति के लोग भी द्विजाति मात्र की उचित वृत्तियें करते हुवे ब्राह्मण हैं।

यह ब्राह्मण कुरुक्षेत्र समीपवर्ती जांगल देश निवासी हैं। और इनके शासन (अवटंक) भी १४५४ हैं। गौड़ों का आदि देश भी यही

ब्रह्मर्षि देश हैं। और गौडो के शासन भी १४४४ हैं। आचार, विचार; व्यवहार सब गौडो के समान होने से इनकी गणना गौड़ में ही की जा सकती है।

अंगिरावंश का वर्णन

अग्नि के पुत्र बुद्धिमान अंगिरा के वंश को सुनो, जिस के साथ भारद्वाज और गौत्तम भी हुवे है।

महातेजस्वी इषुमान के अंगिरा और देव्रय २ हुये। अंगिरा के मरीचि की पुत्री सुरूपा, कर्दम की पुत्री स्वराट् और मनु की पुत्री पथ्या, ये ३ स्त्रियां हुई।

सुरूपा से वृहस्पति, स्वराट् से गौत्तम और पथ्या से, अवन्ध्य, वामदेव, उशिज, धृष्णु, ये पुत्र हुये संवर्त, मानसपुत्र कहाये।

चिचित, अपाल्य और शरद्वान् ये उतथ्य के पुत्र हुये। उशिज दीर्घतमा, वृहदुक्थ्य,-ये वामदेव के हुये। धिष्णु का पुत्र सुधन्वा और सुधन्वा का ऋभु और रथकार हुये। वृहस्पति का महायशस्वी भरद्वाज हुआ।

इस प्रकार अंगिरावंश का वर्णन वायु पुराण अ० ६५ में लिखा है।

> शृणुताङ्गिरसो वंशमग्ने पुत्रस्य धीमतः।
> यस्यान्ववाये संभूता भारद्वाजाः स गौतमाः ॥ ९६ ॥
> देवाश्चांगिरसो मुख्या इषुमन्तो महौजसः।
> सुरूपा चैव मारीची कार्दमी च तथा स्वराट् ॥ ९७ ॥
> पथ्या च मानवी कन्या तिस्रो भार्यास्त्वथर्वणेः।
> इत्येतांगिरसः पत्न्यस्तासु वक्ष्यामि संततिम् ॥ ९८ ॥
> अथर्वणस्तु दायादास्तास्तु जाता कुलोद्वहाः।
> उत्पन्ना महता चैव तपसा भावितात्मनाम् ॥ ९९ ॥
> वृहस्पतिः सुरूपायां गौतमः सुषुवे स्वराट्।
> अवन्ध्यं वामदेव चैवोतथ्यमुशिज तथा।

धिष्णुः पुत्रस्तु पथ्यायां संवर्तश्चैव मानसः।
विचितश्च तथा यास्यः शरद्वाश्चाप्युतथ्यजः १०१॥
अशिजो दीर्घतमा बृहदुक्थ्यो वामदेवजः।
धिष्णु पुत्रः सुधन्वास ऋभवश्च सुधन्वनः॥ १०२॥
रथकाराः स्मृतादेवा ऋषयो ये परिश्रुताः।
बृहस्पते र्भरद्वाजो विश्रुतः सुमहायशाः॥ १०३॥
अंगिरसस्तु संवर्तो देवानंगिरसः शृणु।
बृहस्पतेर्यवीयांसो देवाह्यंगिरसः स्मृताः॥ १०४॥

वायु पुराण अ० ४

मरीची की कन्या, सुरूपा, कर्दमकी कन्या, स्वराट्, मनुकी कन्या, पथ्या यह ३ स्त्रियें अङ्गिरा मेंहर्षि के हुईं इनकी सन्तति इस प्रकार हुईं सुरूपा के बृहस्पतिः, स्वराट् के गौतम हुवे। पथ्या के पुत्र अवन्ध्य, वामदेव, उशिज्, धृष्णु, संवर्त, विचित, अयास्य, शरद्वान् अशिन्, दीर्घतमा, बृहदुक्थ्या, हुवे। इनमें धृष्णु के पुत्र सुधन्वा, इनके ऋभु और रथकार हुवे।

कुछ गोत्र तथा प्रवर।

गोत्र	प्रवर
भारद्वाज	अङ्गिरा१ बृहस्पति २ भारद्वाज ३
उपमन्यु	वसिष्ठ १ इद्र प्रमद २ भरद्वसु ३
वशिष्ट	वशिष्ठ १
कश्यप	काश्यप १ आवत्सार २ नैध्रुव ३
मौद्गल्य	अङ्गिरा १ भार्ग्यश्व २ मौद्गल्य ३
जातुकर्ण्य	वशिष्ठ १ अत्रि २ जातुकर्ण्य ३
शांडिल्य	शांडिल्य १ असित २ देवल ३
कौंडिन्य	अङ्गिरस १ बार्हस्पत्य २ भारद्वाज ३
गौतम	अङ्गिरा १ आयास्य २ गौतम ३
अघमर्षण	विश्वामित्र १ कौशिक २ अघमर्षण ३

[क]

काले, काकोडिया, कोतकथल्या, कटखणा, कठड़ीवाल। कटारिया, काकटेनया, काकटायन, केलोया, कलोनया, कादिया, कपूरवालया, कपूरिया, कलैया, कोलथल्या, कोत्कथल्यां, कौशल्य, कासलीवाल, कसुरिया, किंगा, कमलपुरिया, केसवान्यां, कादेईया, कौमलया, कौढाला, कूलरया, कंवलेचा, कडलवा, कुवाल, कुंसविवार, करवाल, करल, किजागिरावा, किजाझाडेला, कठमाणिया, कोखतला, काणोदा, कढसूरिया, ककड़ावा, केराया, ककरोलिया, काकडीवाल, कढवाणया, कसावटया, कीलक, कस्तूरिया, कूगावत्र, कानास, कर्पू, कुचेरिया, कसमोरया, कोढ़वाल, कालचढ़ा, करोता, कादर, काकटया।

[ख]

खतडया, खरेडवाल, या खंडेलवाल, खींची, खरान खरनालय, खजवाणया, खोरवतल्य, खरेराटया, खरनाल्य।

(ग)

गाले, गोगोरिया, गव्वी, गोढरीवाल, गोदया गोढ़वाल गुवालंना, गाजवा, गेपाल गोपीवाल, गरजल्या, गधेडिया।

[घ]

घाल्रू, घूधरया, घाटीवाल, घामरघूमा।

[च]

चानी, चेचावां, या चेचेवाल, चन्देवा, चरखिया, चरखीवाल, चिचोया, चारसल, चौपल, या; चावले, चोईवाल, चरविया, चीचवा, चूपल; चीताणया।

(छ)

छिछोलिया, छड़िया।

(ज)

जागलवाल. जाले, जालवाल, जिरीपाल, जालोढिया, जडवाल, जोलानया, या, जूकारया, जेपाणिया, जटावा, जालूंडया॥।

(झ)

झरवाल या, झलझलया, झिटावा, झीया, झीलोया, झाजडा, झोडूंदा, झाडोला, झामडोला, झलाण्या ।

(ट)

टोर, टांडे, टक्कीवाल,

(ठ)

ठांटवाल या, ढाटघालिया, ढाढ वाडिया, ठागवाल, ठोठरवाले, थालवाण्या,

(ड)

डंटपाल,डंढोरिया, डिडोलया, डेलोला,या,डेरोला,डायल वाल, डोईवाल, डामल वाल, डमाणया, डावरवाडिया ।

(त)

तालचिड़ी, तिगन्या, तेरान, तराने, तोनगरिया, तामडोलया, तालचिड़ा, तलवाण्या, तलाणया, तगाला ।

(द)

दागम, दनेवा, दमचीवाल, दड़वाल, दजड़ या, थिज्जड़, देसोदिया, दन्द्रवाले, दसुदनी, दमन, देनी वाल, देहसी वाल, दाईमा, दानोरिया, दन्देवा, ददवाल, दगेसर, दीहावडा, दरोलिया, ददोल्या, दासरा, दमण, दीपासरा, दापमा, दादरवाल , देहमण ।

(ध)

धामा, धाराणो, धेमन, या-धिमुन्या, धनेरवा, या धानेरवाल, धन्धरी (या) धन्धरीवाल, धरमी (या) धस्मीवाल, धराणवां, धामण, धामूं ।

(न)

नारनोलिया, नीशल, नसपाल, नेपालपुरिया, नागल, नीसांण, नराणया, नेपचवाल, नेराद्पत, नाथल, नगल्या ।

(प)

पीमाडिया, पामर या परमर, परवाल, पालुरिया, प्रनालिया, पड़वाल, पालडया, पुंवाल, पानीवाल, पंडयारा, पेड़ीवाल, पालडिया, पटोदिया, पंचोली, पारेलवाल, पुडानिया, पल्लीवाल, पलवाल, पमार, पाडला, पालेचो ।

(फ)

फरी, फरडोदिया

(ब)

बदले, बोन्दवाल, बड़वाल (या) बाडेवाल्या, बून्दिया, बदूरली बलदा, बीजाणी, या, बीजन्या बोदल्या, बांस, बर्टवा, बेड़ीवाल, बुंवाल, बरलेला, बुन्दर, बीसापती, बाँसड़ा. बरलवा, बेरीवाल, बवेरवाल, बुरडक, बरवाडया, बोरचाडया, बीवाल, बुडेल्या, बूडवाल, बचीया, बरजणया, बामणया, बून्न, बडवाल बोदड़या ।

(भ)

भरोणिया, भिडवाल, भोले, या भोली (या) भेले, भन्द्रानिया, भदेरया, भावलेल, भद्रेरचा, भईयां, भद्राणया, भरेवाडया; भूवाल, भापररोदा, भादवाल, भड़ावा, भावडेल, भूदंड ।

(म)

मैन, मानडिन्या या, माडन्या, मंडीवाल, या मांडीवाल, माडे-या, मनीठिया, मोखरीवाल, मोकरवाल, मंडावरिया, माल, या मालवाल, मेरानिया; मार्गिया, मीसन, मारोढया मेवाड़ा, माली-

डया, मूछाल, मूडेल; सईवाल; मोटरवाल, मालूणया, मेडीवाल, मडावरया, माकड, मोरवाल, मोरीवाल

(र)

रोलीवाल, रोलामा या, रोलावां, राजूतनी, राजोत्या, - राजोरिया, रीक्षावाल, रावतरेट, रीवाडया, रीलेलीवार, रीक्षैया, रूडाइया, रूढ़वाल, रूलया, रोजारा, रोडवाल, रानोडया, रोप, रैत्या, रेवाल, रंगवाया, रीचड़, रूखड़ीवाल, रताघड़ ।

(ल)

लदोडया, (या) नाद्रोरिया, लघोरिया, लूरोल्य, लामड़ीवाल, लोहारिया, (या) लोहानिया लुञा लदोईया लूवाणिया लुंडीवाल ।

(व)

वन्डेला, वछानिया, वन्द्वान्यि, विजोडिया, वालघनी, वफ्फेडया, वडगुआ, वालद्रिया, वीजद्रिया, वुद्दर, वराडया ।

(श)

शाला, शुडानिया

(स)

सामलोद्रिया, या सामलोडिया, सामलीवाल, संगरखानी, सामवील, सीलफ, सूई, सकाल, खाल या खार, सीरूडी या सीरूढी, सहारन, (या) सारन, सम्मी; सांमडीवाल, सैवाल सिरधन्या. सेमा, सीघड़, सीकरन्या, सेदीवाल, सोसानिया, सर्गपा सीलवाल, सीलसी, सोजतवाल, सोमरवाल, सूलाणया, सेईवाल, सामदया, सूवरवाल; सवलोदया, सावड़, सीवाल, सारएया, सोसनीवाल, सोमडवाल, सींगणया, सीलोडया, या सीलोदिया सह्लूवाया सिलोलया ।

(ह)

हरयाने, हरसोलिये, हर्सवाल, हंसवाल, हसेवा, हरसुख, हंसनिया ।

गौड़ोंकाचौथाभेदमैथिलब्राह्मणगौड़

पृष्ठ ११६ से सम्मिलित ।

यह ब्राह्मण मिथिला देश में विशेषकर हैं । इन के ४ भेद हैं १ मैथिल २ सारात्री ३ जोग ४ चंगोल ।

इन के गोत्रों का वर्णन—

गोत्र	उपाधि	स्थान
कश्यप	पाठक	शङ्करी
शाण्डिल्य	ओझा	वर्हियम
वत्स	ठाकुर.	नागवार
सावर्णीय	मिश्र	दादरी
भारद्वाज		
कात्यायन	चन्धरी.	पलरिया
गर्ग		
पराशर		
वैयाघ्रपाद्		
गौतम		
जमदग्नि		

मिथिला देशके वर्तमान प्रभु श्रीमान् महाराज सर रमेश्वर सिंह जी K. C. I. E. इसी ब्राह्मण जाति के भूषण शासन कर रहे हैं । आपने हिन्दू यूनिवर्सिटी खुलवाने में अनन्य परिश्रम किया है । आपके वंश का वर्णन इस प्रकार है ।

सन् ७५६ से ओईनवार मैथिल ब्राह्मण कुलके राजा हुये ।

भैरवसिंह	३६ वर्ष	विश्वास महादेवी	२ वर्ष
देवसिंह देव	६३" "	गङ्गा नारायण	१ "
		हृदयनारायण	३५ "
शिवसिंह देव	३¾" "	हरीनारायण	१४ "
इदमावसिंह देव	६ "	रूपनरायण	१५ "
लखिमामहादेवी	६ "	कंसनारायण	४ "

इसके बाद १० वर्ष तक मिथिला देश बिना राज्य के रहा। फिर खण्डा वलाकुल के नैयायिक महामहोपाध्याय महेश ठक्कुर को अकबर ने मिथिला का राज्य दिया इन के वंश का वर्णन—

१ महेश ठक्कुर १४ वर्ष	महाराज राघवसिंह ३६
गोपाल ठक्कुर १३	" विष्णुसिंह ३॥
शुभङ्कर ठक्कुर ३६	"नरेन्द्रसिंह १७
पुरुषोत्तम ठक्कुर ६	"प्रतापसिंह १५
नारायण ठक्कुर १८	"माधवसिंह १३
मुकुन्द ठक्कुर २७	"छत्रसिंह ३३
महिनाथ ठक्कुर २२	रुद्रसिंह १०॥
	महेश्वरसिंह १०, ७ मास ६ दिन

महाराज लक्ष्मीश्वरसिंह बहादुर G. C. I. E. ३७ वर्ष राज्यकर के १७ दिसम्बर सन् १८६८ को स्वर्गवासी हुवे। अब इनके छोटे भाई श्रीमान् महाराज सर रमेश्वरसिंह जी K. C. I. E. मिथिला देश का शासन कर रहे हैं। ईश्वर करे आप सहस्रों वर्ष राज्य करें॥

गौड़ों का पांचवाँ भेद उत्कल ब्राह्मण

उत्कलेन नृपेन्द्रेण पुरा स्वविषये द्विजाः।
गङ्गातटस्थिताः केचिच्चानाय्य विषये स्वके॥
पुरुषोत्तम पुर्या वै जगदीशस्य सेवने।
यज्ञान्ते स्थापयामास स्वनाम्ना तान् द्विजोत्तमान्॥
ते द्विजाश्चोत्कला जाता जगदीशस्य सेवकाः।

अर्थात् उत्कल देश के राजा ने गङ्गा जी के तट से अपने देश में ब्राह्मण बुलाये इन से यज्ञ कराया और अपने देश के नाम से इन का नाम तैलङ्ग ब्राह्मण किया। ऐसा ही हरिवंश पुराण के १० वें अध्याय में लिखा है।

पूर्वोक्त प्रमाण से सिद्ध है कि यह भी गौड़ ही तैलङ्ग में बसगये क्योंकि गङ्गा के तट पर गौड़ ही थे।

यह जाति उत्कल (उड़ीसा) में है। इनके ३ उपभेद निम्न लिखित हैं—

१ भेद

गोत्र	उपाधि
शंकुकर	ओझा
काश्यप	तिवारी
घृतकौशिक	मिश्र
भारद्वाज	शतपथी
गौतम	पाफे
मुद्गल	„
वशिष्ठ	रह
कपिलध्वज	नन्द
धरगौतम	दस
अत्रेल	शाङ्गी

२ भेद

गोत्र	उपाधि
काश्यप, गौतम	महापुत्र
„	पंडे
„	शावूथ
शम्भुकर, भारद्वाज, मुद्गल	सेनापति
„	नेकाव, मेकाप
गौतम	पथि
भारद्वाज	पालि
गौतम	सोथरा

—o—

३ भेद

इस की ४ श्रेणि हैं

१—श्रेणी दक्षिण

गोत्र	उपाधि
शंम्भुकर	मिश्र
भारद्वाज	नन्ध
गौतम	कोठा
मुद्गल	शतपथी
धरगौतम	त्रिपाठी
अथ्रेल	रथ
वशिष्ठ	शाङ्गी
घृतकौशिक	अचारजी
	महापात्र
	दास
गौतम	पश्यालोक
„	वरु
काश्यप	सुधीरथ
„	दोयथा
मुद्गल	पर्यारी
गौतम	खुन्ते
	दारावरु
धरगौतम	वाहाक

—o—

३ भेद

२ श्रेणी आजपु

गोत्र दक्षिण श्रेणी के समान

३ श्रेणी पनयारी

गाञ	उपाधि	उपाधि
दक्षिणी श्रेणी के समान	मिश्र	पार्थ
	पाँडे	झर
	महिंथी	पञ्जि
	पण्डा	पञ्जिग्राही
	नायक	लौधरा
	शाकुथ	दास
	सेनापति	
	नेकाव मेकाव	

——०——

४ थे श्रेणी

दक्षिण श्रेणी के समान

पञ्चद्राविड (Southern Division) ब्राह्मण

कर्णाटकाश्च तैलङ्गा महाराष्ट्राश्च द्राविडाः ।
गुर्जराश्चेति पञ्चैते द्राविडा विन्ध्यदक्षिणे ॥

१ कर्णाकट २ तैलङ्ग ३ महाराष्ट्र ४ द्राविड ५ गुर्जर यह विन्ध्याचल के दक्षिण निवासी ५ द्राविड हैं।

द्राविड देश

वेंकटाचलमारभ्य कुमारिकन्यकावधि ।
द्राविडाख्यो महादेशः सर्पाकारेण संस्थितः ।
तत्र स्थिता च ये विप्राः द्राविडास्ते प्रकीर्तिताः ॥

वेंकटाचल से लेकर कन्या कुमारी तक सर्पाकार जैसा द्राविड देश है, वहां के निवासी ब्राह्मण द्राविड नाम से विख्यात हैं ।

पञ्चद्राविड़ों का प्रथम भेद

कर्णाटक ब्राह्मण

कर्णाटक देशपरिमाण

कृष्णाया दक्षिणे भागे पूर्वे वै सह्यपर्वतात् ।
उत्तरे हिम गोपालाद् द्रविडाश्चैव पश्चिमे ॥
देशो कर्णाटको नाम—

अर्थात् कृष्णा नदी के दक्षिण भाग में सह्याद्रिपर्वत से पूर्व, हिम गोपाल से उत्तर, द्रविड देश से पश्चिम में कर्णाटक देश है ॥

कर्णाटक ब्राह्मणों की उत्पत्ति-

तत्रस्यश्चमहीपतिः ॥
स्वदेशे वासयामास महाराष्ट्रोद्भवान् द्विजान् ।
तेभ्यश्च जीविका दत्ता ग्रामाणि विविधानि च ॥
कविर्यादि नदी संस्थदेवतायतनानि च ।
स्वदेश नाम्ना विख्यातिं प्रापिता तेन भूभुजा ॥
ते वै कर्णाटका विप्रा वेद वेदाङ्गपारगाः ॥ ब्रा० मा०

अर्थ—कर्णाटक देश के राजा ने अपने देश में महाराष्ट्र ब्राह्मण बसाये उनको जीविका, ग्राम, मन्दिर आदि दिये । अपने देश के नाम से उस राजा ने ब्राह्मण अर्थात् कर्णाटक ब्राह्मण ऐसा नाम किया वह वेदवेदाङ्गों के जानने वाले हुए ॥

कर्णाटक के किस राजा ने किस समय में बसाये यह ज्ञात नहीं हुआ ।

कर्णाटक ब्राह्मणों के ८ उपभेद हैं १ हैग २ कान ३ शिवेलरी ४ वारगीनारा ५ कंदाव ६ कर्णटक ७ मैसूर कर्णाटक ८ सिरनाद ।

अपश्यामना स्वपतिं चोत्थानसमये तदा ।
मां विहाय कुतो चायं संगच्छतिति च ॥
विशंकमानां भर्तारमागतं तमपृच्छत ॥
क यासि नित्यं भो स्वामिन् इति पृष्टे स चाऽब्रवीत् ।
काशीं गमिष्य इति तामुक्ते सा पुनरब्रवीत् ॥
अहो ! नित्यं मां विहाय कथं काशीं गमिष्यति ।
अहमप्यागमिष्यामि श्वः प्रभृत्येव निश्चिम् ॥
तथेत्युक्त्वा स नृपतिस्ततः प्रभृति नित्यशः ।
गत्वा स्वभार्यया सार्कं स्नानं पूजां विधाय च ॥
पुनः स्वभवनं यातीत्येवं नित्य क्रमे सति ।
एकस्मिन् दिवसे तस्य भार्या भागीरथी तटे ॥
गमनावसरे तीर्थात् पुष्पिण्यभवत्तदा ।
तस्मिन्नेव दिने राजा नगरं शत्रु वेष्ठितम् ।
ज्ञात्वा स्वसिद्धियोगेन चिन्तयामास तेनस ।
रजोऽन्ते यदि गच्छामि राज्यं शत्रुर्ग्रहीष्यति ॥
त्यक्त्वैनां यदि गच्छामि धर्मशास्त्रे हि दूषणम् ।
'नरैर्यात्रा न कर्तव्या येषां भार्या रजस्वला' ॥
(इति चिन्ताहृदाविष्टो विप्रान् ज्ञापयामास सनृपः)
तदा ते सर्वे विदुषो विलोक्य नृपसंकटम् ।
युष्मज्ञाया तु योग्यासीद्गमने च त्वया सह ॥
इति तद्वचनं श्रुत्वा नृपो हर्ष समन्वितः ।
भार्यां गृहीत्वा निरगात्तदा राजानमब्रुवन् ॥
राजन् त्वया रक्षितव्या वयं सर्वे च दुःखतः ।

राजा उवाच—मयि स्थिते च युष्माकं का विपत्तिर्भविष्यति ।

तथाऽपि युष्माकं दुःखं भवेच्चेन्निकटे मम ।
आगन्तव्यमिति प्रोक्ता नत्वा भार्यां प्रगह्य च ॥
आगत्य नगरं स्वं वै रिपून् निर्जित्य चैकदा ।

धर्मेण राज्यमकरोत्ततः कालान्तरेण च ॥
वाराणस्यामनावृष्टिदोषेण सर्व ऋत्वजः ।
दुःखितास्त्वभवंस्तत्र कुर्वन्ति पुण्य कर्मणि ॥
सभां कृत्वा द्विजाः सर्वे निश्चयं चक्रुरादरात् ।
पूर्वं धर्मव्रतेन नाऽस्मभ्यमुक्तं किमिति श्रूयताम् ॥
विपत्ति काले युष्मान् वै रक्षिष्यामीति निश्चितम् ।
अतो वयं तन्निकटे गमिष्यामो न सशिष्यकाः ॥
इति निश्चित्य निरगुः संप्राप्ता नगरं प्रति ।
स्वागतं चाब्रवीद्राजा बहुमान पुरः सरम् ॥
अर्घ्य पाद्ययुतान् कृत्वा तत्र चावसयच्च तान् ।
औत्तरेयास्त्वभवन् तैलङ्ग ब्राह्मणा इति

अर्थ—जैमुनि देश में बड़ा प्रतापी धर्मात्मा धर्मव्रत नाम का राजा हुआ। वह नित्य ही अपनी सिद्धि के बल से काशी जाता था। एक दिन उस की रानी ने पूछा कि आप नित्य मुझे छोड़ कर कहां जाते हो तब उस ने कहा कि मैं श्रीकाशी जी पूजार्थ जाता हूं रानी ने कहा कि मैं भी साथ ही चला करूंगी। ऐसे वह दोनों नित्य अपनी सिद्धि से काशी जाते और फिर लौट आते थे एक दिन काशी में रानी रजस्वला हो गई, तब राजा ने अपने योग बल से जाना कि राजधानी को शून्य पाकर शत्रु चढ़ आया है इधर रानी रजस्वला इसे छोड़ कर जाना योग्य नहीं फिर पण्डितों से पूछा तब धर्म शास्त्र पण्डितों ने कहा आप के साथ आपकी स्त्री जाने योग्य है कोई दोष नहीं तब उनकी आज्ञा से वह चलने लगा। ब्राह्मण बोले कि राजन् हमारी रक्षा करना, राजा ने कहा, कि मेरे होने पर तुमको क्या पीड़ा हो सकती है, तो भी यदि कोई विपत्ति आजावे तो मेरे पास आजाना। यह कहकर चल दिया। अपनी राजधानी को पाकर शत्रु को जीत कर फिर धर्म से राज्य करने लगा।

इसी समय में अब कभी वृष्टि न होने के कारण काशी में दुर्भिक्ष होगया तब सब मनुष्य क्लेश को प्राप्त हुये तब ब्राह्मणों ने सभा कर विचार किया कि अब चलना चाहिये । तैसे ही वह सब शिष्यों के साथ चलदिये । धर्म व्रत की राजधानी में पहुंचे राजा ने सत्कार करके आने का कारण पूछा तब उन्हों ने सब कह सुनाया । राजा ने यथा योग्य सम्मान पूर्वक उन को ग्रामादि देकर बसाया । इस प्रकार यह उत्तर देश वासी तैलङ्ग ब्राह्मण कहलाये ॥

इनके ८ भेद निम्न लिखित हैं

१-तैलघानीयम्	५-काशलनानी
२-वेल्लनाती.	६-करनकम्मा
३-वेङ्गीनाती	७-नियोगी
४-मुरकिनाती	८-प्रथमशाखी

इन के गोत्रादि अन्य ब्राह्मणों के समान हैं ।

पञ्चद्राविड़ों का तृतीय भेद

महाराष्ट्र ब्राह्मण ॥

आसीन्नृपो महातेजाः पुरुवंश कुलोद्भवः ।
महाराष्ट्रेति विख्यातो यस्य राज्यं महत्तरम् ॥
तेनाऽयं भुवि विख्यातो विषयो राष्ट्रसंज्ञकः ।
महाराष्ट्र प्रपूर्वश्च यस्य पूर्वे [illegible] ॥
सह्याद्रिः पश्चिमे प्रोक्तः तापी चैवोत्तरे स्थिता ।
कृष्णा [illegible] ग्रामा दक्षिण संस्थिता ॥
तत्र राज्य प्रकर्ता वै महाराष्ट्र नृपोत्तमः ।
यज्ञार्थे कृतसंकल्पो राजाऽसौ दीक्षितो यदा ॥
आहूताः ब्राह्मणास्तेन विन्ध्योत्तरवासिनः ।
तैस्तदा कारितो यज्ञो विधि पूर्व द्विजोत्तमैः ॥

तेन राजा प्रसन्नोऽभूद्दौ दानान्यनेकशः ।
गोभू हिरण्य वस्त्राणामन्नस्य च विशेषतः ॥
स्वदेशे वासयामास तान् द्विजान् यज्ञमागतान् ।
स्वानाम्ना ख्यापयामास दत्वा ग्रामान् सदक्षिणान् ॥
तपति पर्व रागोदा भीमा कृष्णा तट स्थितान् ।
तेन जाता महाराष्ट्रब्राह्मणाः शंसित व्रताः ॥

अर्थ—पुरुरव के कुल में एक राजा बड़ा प्रतापी हुआ जिसका राज्य महाराष्ट्र कहलाया । महाराष्ट्र देश से विदर्भ पूर्व, सह्याद्रि पर्वत पश्चिम, तापी नदी उत्तर में है, वहां के राजा ने यज्ञ किया तब उसने विचार कर विन्ध्योत्तर वासी ब्राह्मण यज्ञ कराने के लिये बुलाये, यज्ञ करने के पश्चात् यह इनको ग्राम, दक्षिणा आदि देता भया । तब उस महाराष्ट्र राजा ने अपने देश के नाम से ब्राह्मणों को विख्यात अर्थात् महाराष्ट्रब्राह्मण किया ॥

महाराष्ट्र ब्राह्मणों के गोत्र ।

वत्स	भार्गव	वैतहव्य
पराशर	जमदग्नि	शौनक
कौशिक	अगस्ति	कण्व
भारद्वाज	कौण्डिन्य	अघमर्षण
वशिष्ठ	विश्वामित्र	त्रिन्दिनदैव
काश्यप	शौनस	पैथिनस
अत्रि	शालङ्कायन	धृति
उपमन्यु	कुत्स	चवर
कृष्णात्रि	श्रीवत्स	अंगी
गार्ग	रैभ्य	
शांडिल्य	शाकटायन	
गौतम	मुद्गल	
वात्स्यान	माण्डव्य	
वात्स्य	गालव	
गार्ग्य	गृत्समद्	

महाराष्ट्र ब्राह्मणों के निम्न लिखित १४ विभेद हैं

१ कहाडे	८ नार्मदी
२ कोङ्कणस्थ या चित्तपावन	९ मालवीय
३ देशस्थ	१० देवरुखे
४ यजुर्वेदी	११ कार्वो
५ अभीर	१२ किरवन्त
६ मैत्रायण	१३ शवसे
७ चरक	१४ त्रिगुळ

१ कहाडे के निम्न लिखित गोत्र हैं—

काश्यप	बादरायण	कौशिक	वत्स	मुद्गल
अत्रि	(भर्भरे)	नैध्रुव	भार्गव	वैन्य
भारद्वाज	कौण्डिन्य[रिंगे]	गौतम	पार्थिव	शांडिल्य
	उपमन्यु [टिके]			
वशिष्ट	अङ्गिरस (धमनकर)	गार्ग्य	विश्वामित्र	कुलश
	लोहिताक्ष [ओझे]			

२ कोङ्कणस्थ ब्राह्मणों के गोत्र ।

गोत्र	उपाधि	गोत्र	
कश्यप	जोशी	शांडिल्य	जोशी
आवटलार	जोगा	असित	दातार
नैध्रुव	लेले	देयल	फेलढाकर
	लावते		सैले
	उमले		तुलपुठे
	फलके		काले
	सिन्तरे		

उपाधि नाम

भानु	गोडशे	सोमन
कानेरे	पाटनकर	खिंतरे
गोखले	विद्वांसः	वाहिरे
खाडिलकर	विद्सुरे	तिहाक
वैवलकर	निद्सूरे	भोयले
वेलनकर	घानवनकर	थांकर
लंकले	नावनकर	दामले
घाद्ये	उगुल	पाग्छुरे
कर्मारकर	नरवाने	व्याम
छत्रे	कुटुम्बये	पावशी
भट्ट	पलहनीकर	डोनरे
दानिर	राणे	कोशरेकर
पेटकर	वेडरे	अमडेकर
काटराने	वांद्रे	मान्ते
थोसरे	गोवालकर	लावनकर
खेतरे	गनुपुले	सिद्ये
तैत्तर	काणे	
गानु	सहस्त्रबुद्धे	
मिशोरे	रिसवुद	
कानडे	टकले	

पुरुकुत्स	पुरु कुत्स
त्रसदस्यु	त्रसदस्यु
[illegible]	नित्कुन्न
इस गोत्रज	इस गोत्रज
महेदले	सहस्त्र-बुद्धे
शिद [illegible]	भीद

देव	दीभपलकरे
परांजपे	वैशम्पायन
ओकिलकर	भाड भाके

—०—

गोत्र	नाम उपाधि	
आत्रेय	जोग लेकर	अथवले
	भाड भोगे	भाडकर
अर्चनानास	वापेकर	भोने
श्यावाश्व	चिपोलकर	चोलकर
	फड़के	
	चिपलकर	
	चिताथे	

—०—

भार्गव

	उपाधि		उपाधि
च्यवन	भागवते	च्यवन	जोशी
आप्नव	पेंडशे	और्व	गागरे
औरव	कुन्ते	जामदग्न्य	काले
जामदग्न्य		घटस	उकादवें
			मालशे

अङ्गिरा

वहिस्पत्य	सैयन्य	अमहियव
भारद्वाज	गार्ग्य	औक्ष
इन गोत्रों के उपाधि नाम	उपाधि नाम	उपाधि नाम
गोखले	जोशी	माणे
पित्रा	थोराट	लिम्ये

मनोहर	घ्राणेकर	दलाले
घागलकर	भागवते	डौल
वैसास	कार्वे	खावटे
देव	भांगलेकर	सराटे
सोवनी	केतकर	विद्यानस
रानडे	गोरे	करन्दीकर
टैनेकर	लोन्धे	गोले
जोशी	वत्से	रटाटे
धांगूरडे	भुसकुटे	मैदेय
अच्छा वाला	मति	भागवत
आवळे	सुतार	लिमये
राहालकर	वैद्य	
कारलेकर	वेदेकर	
	भट्ट	
	दावक	
	महेशकर	
	खान्वेटे	
	पौलबुधे	

—०—

वसिष्ठ

इन्द्रप्रमद			मैत्रावरुण
अभिरद्वसु			कौण्डिन्ये
उपाधिनाम			उपाधिनाम
मोडक	साध्यै	साथे	पटवर्धन,
दान्दिकर	धारु	अभ्यङ्कर	अचारी
दातार	ओक	नाटू	फणशे
विनोद	गोकते	कारूलकर	वागुला

भरत कन्डे	बोड़शे	पोणकशे	विन्झे
कार लेकर	डोनकर	दान्त्ये	महाबल
पापट	खरपूरे	गोवर्ते	भभे
पेन्ध्ये	क़ोपारकर	वैद्य	शावरकर
		पर्वत्ये	दिवेकर

विश्वामित्र ।

	उपाधि			
अघमर्षण	वाला	अघमर्षण	पाल्हण्डे	गोडबोले
बाभ्रव	विहरी	कौशिक	शतकर	शेण्डे
		उपाधि-	फाटके	कोल्टकर
		खरे	पटकर	पेडकर
		गडरे	बाम	आगाशे
		देवधर	आपटे	
		वर्तक	वांपये	
		वाद्	कान्तिकर	
		भावये	देवल	
		बारवे	कावनंकर	

श्रीयुत आपटे, इसी वंश के भूषण थे । आपने संस्कृत कोष बनाया है ।

सुना जाता है काशी के बाल शास्त्री भी इसी वंश के रत्न थे। आपने महाभाष्य और काशिका का प्रथम ही संस्करण निकाला था ।

'बोडशे' वंश में पं० राजाराम शास्त्री बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति हो चुके हैं । इन्हों ने ही ऋग्वेद का संशोधन किया था ।

काव्य माला के सहकारी सम्पादक काशीनाथ शास्त्री भी इसी महाराष्ट्र सम्प्रदाय में बड़े विद्वान् हुवे हैं ।

आनरेबल स्वर्गवासी पं० गोपालकृष्ण गोखले

(B. A. L. L-B. C. I. E.)

ऐसा कौन पुरुष होगा जिसने आपका नाम न सुना हो। आप का जन्म सन् १८६६ ई० में कोल्हापुर नगर में हुआ आपने सन् १८८४ ई० में बी० ए० पास किया और लोकोपकारार्थ फर्गुसन कालेज पूना में ७०) रु० मासिक पर इतिहास तथा राज नैतिक विषयों के प्रोफेसर नियत हुये और फिर उसी कालेज में प्रिंसिपल होगये। सन् १८८७ ई० में क्वार्टरली जनरल आफ सार्व जनिक सभा पूना के सम्पादक का काम संभाला उसके पश्चात् दक्षिण सभा के आनरेरी सेक्रेटरी नियत किये गये। इसी बीच में अंग्रेजी मरहटी साप्ताहिक सुधारक के भी सम्पादक रहे। बोम्बे प्रोवेंशियल कान्फ्रेंस पूना के सेक्रेटरी पद पर भी चार वर्ष तक कार्य करते रहे। पूना सम्बन्धी कार्यों से इनका आसन इतना ऊंचा होगया कि लोग इन्हें दक्षिण का तारा कह कर पुकारने लगे। १८६७ ई० में फिर मि० वाचा के साथ आपको बम्बई की प्रजा ने इङ्गलेण्ड भेजा वहां इन्हों ने जा कर प्रजा की ओर से बड़े प्रभावशाली व्याख्यान दिये।

कुछ दिन पीछे ये (Bombay Legislative Council) के सभासद नियत हुये १६०२ में आपने ३५ रु० मासिक पैन्शन लेकर फर्गुसन कालेज को छोड़ दिया। लाट साहब की कौंसिल में मि० गोखले ने प्रजा संबंधी अनेक लाभदायक व्याख्यान देकर देश को लाभ पहुंचाने में अत्यन्त यश प्राप्त किया है। नमक पर जो महसूल घटाया गया था वह मि० गोखले के ही उद्योग का फल था। यद्यपि इन्होंने लाट साहब की कौंसिल में कड़ी से कड़ी वक्तृतायें दीं तथापि लार्ड कर्जन जैसे कड़े वायसराय ने भी इनकी बुद्धिमत्ता की अत्यन्त प्रशंसा की और इनको सी० आई० ई० की

पंडित गोपाल कृष्ण गोखले, सी. आई. इ

पद्वी देकर सुशोभित किया १९०५ ई० पुनः बंबई की प्रजा ने आपको इंगलैण्ड भेजा; वहां उन्होंने ५० दिन में ४५ प्रभावशाली वक्तृतायें देकर इंगलैण्ड वासियों को भारत राजनीति का दिग्दर्शन करा दिया उसी समय यह इण्डियन नेशनल कांग्रेस के सभापति चुने गये। १९०८ ई० में आपको लार्ड मिण्टू की सुधार स्कीम के लिये पुनः इङ्गलैण्ड जाना पड़ा।

मिस्टर गोखले मृत्यु पर्यन्त देश सुधार के लिये तन मन धन से उद्योग करते रहे और दक्षिण अफ्रीका में कुली प्रथा आपके ही प्रयत्न से बन्द हुई १९ फर्वरी सन् १९१५ ई० को इस असार संसार को छोड़ कर आप स्वर्गगामी होगये।

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक।

(B A. L L. B)

२३ जौलाई सन् १८५६ ई० को रत्नगिरी में श्रीयुत गंगाधर रामचन्द्र तिलक के घर में आप का जन्म हुआ। आपके पिता रत्न गिरी में अध्यापक थे। और थाना और पूना के डिप्टी एजूकेशनल इंस्पेक्टर भी थे। वे बड़े विद्वान् और साहसी पुरुष थे। इसी कारण बालगंगाधर तिलक की बुद्धि और योग्यता अपने पूर्वजों के संस्कारानुक्रम प्राप्त हुई थी। आप के पिता का १८७१ ई० में परलोक हुआ। उस समय आप की आयु १६ वर्ष की थी। और कोई सहारा आप के पास नहीं था। इन्ट्रेंस की परीक्षा पास करने के पश्चात् आप १८७६ में बी० ए० की परीक्षा में उत्तीर्ण होगये और सन् १८७९ में आप ने L. L. B. की उपाधि को प्राप्त कर लिया।

विद्या प्रचार का आप को आरम्भ ही से प्रेम था और सन् १८८० में विष्णुकृष्णा चिपलंकार नाम जोषी और मि० तिलक ने मिलकर एक नवीन स्कूल की स्थापना की। और मि० अगरकार M. A. और मि० आप्त एम० ए० ने इस मंडली में मिलकर भारी सहायता की और इन सब के उद्योग से मरहटा और केसरी नामक पत्र आर्य भूषण यन्त्रालय से निकल के विख्यात हुए। कोलापुर रियासत के

कार्य सम्बन्ध पर टीका टिप्पणी करने के कारण इन समाचारों पर अभियोग चलाये गये। और यह प्रथम अवसर था जिस में मि० तिलक को ४ मास का दण्ड धारण करना पड़ा।

मि० तिलक और नाम जोषी निराश नहीं हुवे और कार्य को बराबर संचालित करते रहे १८८४ में पूना की एज्यूकेशन सोसाइटी की स्थापना की गई और इन के साथ प्रोफेसर केलकर धरप, और गोल, ने मिलकर १८८५ ई० में फर्गुसन कालिज की नीव डाल दी और सन् १८९० मे तिलक महाराज ने शिक्षा सम्बन्धी कार्य से हाथ खेंच लिया। दूसरे साथियों के मर जाने और पृथक् होजाने के कारण दोनों समाचार पत्रोंका सम्पादन तिलक ने स्वयं लेलिया अङ्गरेजी भाषा को छोड़कर संस्कृत में भी आपको अद्वितीय याग्यता होने के कारण आपने वेदोंकी प्राचीनता का अन्वेषण करना आरम्भ किया और इस कार्य में अपना बहुत समय लगाकर वेदोंके सम्बन्धमें १८९२ की Intor national Congress of Orential जा लंडन में हुई थी उस में अपने लेख भेजे थे।

Indian National Congress के कार्य में भी यह अधिक भाग लेते रहे और Deccan standing commitee के मंत्री पद पर कार्य करते रहे। १८९६ ई० में जब बड़ा भारी दुर्भिक्ष पड़ा था। उसमें मि० तिलकने दुखी और पीड़ितों के लिये कष्ट उठा कर पूने मे सस्ते अनाज की दुकानें खुलवादी। शोलापुर और नागपुर में जहाँ उन दिनों प्रजा अत्यन्त दुखी थी सरकार की सहायता से अकाल पीडित प्रजा के लिये अनेक प्रकार के कार्य्य खोले गये। जिससे प्रजा को अधिक लाभ हुआ।

वेदों की प्राचीनता पर अन्य भी कई लेख इंग्लैण्ड में भेजे जिन से आप को वहां पर बड़ी प्रसिद्धी प्राप्त हुई है। और मरहटा और केशरी समाचार के सम्पादकीय में अनेक बार जो आपत्तियों का सामना किया यहां तक कि सन् १९०८ ई० मे ६ वर्ष का

लो. पंडित बाल गंगाधर तिलक, (पुना).

कारावास प्राप्त हुआ। उस समय में भी आपने अन्य कई विविध गीताओं से लेकर गीता का मरहटी भाषा में भाष्य किया। और उसमें अनेक स्थानों पर अन्यान्य युक्तियों तथा मतभेदों को खोलते हुये विलक्षण विचारों को प्रकट किया है।

इस समय आप भारतवर्ष में अद्वितीय यश प्राप्त कर रहे हैं आप अंग्रेजी तथा संस्कृत के अद्वितीय विद्वान् हैं और इतने प्रजावात्सल्य हैं कि भारतवर्ष आपको महाराजा तिलक कहकर पुकार रहा है। परमात्मा आपको दीर्घायु करें जिससे कि भारत का कल्याण हो।

श्रीयुत् पण्डित बालशास्त्री रानडे

रानडे वंश के एक विद्वान् गोविन्द शर्मा दाक्षिणात्य काशी में रहते थे। यह विद्वान् कल्पसूत्रों के अद्वितीय ज्ञाता थे। आपके उत्तर अवस्था में बालशास्त्री का जन्म सं० १६०१ में हुआ। पिता ने विश्वनाथ नाम रक्खा था। शास्त्रीजी के जन्म के ५वें वर्ष बाद ही पिता का देहान्त हुआ इधर इनके गुरूजी ने उपनयन कराकर यजुर्वेद पढ़ाना प्रारम्भ किया। आपके वाक् चातुर्य से चित्रकूट निवासी श्री विनायकराव राजा अत्यन्त संतुष्ट हुवे। ६ वें वर्ष में पद, क्रम पढ़े। पुनः वहां से सत्कार पाकर ब्रह्मावर्त क्षेत्र में होते हुवे गालव क्षेत्र में आकर श्रीकृष्णाशास्त्री से पढ़कर काशी में आये। इस बीच मे श्रीमोर शास्त्री महाराज पूना के साथ आये वह आपको अपने साथ ले गये। पुनः राजाराम शास्त्री के पास आप अध्ययनार्थ काशी आये। २५ वर्ष की अवस्था में संस्कृत, कालिज काशी प्रिंसिपल महोदय ग्रिफिथ साहिब ने इनको सांख्य शास्त्र का अध्यापक नियत किया। इसी अवसर में शास्त्रीजी ने महाभाष्य, काशिका, विधवोद्वाह शंका समाधि इत्यादि ग्रन्थ सम्पादन व निर्माण किये। तथा संस्कृत कालिज से

निकलने वाले प्रसिद्ध "काशी विद्या सुधा निधि" मासिक पुस्तक द्वारा परिभाषेन्दुशेखर, प्रत्यभिज्ञा दर्शन प्रभृति कई ग्रन्थ निकाले । शास्त्री की प्रतिष्ठा कई राजा महाराजा भी करते थे । कांगडा जिले की मण्डी राजधानी के महाराजा विजयरत्नसेनजी ने इनसे गुरु मन्त्र लिया था । काश्मीर की परीक्षा व्यवस्था आप ने की । बुन्दी महाराज की प्रार्थना से यज्ञ कराया । इसी बीच में इनके गुरु राजा राम शास्त्री के देहान्त होने पर कालिज के धर्म शास्त्राध्यापक हुवे और उनकी व्यवस्थाओं का कार्य भी आपको ही करना पड़ा । १५ वर्ष नौकरी करके सं० १६४३ में आपने छोड़ दी आपके पुत्र नहीं हुवे एक कन्या हुई थी । आपने एक मन्दिर प्रतिष्ठा करके सम्वत् १६४३ वै० में नश्वर शरीर को त्याग दिया ।

शास्त्री जी उस समय के काशी के विद्वानों में धुरन्धर संस्कृत के विद्वान् थे ।

रा० रा वे० शा० वासुदेव शास्त्री ।

का जन्म भारद्वाज गोत्र में कोंकणमदेशगत गोवा प्रांत मेके पेडणेंग्राम में शके १७८२ के ज्येष्ठ शुद्ध १० के दिन हुआ इन के पिता के लक्ष्मणभट्ट जी वैदिक, याज्ञिक, ज्योतिर्विद्या, पुराण, वचन इत्यादि अनेक विषयों में विख्यात थे ऐसी तिस प्रांत में बड़ी ख्याति है तिनां के ही पास वासुदेव शास्त्री का बाल शिक्षण हुआ पन्द्रह वरसके बाद काव्य' व्याकरण इत्यादि विषयों के अभ्यास के वास्ते शास्त्री जी कोलापुर प्रांत में गये और तत्रस्थ विद्वद्वर कांताचार्य पंडित राव के पास दस वर्ष तक शास्त्रीय शिक्षण हुआ और २५ पच्चीसवें वर्ष वम्बई में आये कर्म, धर्म, योग से इसी वक्त वम्बईस्थ सुप्रसिद्ध नागरिक और निर्णयसागारके मालिक शेठ जावजी दादा जी से परिचय होकर उक्त शास्त्री जी की निर्णय सागर में ग्रंथ संशोधन के कार्य में योजना हुई सेठ जावजी दादाजी की गुणग्राहकता से शास्त्री जी की योग्यता श्रेष्ठि जी के ध्यानमें आयी और

महाराष्ट्रकुलभूषण

वे. रा. रा. वासुदेवशास्त्री पणशीकर.

अनेक शास्त्रीय व इतर लोकोपयुक्त ग्रन्थ प्रसिद्ध करने में श्रेष्ठि जी को उक्त शास्त्रीजी का साहाय्य हुआ सेठ जावजी दादाजी तथा इन्हों के पश्चात् भी तिन्होंके चिरंजीव सेठ तुकाराम जावजी ने भी अपने पिता जी के सदृश अनेक दुर्लभ संस्कृत ग्रंथ संपादन कर प्रसिद्ध करनेका क्रम वैसाही प्रचलित रक्खा है और तिसको भी शास्त्रीजी का अत्यंत साहाय्य होता है प्रस्तुत निर्णय सागर की सर्वत्र जो कीर्ती विकसित हुई है तिस के प्रस्तुत शास्त्री जी अंशतः कारण हैं ऐसा लिखने में अतिशयोक्ति नहीं होवे आज तक शास्त्री जी के ग्रंथ संपादकत्व व और संशोधकत्व में जो जो ग्रन्थ प्रसिद्ध हुऐ हैं तिन में कितने एक लिखे जाते हैं:—

१—ब्रह्मकर्मसमुच्चय

२—ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य

३—भगवद्गीता ८ व्याख्याष्टक

४—अद्वैतसिद्धी

५—शास्त्रदिपिका

६—चिरसुखी

७—प्रयोग पारीजातक

८—सिद्धान्त कौमुदी तत्व बोधिनी

९—शुक्लयजुर्वेद संहिता उवट महीधर भाष्य

१०—योग वासिष्ट सटीक इत्यादि इत्यादि

श्रीयुत डाक्टर रामकृष्ण गोपाल भांडारकर

आपके पिता मलवान में नौकर थे वहाँ से राजपुर आये सन् १८४७ में रत्नागिरि आये यहां इन्होंने अपने पुत्र रामकृष्ण को पढ़ाना प्रारम्भ किया। सन् १८५३ में आपको वम्बई एलफिन्स्टन् कालिज में भेज दिया। सन् १८५६ में मैट्रिक १८६१ में एफ० ए० १८६२ में बी० ए० और सन् १८६३ में एम० ए० किया सन् १८६४ में हैदराबाद सिन्ध में हेडमास्टर हुये। सन् १८६४ में इन्होंने

अपनी संस्कृत प्रथम पुस्तक छपाई सन् १८७३ में बम्बई यूनिवर्सिटी के फेलो चुने गये सन् १८७५ में रायल एशियाटिक सोसाइटी के सभ्य हुये सन् १८८५ में गार्टिंगेन यूनिवर्सिटी ने पी० एच० डी० की उपाधि दी और सन् १८८७ में भारत सरकार ने सी० आई० ई० की पदवी से सुशोभित किया । सन् १८७६ से इन्हें पुरातन पुस्तकों के अन्वेषण का कार्य दिया गया । सन् १८६६ में पेंशन लेकर सब कार्य छोड़ दिये थे परन्तु सर्कार ने आपको अब वाइस चांसलर बनाया है इन्होंने रिपोर्टें आदि अच्छी लिखी हैं बड़े योग्य पुरुष हैं ।

श्री पं० अप्पा शास्त्री विद्यावाचस्पति ।

कोल्हापुर राज्य में राशिवड़े कर ग्राम में पंडित शम्भु भट्ट सदाशिव अग्निहोत्री ऋग्वेदाध्यायी रहते थे आप संस्कृत ज्योतिष वेद, और कर्मकाण्ड के अच्छे विद्वान् थे । आपके शाके १७६६ कार्तिक शुक्ल १३ को एक पुत्र रत्न का जन्म हुवा । आपने इनका नाम अप्पाशास्त्री रक्खा आपकी प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही समाप्त हुई कविता शक्ति की जागृति हुई रघुवंश पढ़ते हुवे कालिदास के श्लोकों को आप अपने रचित श्लोकों में बदलने लगे । १३वें वर्ष में ही आपने १ पञ्चांग बना दिया था । पाट ग्राम में हरि शास्त्री के पास आप काव्य पढ़ते रहे फिर कोल्हापुर में पं० श्री कान्ताचार्य के पास तर्क शास्त्र और मीमांसा पढ़ने लगे । परन्तु विशेष रुचि आपकी काव्य शास्त्र की ओर रही । आप संस्कृत अद्वितीय लिखते थे । वाण भट्ट के समान आपकी संस्कृत होती थी ।

वङ्गरत्न श्री जयचन्द्र सिद्धान्त भूषण भट्टाचार्य एक संस्कृत चन्द्रिका नामक संस्कृत पत्रिका वङ्गाल से निकालते थे । एकवार मातृभक्ति विषय पर लेख लिखने वाले को पारितोषिक का विज्ञापन उन्होंने निकाला यह पुरस्कार अप्पा शास्त्री को दिया गया तब से आप संस्कृत चन्द्रिका में नियम से लेख लिखने लगे

विद्यावाचस्पति श्रीअप्पाशास्त्री राशिवडेकर ।

इंडियन प्रेस, प्रयाग ।

इसके बाद पं० जयचन्द्र जी के अत्यन्त आग्रह से इनको सहकारी सम्पादक बनना पड़ा । पं० जयचन्द्र जी ने चन्द्रिका का कार्य छोड़ कर काशी निवास किया कार्य सब अप्पा शास्त्री ही करते थे परन्तु सम्पादक पं० जयचन्द्र को ही लिखते रहे । संस्कृत में सामयिक पत्रों के चालन की परिपाटी शास्त्री जी से ही चली । परन्तु चन्द्रिका मासिक थी अतः शास्त्री जी ने एक साप्ताहिक पत्र "सूनृत-वादिनी" भी निकाला । कोल्हापुरके महाराज वैदिक धर्मके अधिकारी हैं या नहीं इस विषय पर बड़े मार्के के लेख चन्द्रिका में निकाले थे इस विवादका फल यह हुआ कि महाराज से बिगड़ गई आपने कोल्हापुर को छोड़ दिया और वाई क्षेत्र में रहने लगे । परन्तु वहां भी अधिकारी लोगों ने गड़बड़ की फिर आप पूना चले आये । पूने के नेटिव-इन्स्टीट्यूशन और भावे हाई स्कूल में आपने अध्यापकी करी परन्तु पण्डित जी अपमान जरा भी सहार नहीं सकते थे अतः आपने नौकरी करी और छोड़ दी ।

आपने वेणी संहार, मालती माधव, बुद्ध चरित, सावित्र्युपाख्यान नलोपाख्यान की टीका टिप्पणी की हैं ।

संस्कृत चन्द्रिका कुछ वर्ष बम्बई वर्तमान एजेंसी से निकली थी । आपकी विद्या बुद्धि देखकर आपको विद्या वाचस्पति की उपाधि बङ्गाल निवासी विद्वानों ने दी थी । संस्कृत में व्याख्यान देने की शक्ति अत्यन्त प्रबल थी आप तीन तीन घण्टे तक बोलते थे । आपका गोत्र वशिष्ट था । आपके तीन विवाह हुये । तीनों के समय समय पर मृत्यु कवलित होने पर आपने ४र्थ विवाह किया था । दुख है कि आप ४० वर्ष से भी कम में ही सं० १९७० वि० आश्विन बदी ११ को ग्रन्थि ज्वर में अकाल काल कवलित हुये ।

पञ्चद्राविड़ों का चतुर्थ भेद-द्राविड़ ब्राह्मण

विन्ध्यस्योत्तरदिग्भागे नर्मदायास्तटे पुरा
अनेके ब्राह्मणास्तत्राऽवसन् ये शुचिव्रताः ॥
तेषां मध्ये तु यात्रार्थं निरगुः केचन द्विजाः ।
द्राविड़ाख्ये महादेशे ह्यनेक तीर्थ संयुते ॥
तत्र प्राप्तान् द्विजान् दृष्ट्वा पाण्डयो द्रविडसत्तमः ।
विद्या प्रताप संयुक्तान् राजा हर्षितमानसः
सन्मानमकरोत्तेषां मधुपर्कार्घसंयुतम् ।
चकार पूजनं पश्चाद्‌ग्रामदानमथाकरोत् ॥
अग्रहारान् मनोज्ञांश्च योगक्षेमसमन्वितान् ।
तीर्थ क्षेत्रे स्वाधिपत्यं ददौ तेभ्यो महातपाः ।
प्रत्यग्रवृत्तयो विप्रास्तद्देशाचारसंयुताः ।
तद्देशभाषा संयुक्तास्त्ववसंस्तत्रतत्र च । (ब्रा० मा०)

विन्ध्याचल के उत्तर नर्मदा के तट पर अनेक ब्राह्मण रहते थे । उन में से यात्रा करने के निमित्त द्राविड़ देश में गये । वहाँ पाण्ड्य नामक राजा ने उनकी पूजा की और अनेक ग्रामादि दिये, यह पाण्ड्य राजा कब हुआ निश्चय से नहीं कहा जाता ।

द्राविड़ ब्राह्मणों के निम्न लिखित उपभेद हैं —

१ चर्म । (१ चोलदेश २ चार देश)	६ तानिर
२ बृ(वृ) हच्चरण	७ तान्यप्रुयायर
३ अष्टासहस्र	८ नम्बुरी
४ संकेत	९ कोसून
५ अर्म	१० मुनित्रय

श्रीयुत प्रो० वीरेश्वर जी शास्त्री द्राविड़

शास्त्री जी का जन्म सं० १९१६ भा० शु,० ७ शनिवार को काशी में हुआ । माता पिता की सं० १९२६ में असामयिक मृत्यु से

श्रीयुत वीरेश्वर शास्त्री.

सद्धर्मप्रचारक प्रेस, देहली.
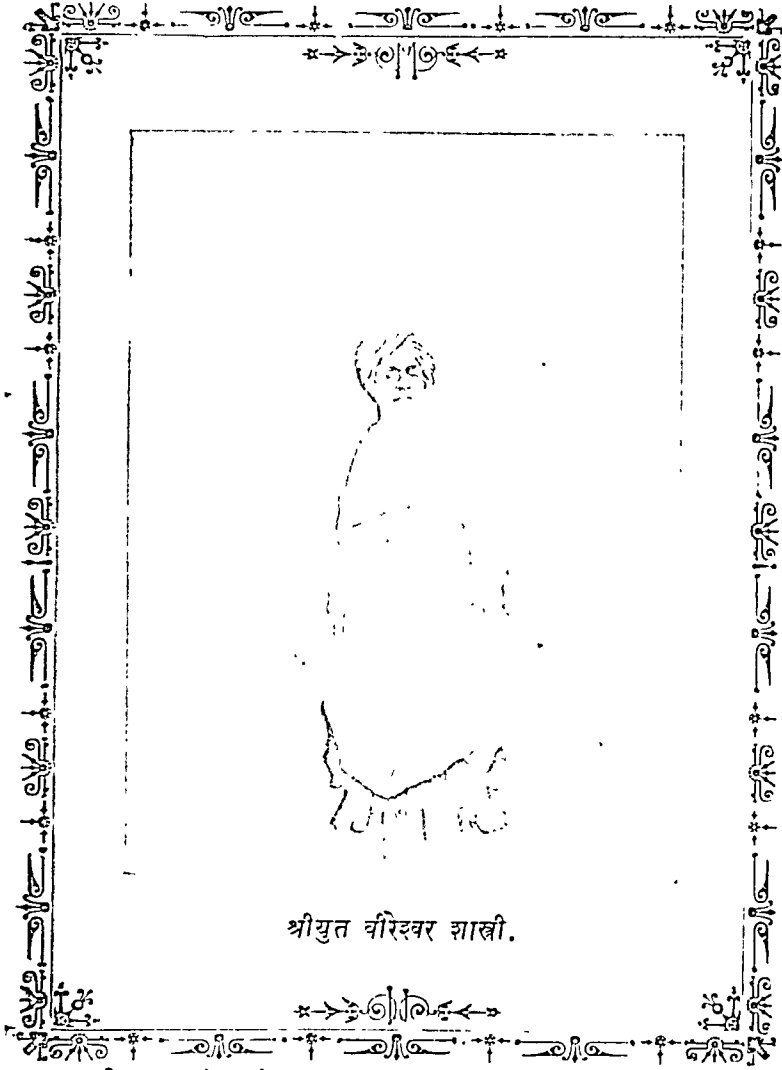
मातुल में रहे। आप के पूर्वाभिजन मद्रास प्रान्त में काञ्ची मण्डल चित्तूर जिले में 'मूलकाड' ग्राम में रहते थे। आप के पिता सुब्रह्मण्य शास्त्री काशी में १२ वर्ष की आयु में आगये थे। वह काव्य न्याय तथा वेद के बड़े विद्वान् थे। आप का विवाह काशी में वज्रदंक कृष्णशास्त्री की कन्या से हुवा था। शास्त्री जी ने पं० यागेश्वर शास्त्री बाल शास्त्री गंगाधर शास्त्री से अध्ययन किया आप के दो भगिनी थी एक का विवाह कामनाथ जी शास्त्री से काशी में हुवा वह जयपुर में राजगुरु थे। इसी सम्बन्ध में सन् १८४२ पौष में शास्त्री जी जयपुर महाराज कालिज में चले आये। शास्त्री जी का प्रथम विवाह १३ वर्ष की आयु में काशी में ही हुवा २२ वर्ष की अवस्था में वियोग हुआ। पुनः २५ वर्ष की आयु में तिरुवल्ली जिले में विवाह हुआ। पुनरपि वियोग होने से सतारा में तृतीय विवाह हुआ। इन का भी देहान्त हुआ आप की दूसरी और तीसरी स्त्रियों में पुत्र होकर मर गये। शास्त्रीजी सन् १९०० से १९१५ तक पञ्जाब यूनिवर्सीटी के परीक्षक रहे। आप ने कई पुस्तकों का सम्पादन किया। आशा है आप संस्कृतोद्धार का कार्य करते रहेंगे।

पञ्चद्राविड़ों का पञ्चम भेद गूजर ब्राह्मण।

ब्वाला ऋषिस्तृतीयोऽभूत्तस्माद्गौडाद्विजेन्द्रकाः।
चतुर्थो गौतमः पुत्रस्तस्माद्गुर्जर गौड़काः।

अर्थात् ब्रह्मा का पुत्र गौतम हुआ उससे उत्पन्न हुये ब्राह्मण गुर्जर देश में जा बसे वह सब गुर्जर गौड़ कहाये।

गुर्जराधिपति मूलराजा त्रिपञ्चाशदधिक सहस्राब्दे।
षोडशाधिक सहस्रसंख्यान् विप्रान् दूत द्वारा॥
श्रीस्थल क्षेत्रयात्रालिप्सत्वात् स्वदेशे मध्यदेशादाहूय वासिताः
तत्र १०४ ब्राह्मणाः प्रयागात्, १०० च्यवनाश्रमात् १००

शरयूतीरात् २०० कान्यकुब्जात् १०० काश्याः ७० कुरुक्षेत्रात् ॥
१०० हरिद्वारात्, १३२ नैमिषारण्यदागताः ॥
सर्वे गुर्जर ब्राह्मणा इति ख्यातिं प्राताः ॥

अर्थात् गुर्जर देश के राजा मूल जी ने मध्य देश से ब्राह्मण बुलाकर अपने देश में १०५३ विक्रमीय वत्सर में अपने देश में बसाये तब वह गूजर ब्राह्मण अपने देश के नाम से प्रसिद्ध किये।

गुर्जर ब्राह्मणों के उपभेद ८४ हैं

१ शशरौदीच्य	१९ खुगोर	३७ प्रेनवाल
२ सिहोरा औदीच्य	२० गुर्जरगौड़	३८ याग्निकवाल
३ टोलकियाऔदीच्य	२१ करोड	३९ गोरवाल
४ बड़नगरा	२२ बयादा	४० उनेवाल
५ शतोद्रा	२३ भडमेवावा	४१ राजवाल
६ बरकारा	२४ जखार्दमेवारा	४२ कनोजिया
७ शाहछोरा	२५ द्राविड़	४३ तिलोककनौजिया
८ उदुम्बरा	२६ दिसावाल	४४ कन्डोलिया
९ नरसाम्परा	२७ रायकाल	४५ करखेलिया
१० बालोद्रा	२८ गोरवाल	४६ परवालिया
११ पागोरा	२९ खेरावाल	४७ सोरथिया
१२ नादोद्रा	३० सिन्दुवाल	४८ तंगनोरिया
१३ गिरनारा	३१ पल्लीवाल	४९ सनोडिया
१४ हरसोरा	३२ गोमतीवाल	५० समोचिया
१५ सजोदुरा	३३ इटावाल	५१ मोटाला
१६ गङ्गापुत्र	३४ मेरतवाल	५२ झारोला
१७ मोतमैत्र	३५ गयावाल	५३ रायपुला
१८ गोमित्र	३६ अगस्तवाल	५४ कपिला

५५ अक्षयम्ला	६५ मालवीय	७५ चम्वेना
५६ गुग्ला	६६ कालिङ्गीय	७६ जाम्बू
५७ नापाला	६७ तैलङ्गाय	७७ मरावा
५८ अनावला	६८ निहुवाना	७८ दाधींच
५९ श्रीमाला	६९ भरथाना	७९ ललाट
६० त्रिवेदामोर	७० पुष्करणा	८० विश्वगुरु
६१ चतुर्वेदीमोर	७१ सारस्वत	८१ विश्वादरा
६२ वाल्मीक	७२ खडायत्ता	८२ सोमपरा
६३ नार्मदिक	७३ मारु	८३ मित्रोरा
६४ गर्गवी	७४ दाधिमथा(दाहिमा)	

यह बनारस आदि में हैं।

गोत्र	उपाधि
गौतम	पाण्डे
वत्स	ठाकुर
,,	पाठक
,,	शुक्ल
भार्गव	दुबे
भारद्वाज	जानी
भार्गव	उपाध्याय
कश्यप	पञ्चोली
मौद्गल्य	रावल
गौतम	ज्योतिषी
,,	महते
भार्गव	शुक्ल
दाल्भ्य	त्रिवादी
वशिष्ट	व्यास
गौतम	चौहुरे

२ नागर ब्राह्मण ।

आनर्ताधिपतिः पूर्वं आसीत्नाम्ना प्रभञ्जनः ।

आनर्त देश का राजा प्रभञ्जन था । उसने सर्पों से त्रास पाकर ब्राह्मण बुलाये फिर उन्हों ने यत्न किया और कहा तुम्हारे इस नगर का नाम नगर ही हो क्योंकि–

गरं विषमिति प्रोक्तं न शङ्कास्ति सांप्रतम्
नगरं नगरं चैतत् श्रुत्वा ये पन्नगाधमाः ॥

गर विषका नाम है और विष जहां न हो उसको नगर कहते हैं यह सुनकर भी जो सर्प न लौटेंगे वह नष्ट होंगे । बस यहाँ के वह ब्राह्मण नागर नाम से ही विख्यात हुये ।

गुर्जरों के कुछ प्रसिद्ध उपभेदों का वर्णन

१—औदीच्य ब्राह्मण

इनकी कथा यह है कि—अपने देश में बसाने के लिये यहां के मूल राजा ने इतने ब्राह्मण बुलाये और वह औदीच्य अपने देशके नाम से कहलाये—

गङ्गा यमुनयोः सङ्गादगातत्रोत्तरं शतम् ।
च्यवनस्याश्रमात् पुण्यात् पुण्याच्छतं वै सोमपायिनां ॥
संख्याः सिन्धुवर्यायाः शतं च धूत पाप्मनाम् ।
वेद शास्त्ररतानां च कान्य कुब्जाच्छतद्वयम् ॥
तिग्मांशुर्नैजर्षा तद्वच्छतं काशिनिवासिनाम् ।
कुरुक्षेत्रात्तथा हुमेश्यामधिकाः, सप्तनवतिः ॥
समीयुर्मुनिपुशाश्च गङ्गाद्वाराच्छतं द्विजाः ।
नैमिषाच्चसमीयुर्वै शतं चकतुर्वेदिनाम् ॥
तथा चैव कुरुक्षेत्राद्द्वात्रिंशदधिकं शतम् ।
इत्थं समागता विप्राः सहस्राधिकषोडशाः ॥

इन स्थानों से सारे गौड़ ब्राह्मण एक हजार सोलह आये उनको मूल राजा ने बसाया था ।

गुर्जरे विषये ग्रामं कठोदरमिति स्मृतम् ।
तत्र स्थितो महीपालः यज्ञार्थे चाकरोन्मतिः ॥
यज्ञं कारयिता को वा ब्राह्मणो मे मिलिष्यति ।
इति चिन्तातुरे राज्ञि सेवको वाक्यमब्रवीत् ॥
नन्द्यावर्ते महायोगी सर्व विद्या विशारदः ।
सत्य पुंगव नामा वै ऋषिरस्ति तमाहूय ॥

अर्थात् गुर्जर देश में कठोदर नामके ग्राम में एक राजा यज्ञ करने के लिये विचारता हुआ तब राजा ने सत्य पुंगव नामक ब्राह्मण को बुलाकर यज्ञ कराया और वहीं बसाया यही ब्राह्मण रायकवाल हुवे ।

६—रोयडा ब्राह्मण

पुरोदीच्य सहस्राणां स्थितिः सिद्धपुरे ह्यभूत् ।
तेभ्यः केचन विप्राश्च मरुदेशे गता किल ॥
तत्र ग्राम द्वयं मुख्यं रोयडा वजवाणकम् ।
चिरकाल तत्रवासवांसः कृतस्तैश्च द्विजोत्तमैः ॥
रोयड़ा ग्राम मध्ये वै निवासश्च कृतः पुरा ।
रोड़ वांस ब्राह्मणास्ते जाता ग्रामस्य नामतः ॥

अर्थ—औदीच्य सहस्र प्रथम सिद्ध पुर में रहते थे उनमें से कुछ ब्राह्मण मरुदेश में जाकर रोयडा ग्राम में रहने लगे और अपने ग्राम के नाम से विख्यात हुवे ।

७—गुग्गुलिका ब्राह्मण

स्थापिता द्वारकायां च देवदेवेन विष्णुना ।
स्वीयाऽश्रमविशुद्ध्यर्थं समिद्गुग्गुलुजू हुकाः ॥
सर्व पापविनिर्मुक्तास्तेन गुग्गुलिका स्मृताः ॥

द्वारिका में मध्य देश से गये हुवे ब्राह्मण अपने आश्रमकी शुद्धि के लिये जो गुग्गुल का हवन करते थे इसी लिये उन्हें गुग्गुलिका कहने लगे ॥

८—वडवा ब्राह्मण

वायु पुराण में मारुत्तोत्पत्ति प्रसङ्ग में आया है दिति को वर बताया है कि वाडव क्षेत्र में करो।

वाडवा दित्य नशोऽ स्तिभगवान त्रिनन्दनः

इस क्षेत्र में जाने से वाड़व कहलाये—
यह गुर्जर सम्प्रदाय में हैं—

९ देवरूख।

गुर्जर सम्प्रदायान्तर्गत यह ब्राह्मण भी वासुदेव नामक ब्राह्मण के शाप देश से वाहिर किये गये

देववत् द्विज शापात्ते दग्धाश्चापि बहिष्कृताः।
देव रूख प्रदेशाच्च जातास्ते देवरूखकाः॥
नवेन्दु शक प्रमिते शालिवाहन जन्मतः।
देव रुखाश्च सञ्जाताः चित्तपावन शापतः॥

अर्थात् शके १६ में चित्तपावन वसुदेव ब्राह्मण के शाप से देवरूप होगये।

१० दर्शनपुरवासि ब्राह्मण

यह तो नाम से ही प्रसिद्ध है। दर्शन पुर नामके ग्राम के रहने वाले ब्राह्मण—

एवं ये खेट के ग्रामे स्थापिता वेणुना द्विजाः
ते खेटक वासिनो विप्रा ग्रामाभ्यन्तर वासिनः॥

इस प्रकार जो खेड़े ग्राम में वेणुने ब्राह्मण स्थापित किये थे वह उसी गांव के नाम से विख्यात हैं। यह भी गुर्जर सम्प्रदायान्तर्गत हैं।

११ भार्गव ब्राह्मण।

भृगुक्षेत्र स्थिता येतु भार्गवास्तव संज्ञया॥

अर्थात् जो भृगुक्षेत्र में आकर वसे वह भार्गव नाम से विख्यात हुये यह भी गुर्जर सम्प्रदायान्तर्गत है।

१२ तलाजिये

केवलं द्विज मात्रास्ते सोपवीतात्य मन्त्रकाः

तड़ाड़जा द्विजास्तेवै जाता राम प्रसादतः ॥

तड़ाड़ नामक ग्राम में गये हुये ब्राह्मण तलाजिये कहाये और यह केवल द्विज है परन्तु मन्त्र हीन है यह भी गुर्जर सम्प्रदायान्तर्गत हैं।

१३ पराशर ब्राह्मण पार्थेश्वर ॥

इनके शासन ८४ हैं इनमें से निम्न लिखित ज्ञात हुये हैं।

(जन संख्या विवरण से)

१ नागोरी	८ आपसिया	१५ जानावत
२ दोपा	९ लबाड़िया	१६ पाता
३ सीपोटा	१० काली	१७ छापरवाल
४ लापरया	११ फावरा	१८ नीबावत
५ भूतड़या	१२ आलावत	१९ चीखावत
६ चीतोड़िर	१३ धर्मावत	२० मारिया
७ दूरेरा	१४ चूंडावत	२१ रूणिया

१४ ओम धीचवा गुजराती

१२ शासनों में विभक्त हैं

१ जोशी	५ ठाकुर	९ औसीपादरा
२ व्यास	६ त्रिवाड़ी	१० मन-हीना
३ घड़िया	७ अचार्य	११ दुवे
४ चन्दवानी जोशी	८ रावल	१२ सिवरो

१५ आचार्य

इनका गोत्र केवल गर्ग है परन्तु अब इनमें और भी सम्मिलित होगये हैं इनके शासन यह हैं—

१ सिनावड़	६ मामणिया	११ अ लावत
२ चावलिया	७ जोशी	इत्यादि
३ वागड़ी	८ दाहिमा	
४ ढलीवाल	९ रावखड़	
५ सारस्वत	१० पीपलेदिया	

१६ डकौत

इनके शासन (उपजाती) यह हैं। गोत्र इनका डङ्क है॥

१ अगरवाला	६ घोसो	११ साणी
२ गौड़	७ भकारी	१२ कायस्थ
३ पड़िया	८ गोरिया	१३ पचोलिया
४ लावल	९ मलिया	१४ मेर
५ छिलादिया	१० जोल	

डकौतों में अन्य जातियें भी मिल गई है यह इनके नामों से ही ज्ञात होता है।

श्रीमाली ब्राह्मण।

श्री माली देश नाम से हुये। इन का वर्णन स्कन्द पुराण में आया है।

श्रिय मुद्दिश्य मालाभिरावृता भूरियं सुरैः।
ततः श्री मालनाम्ना तु लोके ख्यातमिदं पुरम्॥
स्रग्विणो दण्डिनः शान्ता विप्राणाश्चकमण्डलून्॥
शतानिपञ्च कौशल्या द्विजेन्द्राणामथा ययुः।
गङ्गाया अयुतं चैकं यत्रईजे भगीरथः॥

गयाशीर्षा त्तथा पञ्च शतानि श्रुतिशालिनाम् ।
गिरेः कलिंजरात्सप्त शतानि गत पाप्मनाम् ॥
त्रिशतं वै महेन्द्राच्च सहस्रं मलयाचलात् ।
शतानि पञ्च चैष्ठायाः शर्वती राघवान्विताः ॥
वेदि सूर्यारका दष्टौ शतान्यधिकानि च ।
श्री गोकर्णा दुरक् श्रेष्ठात् सहस्रं भावितात्मनाम् ॥
राजन् गोदावरीतीरात्प्राप्तमष्टोत्तरं शतम् ।
प्रभासादाययुर्विप्रा द्वाशिदधिक शतम् ॥
उज्जयंताद् थो शैलादागतं चोत्तरं शतम् ।
संदात्मकं कन्यायाः शतमेकं दशोत्तरम् ॥
गो मत्या पुलिना द्वास्यामभ्रिका सप्तसप्ततिः ।
समायुः सोमपाःश्रेष्ठाः सहस्रं नन्दिवर्धनात् ।
शतं सौगन्धिकाद् द्वे राजग्राम द्विजन्म नाम् ।
पुष्कराख्याच्च देशां दधिका च चतुः शती ।
वैदूर्य शिखराद् द्रेः शतान्यष्टौ तथा दश ।
च्यवनस्याश्रमात् पुण्यात्पश्चाशदधिकं शतम् ॥
गङ्गा द्वारात् सहस्रं वै ऋषि पुत्राः समाययुः ।
कुराच्च पर्वत श्रेष्ठात् सहस्रं च द्विजन्म नाम् ॥
गङ्गा यमुनयोः सङ्गादागान्मुनि शतद्वयम् ।
श्वेतकेतोः शतान्यष्टौ द्विजानामगमस्तदा ॥
सहस्र तुकुरुक्षेत्रात् पृथूदकनिषेविणाम् ।
श्री जामदग्न्य पञ्चभ्यो नदेभ्योऽष्टोत्तरं शतम ॥
यत्र चाद्रि हेमकूट सततः प्राप्तं शतत्रयम् ।
श्रीपर्वतात् सहस्राणि तिग्मांशु शुभ्र तेजसाम् ॥
सहस्रं तुग काश्यपादागतं गत पाप्मनाम् ।
तस्मात् त्रीणि सहस्राणि कौशक्या ह्यागत तटात् ॥
मेधऽधिक नृप श्रेष्ठ शतानिनवत्रैद्विजाः ।

सख्याः सिन्धु वर्यायाः सहस्रमधिकं शतम् ॥
सोमाश्रमाद्य या द्राजन् सहस्रं सोम याजिनाम् ।
नदीशतेभ्यः पञ्चभ्यो गङ्गासागर संगमे ॥
सहस्र द्वे तथा पञ्चशता नीचुर्द्विजन्मनाम् ।
शमीकस्या श्रमात् पुण्यात् सहस्रं द्विशताधिकम् ॥
नारी तीर्थादपि प्राप्त सहस्रं पञ्चमिर्युतम् ।
पञ्च चैव रथाङ्गा प सहस्राणि समाययुः ॥
नरतीर्थाच्छतान्यष्टौ प्राप्तानि परमौज साम् ।
ततो विनशनादष्टौशतानि त्रीणि नन्द च ॥
विशल्यायाश्च गण्डक्याः सहस्रं वै द्विजन्मनाम् ।
सरितः किं पुनाऽख्यायाः सार्ध शत चतुष्टयम् ॥
ब्रह्मतीर्थादुपेतानि शतानि त्रिणि तत्र च ।
शतानि सप्ततत्रैव धर्मारण्यादथाययुः ॥
शत साहस्रकातीर्थादागत तु शतत्रयम् ।
अवन्ति विषयात् पञ्चशतानि ब्रह्मवादिनाम् ॥ ब्रा० मा०

मान्धाता के समय में ५०० ब्राह्मण कौशल्य देशसे गङ्गासे १ अयुत, गयासे ५००; कालिंज गिरी से ७००, महेन्द्र से ३००, मलयाचल से १०००, शर्वतोर से ५००, इत्यादि ४३ क्षेत्रों से ४५००० ब्राह्मण श्री माल देश में जाकर बसे। यह लेख कहां तक सत्य है अभी विचार योग्य है। इनमें से कुछ तो देव पूजन मन्दिरों में करने लग गये थे और ५०० जैनी हो गये थे यह मारवाड़ जन संख्या में लिखा है।

स्कन्द पुराण में भी इनका प्रसङ्ग आया है। भीं नमाल स्थान का नाम ही प्राचीन श्रीमाल था यह इतिहासज्ञमानते हैं। इनके ६ भेद हैं। १ काशी श्रीमाली २ काठियावड़ी श्रीमाली ३ गुजराती श्रीमाली ४ अहमदाबादी श्री माली ५ सुरती श्रीमाली ६ खम्भाती श्रीमाली। इसही वंश के भूषण प्रसिद्ध कवि माघ थे जिन्होंने शिशुपाल वध बनाया है। नीचे गोत्रादि दिये जाते हैं।

गोत्र	प्रवर	शासन
५ वत्स	भृगु, च्यवन, और्व, आप्लुवान, जमदग्नि	१ त्रिवाड़ी दशो २ आवस्ति अग्निहोत्री ३ दवे कणेरिया ४ जोशी पांडे चा ५ त्रिवाडी संघा उत्र ।
६ औपमन्यव	औपमन्यव	त्रिवाडी मेर १
७ काश्यप	काश्यप, वत्स नैत	१ त्रिवाडी जाज डोला २ त्रि० आईयाची ३ त्रि० काशपिदहं वाडिया ४ त्रि० वट्ट सुहालिया ५ जोशी पावड होत्र ६ जो० चंडेशा ७ जो० पंचलिया ८ वोराभा भट्ट ९ त्रिवाडी लोहूवाचडाया १० व्यास पुरेचा ११ त्रिवाडी करचंडा १२ वोराजाज डोला ।
८ गौतम	औतिथ्य, आंगिरस गौतम	१ दवेल पाउआ २ दवेसाँचवाडिया ३ ठाकुर लापसा ४ दवे पुछ त्रोडा ५ दवेगोतमिया ६ जोशी गौतम ।
९ शाण्डिल्य	आसेल्य देवल शांडिल	१ दवे कोडिया २ वोरा कोडिया ३ वोरा धांधल वाडिया ४ वोरा पांडिया ।
१० चन्द्रास	आत्रेय, गविष्ठ, पूर्ण	१ दवे हाडी अरणाया केलवाडिया २ दवे वातडिआ ३ जोशी वातडया ।

गोत्र	प्रवर	शासन
११ लोड़सवान	औतिथ्य, आंगिरस लोड़वान	१ दवे कोचर २ व्यास कोचर ३ दवे पाठक
१२ मौद्गल्य	आंगिरस, भारमश्व, मौद्गल	१ दवे वेलडिया २ दवे चापानेरिया ३ दवे द्वितीया ४ दवे ओझा
१३ कपिञ्जल	वसिष्ट, भारद्वाज, इन्द्रो	१ दवे पनोलिया २ दवे दलवटा ३ दवे मुहतार मणेचा ४ दवे पुमाणेचा ५ दवे जीवाणेचा ६ दवे खाडिया ७ ठाकुर भींडिया ८ ओझा बधलिया ९ दवे मना पुत्र पाठक १०. ठाकुर कापिञ्जल ।
१४ हारीत	हारीत	१ ओझा आचडिया ।

* शक एक प्राचीन जाति है इसका वर्णन मनु में आया है ।

पौण्ड्रका श्चौण्ड्र द्रविडाः काम्बोजा यवनाः शकाः

॥ म० १० । ४४

शक एक देश का नाम है । कुक साहब ने 'शक, काबुल का नाम लिखा है, इसी का नाम शाक द्वीप है । यहां पर क्षत्रिय जातियँ जाकर धर्म भ्रष्ट होगई थीं उनमें से शक भी थे यह ऊपर दिये गये मनु के श्लोक से विदित हुआ । शालिवाह शक राजा हुवे । इस द्वीप के निवासी शाक द्वीपी ब्राह्मण कहलाये ।

इनके भेद मग, और भोजक हैं ।

परिशिष्ठ ब्राह्मण ।

* यद्यपि यह भी उपरोक्त १० विध ब्राह्मणों अन्तर्गत परन्तु स्पष्टता के लिये पृथक् लिखे जाते हैं ।

१-शाक द्वीपी अथवा मागध ब्राह्मण।

यह ब्राह्मण मगध देश में हैं। तिरहुत विहार गंगा के पास बसते हैं। मगध देश में कब कैसे गये यह ज्ञात नहीं हुआ।

इनके गोत्र—

गोत्र	उपाधि	निवास
भारद्वाज	मिश्र	उर्वर
कौण्डिन्य	पाठक	खंतवार
,,	मिश्र	मलयवार
शाण्डिल्य	पण्डित	भलूनियार
गर्ग	पाण्डे	पंछिया
,,	मिश्र	परनियार
कौण्डिन्य	पाण्डे	देवरा
काश्यप	मिश्र	विलसय
भारद्वाज	,,	अद्रावर
,,	,,	ओनरियार
,,	पाठक	जम्वार्त
शाण्डिल्य	,,	ठाकुर मीरो
पराशर	मिश्र	श्रीमौर योर
वत्स	,,	अन्वाधियार
पराशर	मिश्र	कुकुरन्द
भारद्वाज	पाण्डे	देवकुलियार
,,	मिश्र	पवैया

चतुर्वेदी माथुर।

मथुरा के निवासी चतुर्वेदी ब्राह्मण उपाधि भेद से हैं। चतुर्वेदी, त्रिवेदी वा त्रिपाठी, द्विवेदी, वा दुवे या दवे यह पदवियें सब प्रकार के ब्राह्मणों में हैं। निश्चय से नहीं कहाजाता मथुरा के

ब्राह्मणों में यह उपाधि किस २ प्रकारके ब्राह्मणों मे हैं। पर विशेष कर गौड़ ही जाने गये है। इन के १ कडवे २ मोठे ३ गुलमटे और ४ चदलवा यह ४ भेद हैं।

गोत्र	उपाधि	प्रवर
दक्ष	चतुर्वेदी	आत्रेय, गविष्टर, पौर्वतिथि
कौत्स	”	कौत्स, अंगिरस, योगनाथ
सौश्रव	”	विश्वामित्र, देवराट, औद्लै
वसिष्ठ	”	वसिष्ट, शक्ति, पराशर
भार्गव	”	भार्गव, च्यवन, आप्नुवान, और्व जमदग्नि,
भारद्वाज	”	आंगिरस, बृहस्पति, भारद्वाज
ध्रुव	”	काश्यप, आत्रय, ध्रुव;

———०———

गोत्र	शासन
दक्ष	कोकोर, दक्ष, पूर्व, सज्जन
कुत्स	मेहरी, खलहरे मरैठिया, सांडिल्य
सौश्रव	पुरोहित, छिरोरा, धोरमई, मिश्र चकेरी, कुदौआ, तोपजाने, चन्दसे; चन्दपुरिया, वैसाधर, सुमावली, साध
वसिष्ठ	निनावलि, काहो, वधिया, जौनमाने, दीक्षित उटोलिया, कुणवार, पैंठवाल,
भार्गव	दरर, ओसरे, गोधवार, डाहरू, गुगोली, गोहजे, कनेरे मेर, वेहरिया' सकना,
भारद्वाज	पान्डे, पाठक, रावत, कारेनाग, तिवारी, नसवारे, वीसा,
तिवारी	चौपोली, तिवारी, भामले, अभसिया, कोहरे दियाआर.
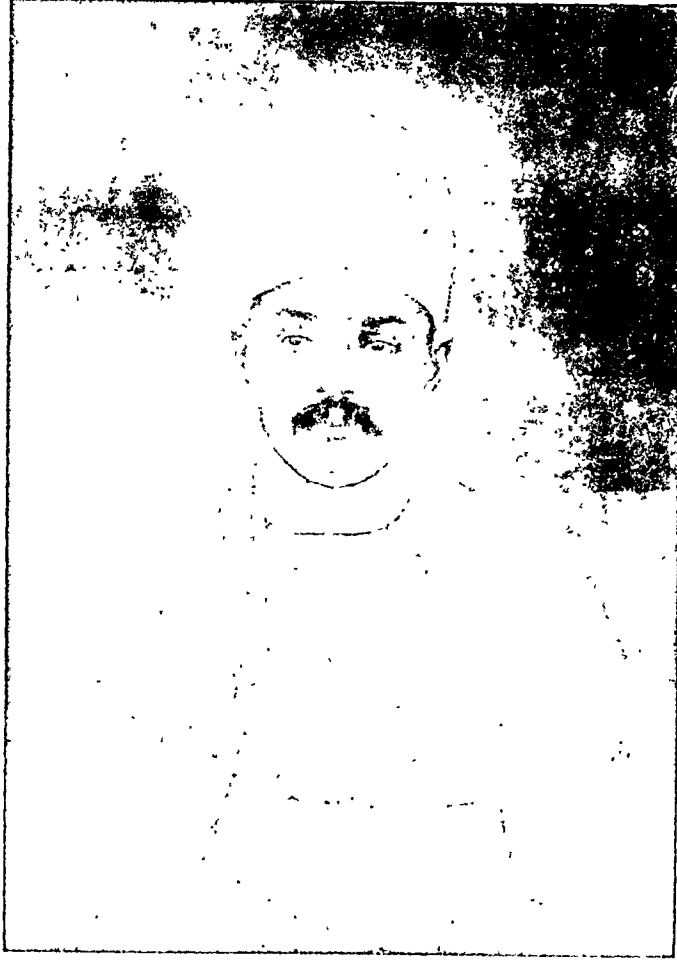
पंडित मदनमोहन माळवीय.

सड़ — भैसरे, शुनार शिकरौढी बीमा ।
धौम्य — लापसे, भरतवालर, तिलसने, मोरे, घरवारी चन्द्रपेखी, गोजले, शुक्ल प्रह्मपुरिया, श्रोत्रिय

इस जाति में खनाम धन्य राजा जयकृष्णदास हो चुके हैं । हमें खेद है आपका चित्र वा चरित्र समय पर न मिलनेके कारण न देसके

मालवीय ब्राह्मण ।

यह गुजरात देश से मालवे में जा बसे थे । अतः गुर्जर सम्प्रदाय में ही गिने जा सकते हैं ।

गोत्र—१ भारद्वाज २ पराशर ३ अंगिरस ४ गौतम ५ शाण्डिल्य ६ तिलकाक्ष ७ वत्स ८ कौत्स ९ काश्यप १० कात्यायन ११ कौण्डिन्य १२ मैत्रेय १३ अर्ध वशिष्ट १४ वाशिष्ट ।

मालवीवंशभूषण आनरेबुल पं० मदनमोहन मालवीय B.A. L L.B.

—:o:—

३०० वर्ष से अधिक हुवे मालव देश छोड़कर आपके पूर्वज प्रयाग में आबसे थे । मालवीयवंश में पं० बैजनाथजी शर्मा के सन्-१८६२ ता० १८ दिसम्बर को नररत्न प्रादुर्भूत हुवे । आप का शुभ नाम करण मदनमोहन शर्मा किया गया । आपकी प्रारम्भिक शिक्षा हिन्दी में घर पर हुई । गवर्नमेंट स्कूल से आपने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करी । फिर प्रयाग में ही म्योर कालेज से १८८४ ई० में B.A. परीक्षा उत्तीर्ण की । तदनन्तर आप ३ वर्ष तक गवर्मेंट स्कूल में अध्यापक रहे । सन् १८८७ ई० में कालाकांकर के ताल्लुकेदार राजा रामपालसिंहजी ने अपने यहाँ ले जाकर इनको 'हिन्दुस्थान' समाचार पत्रका सम्पादक बनाया, आपने बड़ी दक्षता के साथ २॥ वर्ष उसका सम्पादन किया । तदनन्तर आपने कानून पढ़ने की तैयार की ३ वर्ष पढ़कर १८९१ सन् में हाईकोर्ट की परीक्षा

पासकी, सन् १८६२ में L.L.B. की उपाधि भी ली आप तब से अब तक वकालत ही करते हैं। हिन्दू यूनिवर्सिटी खोलकर आपने जो भारतवर्ष का उपकार किया है वह प्रलय तक आपका यश स्थापित करेगा। आप बड़े लाट साहिब की कौंसिल की सभासद हैं ईश्वर करे भारत वर्ष का हित साधन आप ऐसे ही शतंसमाः करते रहें, तथाऽस्तु।

कूर्माञ्चलीय ब्राह्मण ।

यह जाति कुमायूं में है। अपने आपको गौड़ों का भेद बताते हैं। कुमायूं में कब गये यह ज्ञात नहीं हुआ। परन्तु सब प्रकार के ब्राह्मण कुमायूं में हैं-१ कान्यकुब्ज कूर्मा० २ महाराष्ट्र कूर्मा० ३ गुर्जर कूर्मा० ४ पुराणे कूर्मा० से ज्ञात होता है।

इनके निम्नलिखित भेद हैं—

१ देशस्थ २ कर्पूरी।

१-देशस्थों के गोत्र

स्थान		गोत्र	उपाधि
गङ्गावाली		भारद्वाज	पन्त
खूटा		„	„
तिलारी		„	„
गङ्गावाली	विश्वामित्र		भट्ट

२—कर्पूरी

गोत्र	उपाधी	स्थान
१ भारद्वाज	पाण्डे	पातिवाल
२ गोतम	„	पालियो
३ „	त्रिपाठी	अलमोरा
४ भारद्वाज	पाठक	गंगावाली
५ काश्यप	पाण्डे	शिमलिटिया
६ अंगिरा	जोशी	पल्लुदा
७ गर्ग	„	झाजार

८ भारद्वाज	कन्दपाल	पाटीवाल
९ ,,	मिश्र	लोहनी
१० ,,	जोशी	तिलारी
११ ,,	पाठक	करणटिक
१२ ,,	पांडे	हाट
गोतम	त्रिपाठी	चनसारा
भारद्वाज	पाण्डे	माला
गौतम	,,	खोला

कान्यकुब्ज	कूर्माञ्चलीय
महाराष्ट्र	कूर्माञ्चलीय
पुराणे	कूर्माञ्चलीय
गुर्जर	कूर्माञ्चलीय

नयपालीय ब्राह्मण
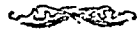
नेपाली ब्राह्मण राजा नन्दराज ने कन्यकुब्ज देश से बुलाये थ । अतः यह कान्यकुब्ज ही हैं । इनके देश, उपाधि स्थान भेद से उपनाम पड़ गये हैं नीचे गोत्रादि दिये जाते हैं ।

गोत्र	उपाधि	स्थान
कौशिक	रेगमी	लगतोल
घृतकौशिक	खद्दाली	,,
वशिष्ट	भटरै	मखन्तोल
घृतकौशिक	नयपाली	पाकलढ्यान
कौशिक	रेगामी	झोपेटोल
वशिष्ट	भट्टरै	भिलतुम्भ
काश्यप	घिमिरे	बुधसिंह
कौशिक	रेगमी	जैनपुर

गोत्र	उपाधि	स्थान
उपमन्यु	धकाल	वीर लोग
आत्रेय	ढ़िकवल्ल	दहंचोक
वत्स	रूपाखेती	पीरा
उपमन्यु	धाकल	गोरखा
आत्रेय	पंट्याल	अगरखू
कौण्डिन्य	आचार्य	डोलखा
गर्ग	रिपाल	गोकरू
गौतम	तिवारी	गैकरू
वशिष्ठ	चालीसे	गोकद
कौशिक	धुममाना	लिरंघु
भारद्वाज	पोख्याल	वरलाङ्ग
अत्रि	गौतमी	धनगस्यलङ्ग
भारद्वाज	शिलवाल	मैथी
आत्रेय	अंजलि	पोखलिङ्ग
उपमन्यु	धकाल	धनृङ्ग
वशिष्ठ	शर्मे	नारानीति
धनञ्जय	रिजाल	भांखू
काश्यप	घिमिरे	शिपा
मुद्गल	तिमिश्र	गोरखा
आत्रेय	अर्ज्याल	इन्द्रचौक
कौण्डिन्य	नेपापार	चांगु
घृतकौशिक	नैपाल	पशुपतितर
आत्रेय	रेगमी	वालचौक
अत्रि	पोख्याल	तुकुचा
”	मिश्र	कविलास
धनञ्जय	रिजाल	नियालपाणी

वशिष्ठ	खडयाल	पालनचौक
गौतम	पन्त	पाल

काश्मीरी ब्राह्मण

काश्मीर में प्रायः सारस्वत ब्राह्मण ही हैं। कोई कान्यकुब्ज कहते हैं। इन्हीं के उपनाम उपाधि ग्रामादि के भेद से हो गये हैं। इनका लिखना मुख्य कार्य है यह कब काश्मीर में गये निश्चय से नहीं कहा जाता। पर विद्वानों ने मुगल राज्य काल में जाना माना है।

काश्मीरी ब्राह्मणों के १ भट्ट २ पण्डित ३ राजदान यह भेद हैं।

१—भट्ट

गोत्र	उपाधि	स्थान
विश्वामित्र	बङ्ग	हवाकदाल
काश्यप	कनौजी	अहलमर

२—पण्डित

गोत्र	उपाधि	स्थान
कपिष्ठल	जादू	पंपोल
कौशिक	कचरो	रणवाली
,,	मञ्जु	हवकदाल
,,	मुञ्जु	जनकदाल
,,	फोटदार	जोगीनलकर
भारद्वाज	वटफुलो	छत्रवला
,,	,,	अथलंमरी
उद्भारद्वाज	दर	छत्रवला
,,	,,	अलिकदाल

गोत्र	उपाधि	स्थान
उपमन्यु	सम	रनवाली
दत्तात्रेय	वान	जोगीलनकद
पालवासगार्ग्य	फांतदार	पंपोल
भार्गव	जादू	राणावाली

३—राजदानोंके गोत्र

गौतम, लौगाक्षि, उपाधि, लवुरकर, कौल, दत्त, स्वामी और स्थान वलदीमर हवकदल हैं।

सप्तशती ब्राह्मण

यह बंगाल में विशेषतया हैं। आदि शूर के राज्य से इन का वंश क्रम चलता है। इन के गोत्रादि नीचे लिखे जाते हैं। यह राढ़ीय कान्यकुब्जों का उपभेद है।

भेद	गोत्र	भेद	गोत्र
सगे	गौतम	वालथोपी	गौतम
सोग	पराशर	वागड़ी	पराशर
नानशी	कौशिक	उलूकी	घृतकौशिक
जगे	वत्स	छुतुरी	शाण्डिल्य
थलानी	शाण्डिल्य	मल्लुकजोरी	वत्स
मालानी	गौतम	नाचडी	गौतम
करला	काश्यप	कतानी	,,
पिप्राडी	पराशर	काश्यपकाणादी	वत्स

श्रीमती रामेश्वरी देवी नेहरू।

इंडियन प्रेस, प्रयाग।

श्रीमती रामेश्वरी देवी नेहरू

आपका जन्म नवम्बर १८९६ में पंजाब के एक बहुत प्रतिष्ठित और पुराने कश्मीरी घराने में हुआ है।

आपके पिता पंजाब के प्रसिद्ध स्टैट्यूटरी सिविलियन पुराने रईस दीवान नरेन्द्रनाथ हैं। जो आज कल मुलतान के डिप्टी कमिश्नर हैं और कुछ दिन हुये लाहौर के स्थानापन्न कमिश्नर रह चुके हैं। दीवान नरेन्द्रनाथ की चार कन्यायें हैं। श्रीमती रामेश्वरी देवी आपकी दूसरी कन्या है। यद्यपि आपके पिता का अपनी कन्याओं के पढ़ाने लिखाने की ओर विशेष ध्यान नहीं था तथापि आपकी पूज-नीय माता जी की बड़ी प्रबल इच्छा थी कि हमारी कन्याएं पढ़ें लिखें और विदुषी बनें। अस्तु इन्होंने लड़कपनसे ही अपनीबालकाओं को सरल तथा साधारण उपदेश देने आरम्भ करा दिये और ७ वर्ष की होने पर बालिका रामेश्वरी देवी के पढ़ानेके लिये एक मौलवी और एक पंडित नियत कर दिया इस प्रकार कुछ वर्षो तक इन्हें साधारण हिंदी, उर्दू और हिसाब किताब की शिक्षा मिलती रही।

जब इनकी अवस्था १३ वर्ष की हुई तो इनके पिता ने एक ईसाई गुरुवानी रख कर इन्हें अंग्रेजी शिक्षा दिलाना आरंभ किया।

परन्तु यह शिक्षाक्रम बहुत दिनों तक न चल सका। आपके भावी पति अपनी शिक्षा के लिये विलायत जाने को थे। इससे १९०२ में आपका विवाह प्रयाग के सुप्रसिद्ध एडवोकेट माननीय पंडित मोतीलाल नेहरू के भतीजे पं० बृजलाल नेहरु के साथ हुआ तब से श्रीमती के शिक्षा क्रम में विघ्न पड़ने लगा। आपके पति १७ वर्ष की अवस्था में प्रयाग विश्वविद्यालय के ग्रेजुएट हुए थे और विवाह के दो ही तीन महीने पीछे सिविलसर्विस की परीक्षा देने के लिये विलायत चले गये यहां आपने ६ वर्ष तक विद्याध्ययन किया।

पहले आपने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की बी० ए० परीक्षा

में सम्मिलित हुए। इसमें भी आपको सफलता प्राप्त हुई और लंका द्वीप की सिविलसर्विस में आपको एक पद मिला। किन्तु आपने उसे स्वीकार नहीं किया और भारत गवर्नमेंट के अर्थ-विभाग में एक ऊंचे पद पर नियुक्त होकर सन् १९०२ में आप घर लौट आए। इस बीच में श्रीमती रामेश्वरी देवी के पढ़ने में यद्यपि बहुत विघ्न पड़ता गया पर सब विघ्नों को दूर कर वे पढ़ती ही गईं। आपके पिता ने भी एक सुयोग्य गुरुआनी आपकी शिक्षा के लिये रखदी इस प्रबंध का बहुत ही उत्तम परिणाम हुआ। आपने थोड़े ही दिनों में अंग्रेजी में अच्छी योग्यता प्राप्त करली। इस समय आप अंग्रेजी बहुत अच्छी तरह लिख, पढ़ और बोल सकती हैं।

लड़कपन से ही आपकी इच्छा थी कि अपनी जाति की स्त्रियों के लिये कोई अच्छा पत्र निकालें। इसी उद्देश्य से आपने अपने पिता के एक मित्र से लिखा पढ़ी भी की पर कई कारणों से उस समय आपका मनोरथ सफल न हो सका। आप इस समय मुहम्मदी बेगम द्वारा संपादित उर्दू के साप्ताहिक पत्र "तहजीब- निस्वां" में लेख लिखने लगी। ये लेख पाठकों को बहुत ही पसंद आये जिससे आपका उत्साह और भी बढ़ गया। इस समय काश्मीरियों का एक मात्र पत्र "काश्मीर दर्पण" टूट गया था, आपके पति के ज्येष्ठ भाई पंडित मनोहरलाल नहरू ने आपसे कहा कि अब आप चाहें तो अपनी इच्छा को पूरा करें।

पहले तो काश्मीर दर्पण को चलाने की सलाह ठहरी, पर अंत में यह निश्चय हुआ कि केवल स्त्रियों ही के लिये एक मासिक पत्र निकाला जाय। इसप्रकार जून १९०९ में "स्त्रीदर्पण" का जन्म हुआ पहले तो यह हिंदी और उर्दू दोनों में साथ ही साथ निकलता था क्योंकि कश्मीरियों में उर्दू ही का अधिक प्रचार है, पर चारों ओर से यह सम्मति दी जाने लगी कि यह पत्र सब जाति की स्त्रियों के लिये होना चाहिये जिसके लिये इसका हिंदी ही में प्रकाशित होना आवश्यक है।

निदान सब बातों पर विचार कर दोही अंक के अनंतर पत्र केवल हिंदी में निकलने लगा और अब तक बराबर चला जाता है ।

सम्पादिका महाशय का उद्देश्य इसके द्वारा धन कमाने का नहीं है । आपका उद्देश्य देश सेवा और अपनी बहिनों का उपकार है ।

इस लिये घाटा सहकर भी आप इसे प्रकाशित किये जाती हैं । इस पत्र से एक बड़ा लाभ यह हुआ है कि कश्मीरी महलाओं में भी हिन्दी का प्रचार हो गया है ।

स्त्रीदर्पण निकालने के थोड़े ही दिनों पीछे आपने अपने पति की सलाह से प्रयाग-महिला-समिति नाम की एक सभा स्थापित की जिसका अभिप्राय यह था स्त्रियां परस्पर मिल जुल कर एक दूसरी पर अपने विचार प्रगट करें, अपनी जाति के सुधार का यत्न करें, तथापि भिन्न भिन्न विषयों पर विवाद वाद करके अपने ज्ञानकी वृद्धि करें ।

इस कार्य में प्रयागके सुप्रसिद्ध एक एडवोकेट डाक्टर तेजबहादुर जी की गत साध्वी सुशीला पत्नी श्रीमती धनराज रानी सपरु जी ने आपको सहायता की और समिति का पहिला अधिवेशन आप ही के बंगले पर हुआ । इस समिति ने प्रयाग की महिलाओं में सभा समतियों में आने जाने का शौक पैदा कर दिया है । इस समिति के अधिवेशनों में वे बड़े उत्साह से जाया करती हैं और अनेक विषयों पर व्याख्यान देती हैं । इसका अधिवेशन प्रतिमास होता है और लग भग चार वर्ष से यह प्रयाग में स्थापित है ।

जितना लाभ इससे पहुंच चुका है उससे आशा है कि आगे को इससे और भी अधिक पहुंचेगा । इस भांति श्रीमती रामेश्वरी देवी ने हिंदी भाषा तथा स्त्री समाज का बहुत कुछ उपकार किया है आशा है कि आपके द्वारा अभी और बहुतेरे लाभ पहुंचेगा ।

बनाते हैं। इसी प्रकार देवताओं के जन्म उस असत् (अव्यक्त कारण) से हुवे। विश्वकर्मा इस शब्द का अर्थ भी 'विश्वं कृत्स्नं कर्म यस्यस:' सम्पूर्ण है कर्म जिस का वही है। यही ऐतरेय ब्राह्मण में लिखा है—

विश्वकर्माऽभवत् प्रजापतिः, प्रजाः सृष्ट्वा विश्वकर्माऽभत्संवत्सरो विश्वकर्मेन्द्रमेव तदात्मानं प्रजापतिं संवत्सरं विश्वकर्माणमानुवंतीन्द्र एवनदाऽत्मनि प्रजापतौ संवत्सरे विश्वकर्मण्यंततः प्रतितिष्ठंति य एवं वेद य एवं वेद। ऐ० ब्राह्म ४।२२।३

अर्थात् विश्वकर्मा प्रजापति है, वह प्रजा को रचकर विश्वकर्मा हुआ, इन्द्र आदि उस के नाम हैं। विश्वकर्मा के नाम वेदों में विश्व रूप, वाचस्पति, त्वष्टा, कश्यप, जीव, ब्रह्मणस्पति, हिरण्यगर्भ, शिल्पाचार्य, सहस्रशीर्ष भौवन आदि हैं। इन सब से विश्वकर्मा की विभूति की प्रशंसा है। त्वष्टा रूपाणामधिपतिः, त्वष्टा रूपाणिहि प्रभुः, त्वष्टारूपाणा मीशे, इत्यादि श्रुति वाक्यों से 'रूप, शिल्प Drawing का अधिपति त्वष्टा को ही कहा है। जैसा कि

अद्भ्यः सं भूतः पृथिव्यै रस च्च विश्व कर्मणः समवर्तताधि।
तस्य त्वष्टा विदध द्रूपमेति तत्पुरुषस्य विश्व माजानमग्रे॥

---

* शिल्प प्रशंसा विश्वकर्म माहात्म्य पद्म पुराण अ: ७५ में देखो।
'भौमान्य नेक रूपाणि यस्य शिल्पाणि मानवा।
उपजीवन्ति तं विश्वं विश्व कर्माण मीमहि' इत्यादि॥

वेदों के कुछ वचन लिखते हैं—ये भिःशिल्पैः प्रपथाना मद॥ हत् येभि र्घो मम्यपि। शत् प्रजापति। येभिर्वाचं विश्वरूपा समव्ययत्। तेनेममग्न इह वर्च सा समङ्धि॥ तै० ब्रा० २।७।१५

हे अग्ने जिन शिल्प कर्मों में इस पृथिवी चन्द्रमा सूर्य आदि को विस्तार युक्त किया उन्हीं से इस राजा को समृद्ध करो।

शिल्प शास्त्रमणी ला

भृगुर त्रिर्वसिष्ठश्च विश्वकर्मा मयस्तथा ।
नारदो नग्न जिच्चैव विशालाक्षः पुरंदरः ॥
ब्रह्मा कुमारो नंदीशः शौनको गर्ग एवच ।
वासुदेवोऽनिरुद्धेश्च तथा शुक्र बृहस्पती ॥
अष्टादशैते विख्याता शिल्प शास्त्रोपदेशकाः ॥ मत्स्य पु० २५२
भृगु आदि १८ आचार्य हुवे ।

कश्यप और शिल्प

यत्ते शिल्पं कश्यप रोचनावत् । इन्द्रियावत् पुष्कलं चित्रभानु ॥
यस्मिन्त्सूर्या अर्पिता सप्त साकं तस्मिन्राजा न मधि विश्रयेमम्७
तै० ब्रा० २ । ७ । १५ । ३॥

हे कश्यप ! आप का शिल्प प्रशंसनीय है । चित्रभानु है । इत्यादि ।
कश्यप के सम्बन्ध में ऐतरेय ब्रा० प० में और भी लिखा है ।
एतेन हवा महाऽभिषेकेण कश्यपो विश्वकर्माणं भौवनमभिषिषेच ।
तथा कश्यपो विश्वकर्मा च विश्व लोक पिता महौ ॥

ऋग्वेद में हिरण्य सूक्त आया है । जिस में अलंकार धारण की प्रशंसा है यथाभूषणे आयुष्यं वर्चस्य मिति सूक्तं पठन् भूषयेत् ।
आयुष्यमिति सूक्तस्य सानगादय ऋषयः ॥
हिरण्यं देवता। अलंकार धारणे विनियोगः यह प्रयोग पारिजात में लिखा है—
आयुस्यं वर्चस्यं रायस्पोषमौद्भिदं । इदं हिरण्यं वर्चस्व जैत्राया विशता दिमां ॥ उश्चैर्वाजी पृतनाषाट् सभासाहं धनंजयं । सर्वा समग्रा ऋद्धयो हिरण्येऽस्मिँत्समाहिताः शुनमहं हिरण्यं स्वपितुर्नामेव जग्रभं । तेन मां सूर्यत्वच मकरं पुरुषु प्रियम् संम्राजं च विराजं चाभिष्टिर्याचमें भुवा । लक्ष्मी राष्ट्स्य या मुखेत या मामिंद्रसं सृज ॥ अग्ने प्रयातं परियद्धि रण्यं
इस महा अभिषेक से कश्यप ने विश्वकर्मा को अभिषेक किया ।

त्वष्टा और उसका शिल्प ।

(रेतः) नाम स्वर्ण का है । हिरण्यं स्वर्णं रेतसः विश्वकोष, तथा अग्नि रेतः सुवर्णस्यात्, यह अग्नि पुराण में लिखा है । ——

त्वष्टा वै रेतसः सिक्तस्य रूपाणि विकरोति ।
त्वष्टारं रूपाणि विकुर्वितं विपश्चितम् ॥

मस्तृते जज्ञे ऽधिमर्त्येषु ॥ य एन द्वेदस ऽइदे . नदहति जरामत्यु भवति यो विभर्ति । यद्वेद राजा वरुणो यद्व देवी सरस्वती ॥ इन्द्रो यद्ब्रह्मवेद तन्मे वर्चस आयुषे ॥ इत्यादि ।

अर्थात् स्वर्ण धारण करना यश, पुण्य का दाता जरामृत्यु का नाशक है । उसके आभूषण पहिने चाहिये (विस्तार भय से भाष्य नहीं लिखा ।

आयुष्य वृद्धि कारणार्थ स्वर्ण भरण की आज्ञा—

यो विभर्ति दाक्षायणा हिरण्यं स देवेषु कृणुतेदीर्घमायुः । समनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ऋ०सं० अ० ८। अ० ७सू० १६ परिशिष्टे ।

अर्थात् त्वष्टा स्वर्ण के अलङ्कार बनाता है ।

इसी लिये—मांगल्यतं सुनानेन भर्तृ जीवन हेतुना ।

कण्ठे वाध्नमि सुभगे साजी व शरदः शतम् ।

हे वधू ! तेरे गल में सोने के हार को बाँधता हूँ ।

इस में वधू को माँगल्य आभरण आदि धारण करना लिखा है क्योंकि—

यदि हिस्त्री न रोचेते पुमासं न प्रमोदयेत् ।
अप्रमोदात् पुनः पुंस प्रजननं न प्रवर्तते ॥
तस्मा देवाताः सदा पूज्या भूषणाच्छादनाशनैः
भूति कामैर्नरैर्नित्यं सत्कारे पूत्सवेषु च ॥

यदि स्त्री सुसज्जित न हो तो पुरुष को पसंद नहीं आसकती । ना पसन्दी से अप्रसन्नता से वा गर्भाधान नहीं होता ।

इस से स्त्रियों को सर्वदा ही वस्त्र भूषणों से सुसज्जित रखना योग्य है। इसी से 'इमामलंकृतां, यह विशेषण कन्यादान में है।

त्वष्टा वीरं देवकामजजान त्वष्टु रर्वा जायत आशुरश्वः

अर्थात् त्वष्टा ने घोड़े को बनाया ।

त्वष्टा (विश्वकर्मा) की उत्पत्ति

बृहस्पतेस्तुभगिनी वरस्त्री ब्रह्मचारिणी ।
योग सिद्धा जगत् कृत्स्नंमसक्ता चरते सदा ॥ १५ ॥
प्रभासस्य तुसा भार्या वसूनामष्टमस्यतु ।
विश्वकर्मासुतस्तस्यां जातः शिल्पी प्रजापतिः ॥ १६ ।
त्वाष्टा विराजो रूपाणां धर्म पौत्र उदारधीः ।
कर्ताशिल्पसहस्त्रणं त्रिदशानां चकल्प ह॥
मानुषाश्चोपजीवन्ति यस्य शिल्पं महात्मनः ॥ १८
वायु० पु० अ० २२ ।

बृहस्पति को बहिन प्रभास की स्त्री यागसिद्धा के त्वष्टा उत्पन्न हुवे

---

(१)(अ) त्रिचक्ररथ का वर्णन
(इ) तडित् वर्णन
(ई) विमान वर्णन
(उ) नौका वर्णन
(ऊ) कूप वर्णन वेदों में यत्र तत्र आता है।

तस्मै त्वष्टा व ज्रम सिंचत्

मह्य त्वष्टावज्रमत क्षदायसं ऋ० स० ८ । १ ५, ३ ॥

उसके लिये त्वष्टा ने वज्र बनाया ।

कुरूटजं मदर्थं त्वं यथा प्रावृट् न बाधते ॥५॥
यत्किंचिन्न भज्येत न पुरातनतां व्रजेत् ।
गुरु पत्या त्व भिहितोरे त्वाष्ट्र कुरु कंचुकम् ॥ ६ ॥
गुरु पुत्रेण चाज्ञप्तो ममार्थे कुरुपादुका ।
गुरुकन्याऽपितं प्राह त्वाष्ट्रमे श्रवणोचिते ॥ ७ ॥

भूषण स्नेहत स्तेन कुरुकाञ्चन निर्मिते ।
कुमारी क्रीडनीयानि कौतुकानि च देहिमे ॥ ८ ॥
दंति दंत मयान्येव सहस्त रचितानिच ।
गृहोपकरणं दिव्यं मुसलोलूखलादिकम् ॥ ६ ॥
तथा घटय मेधावी यथा न त्रटति कचित् ।
यह त्वष्टा देवताओं के पुरोहित थे

विश्वरूपो वै त्वाष्ट्र पुरोहितो देवा नामासीत् ।
त्वष्टा देवताओं के पुरोहित थे

श्रीमद्भागवत में भी ऐसा ही लिखा है—
त एवं मुदिता राजन् ब्राह्मण विगत ज्वराः ।
ऋषिंत्वाष्ट्रमुप ब्रज्य परिष्वज्येद मब्र वन् ॥ २६ ॥
वृतः पुरोहित स्त्वाष्ट्रो महेन्द्रायानुपृच्छते । स्कन्ध ६ अ० ७
इस प्रकार जब कहा तब ब्राह्मणों ने कहा कि हमने त्वाष्ट्र को पुरोहित वरण कर लिया है ।

सूपकर्माण्यपि च मां प्रशाधित्वष्ट्रनंदन ।
एकस्तम्भ मयं गेह मेकदारु विनिर्मितम् ।
तथा कुरुवरंत्वाष्ट्रयत्रेच्छा तत्र धारये ॥

स्कंद पु० कांशी खं० ८६

मेरे लिये कुटी, तम्बू, कंचुकी, अलंकार, खेल, बना ।
यहाँ सभी शिल्प का वर्णन आया है । अन्यत्र भी लिखा है—

"शिल्पानि शंसति । देवशिल्पान्ये तेषां वैशिल्पानामनुकृतीह शिल्प मधिगम्यतेय, हस्ती, कंसो, वासो, हिरण्य मश्वतरी रथः शिल्पं शिल्पं हास्मिन्न धिगम्यतेय । य एवं वेद यदेव शिल्पानी ", ऐ ब्रा० गोपथ ब्रा० ६ । २७ । ५ ॥ ३ ॥

अर्थात्, कांसी, सोना, वस्त्र आदि के शिल्प की यज्ञ में प्रशंसा करता है । यह शिल्प घोड़े, हाथी आदिकी प्रतिकृति (नमूना) है । ६७

यह शिल्प विविध प्रकार का है यथा

सौवर्णं राजतं चैव ताम्रं पाषाण दार वम् ॥
शिल्पं त्वत्संततो स्थाता या वत्कलियुगं दृढ़म् ।
गृहं यन्त्रं रथो भूषा प्रतिमा वसनादि कम् ।
यत् किंचिद्दृश्यते शिल्पं तत्सर्वं विश्वकर्मजम् ॥

सोने का, चांदी का, तांबे का, पत्थर का और लकड़ी का। तथा वस्त्रभूषण आदि अनेक प्रकार का शिल्प है

इन में सुवर्ण का शिल्प व उस की प्रशंसा के विषय में पूर्व लिखा जा चुका है। रजत का भी तत्साहचर्य से स्वर्णकार का कृत्य है। ताम्रकार (ठठेरे) के शिल्प का वर्णन भी यत्र तत्र। पाषाण के शिल्प का वर्णन सर्वत्र प्रसिद्ध है। इसी लिये पत्थर फोड़ वर्तमान जाति को पत्थर के शिल्पी समझना चाहिये। दारु (काष्ट) के शिल्प की विशेष योजना यहां प्रकरण में है।

सो काल प्रभाव से इन शिल्प कार्यों को चारों वर्णों के लोग करने लगे, तथा चारों वर्ण भी प्रायः परस्पर की वृत्तियें करने लगे। इस अवस्था में यज्ञ में शिल्प कार्य के लिये व्यवस्था की गई कि तीन वर्ण कृत हो जैसे—

नचक्रवर्तीम शूद्र कृता मूर्ध्व कपाला मग्नि हो त्रस्था ली।
हिरण्य के शोय सूत्र ३। ७॥

अग्नि होत्र की थाली शूद्र की बनाई न हो।

परन्तु सब जाति के लोग इन कार्यों में लग पड़े। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र यह सब इनमें सम्मिलित हैं।

जैसे छापना छिपे का कर्म है, परन्तु वस्त्र कागज, धातु आदि पर शिल्प कार्य सम्प्रति चारों वर्ण कर रहे हैं। कारखानों में सबही जातें करता हैं। पर जात न लिख कर कर्म नाम से ही लिखते हैं प्रत्युत यवन आदि भी सम्मिलित है। इसी प्रकार पूर्व समय में भी सब जाति के लोग इन कर्मों में सम्मिलित हो गये थे अर्थात् वृद्धि

यद्यपि पूर्ण निश्चय से नहीं कह सकते कि इन फर्मों में कौन २ जाति कय २ सम्मिलित हुई तथापि जिन कुछ जातियों का पता चला नीचे दिया जाता है।

'त्रै वर्णि को रथं कुर्यात् तस्य जात्यन्तर रथत्र' (बौधायन)
अर्थात् तीनों वर्ण और जातियें भी रथ कर्म करती हैं।

वर्षा रथ कारस्यये त्रयाणा वर्णा. नामें तत्कर्म कर्युस्तेषामेषकालः भाष्य धूर्त स्वामी त्रयाणा मन्त भूतायै कुर्वन्ति रथ कर्ण ते रथ काराः

अर्थात् तीनों वर्ण के लोग रथ कर्म करते हैं, उन रथकार (तक्षार्थो) का अगन्या धान काल वर्षा ऋतु है (आपस्तमवसूत्र)।

स्वर्ण कारो में

क्षत्रिय—मैढ स्वर्णकार (देखो मैढ मीमांसा दर्पण)

लोहकारों में—ब्राह्मण—वल्लनिये लुहार बंगाल में—
यह जाति कर्म कार के नाम से प्रसिद्ध है। इत्यादि।
स्वर्णकारों में—ब्राह्मण—वल्लनिया सुनार
यह कहीं २ पांचाल ब्राह्मण भी कहलाते हैं।

ब्राह्मणत्व में प्रमाण। 'नडादिभ्याः फक्, इस सूत्र के नडादि गण में पठित पंचाल शब्द पर "गण रत्न महोदधि" में लिखा है पंचालः ब्राह्मण गोत्र वाची, पंचालः ब्राह्मण गोत्र वाची शब्द है। 'शिल्पि ब्र ह्मण नामन; पंचालः परिकीर्तितोः "शवागमे अ ७, अर्थात् पंचाल शिल्पी ब्राह्मण हैं। पाँच यह हैं।

मनु, मय, त्वष्टा, तक्षा, शिल्पो, (रुद्रयामलतत्र) इन पांचोंसे पंचाल नाम हुवा।

इनको ब्राह्मण ही सर्वत्र माना है इसी लिये मीमांसामें भी एक पृथक ही रथ काराधि करण है जिसमें रथकारों को यज्ञ की आज्ञा दी है। अथर्ववेद, में भी रथकार का वर्णन आया है।

अन्यत्र भी लिखा है 'वर्षासु रथकारो अग्नी नादधीत' वर्षा ऋतु में रथकार अग्न्याधान करे, तथा 'ऋभूणाँत्वादेवान व्रत

पतेव्रतेना धामीति रथकारस्यतेः श्रा० अ० १ प्र० १ अ० ५ अम्भूर्णा इस मन्त्र से रथ कार अग्ना धान करें ॥ पाणिनि के सूत्र 'कुर्वादि-भ्योरायः । ४ । १ । १५१ में रथकार शब्द अंगिरा दिकुलोत्पन्न आया है । वृत्तिका रकुर्वादिको ब्राह्मण लिखतेहैं–'अपत्ये कौरव्या ब्राह्मण और यह रथकार शब्द शिल्पि संज्ञा में अन्तोदात्त है 'संज्ञायांच पा, ६ । २ । ७७ यहां पर वृत्तिकार लिखते हैं 'रथकारो नाम ब्राह्मणः अर्थात् शिल्प संज्ञा में ब्राह्मण वाचक रथकार शब्द अन्तो दात्त होता है ।

इस विभिन्न शिल्प कार्य से शिल्प वंश चला । शिल्प शास्त्र प्रणेता और इनके आदि पुरुषों त्वष्टा, मय, कश्यप, विश्वकर्मा का प्रथम वर्णन हो चुका ।

इन्हीं शिल्पकारों को रथकार भी कहते हैं ।

दारुकारः स्वर्णकारः शिलाकारस्तथैवच ।
अयस्कारस्ताम्रकारः पंचैते रथकारकाः ॥
विश्वकर्मसुताह्येते रथकारास्तु पंचच ।
वैदिके नैव मार्गेण तद्वंश्यानां विशेषतः ॥
वर्षे गर्भोष्टमे तेषां ह्युपनीति क्रिया स्मृता ॥

स्कंद पु० नागरखंड

अर्थात् लकड़ी का काम करनेवाला, सुनार, पत्थर फोड़ा, लोहार, ताम्रकार यह ५ रथकार हैं । इनका यज्ञोपवीत आदि होना चाहिये ।

शिल्पकर्ता का महा कुल विशेषण वेद में आया है–

न निन्दि मचमसंयांमहाकुलोऽग्नेभ्रातद्रणऽइभूतिमूदिमस्र, सं,२,२,२४१ यह महाकुल इनसे प्रवर्तित होता है– शिवे मनुर्मय स्त्वष्टा तक्षा शिल्पींच पंचमः। विश्वकर्म सुतानेतान विद्धि शिल्प प्रवर्तकान् (रुद्रयामलतंत्रे) ।

इस महाकुल के कार्य क्रम का निरूपण स्कन्द पुराण में निम्न लिखित हैं ।

अयस्कृतिर्मनूनांच मयानां दारु कर्मच ।
त्वणां ताम्र कर्माणि, शिलाकर्मच शिल्पी नाम् ॥१३॥
सो वर्णत तक्षका कार्णांच पंच कर्माणिता निवे ॥
एते स्मृनः पंच कारुणश्च यज्ञ कर्मपराः स्मृताः ॥१४॥

मनु लोहकार, मय काष्ठकार त्वष्टा ताम्रकार, सोने का काम सुनारों का शिलाकर्म शिल्पियों के यह ५ कर्म हैं ।

इस प्रकार कारु जातियों में विदित हुआ कि सर्व जातियें, विद्यमान हैं । विशेष विवरण कभी फिर लिखा जावेगा । इनके भेदों में से छांट २ कर पृथक २ वर्ण बताना अत्यन्त दुरूह कार्य है । बड़े अन्वेषण की आवश्यकता है । इस विषय पर समय मिला तो पुनः लिखा जावेगा ।

अन्त में समस्त ब्राह्मण जाति से निवेदन है कि यदि सब सभायें में कान्यकुब्ज, गौड़, सारस्वत, सनाढ्य, माथुर, पांचाल, जांगिडा आदि अपनी २ जाति के भेदों उपभेदों की स्वयं जांच कराकर रिपोर्ट लिखें तो सम्भव हो सकता है कभी पूर्ण इतिहास लिखा जावे । इतने पाठक इस तुच्छ भेंट को ही स्वीकार करें ।

इति पण्डित परशुराम शास्त्रिप्रणीते ब्राह्मणेतिवंश वृत्ते द्वितीयो भागः

समाप्तः ॥ समाप्तश्चायं ग्रन्थः ॥
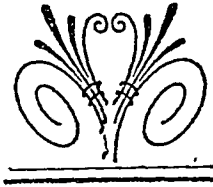
परिशिष्ट

साहित्याचार्य पंडित अम्बिकादत्त व्यास

इनके पूर्वज राजपूताने के रहने वाले थे। राजाराम जी के दो पुत्र हुए दुर्गादत्त जी और देवदत्त जी दुर्गादत्त जी प्रसिद्ध कवि हो गये हैं हमारे व्यास जी इन्ही दुर्गादत्त जी के ज्येष्ट पुत्र थे ॥१॥ व्यास जी का जन्म संवत् १६१५ चैत्र शुक्ला अष्टमीकोहुआ था पांचवर्ष कीअवस्था होने पर इन्हें विद्याध्ययन आरम्भ कराया गया और उसी खेलकूद में शब्द रूपावली और अमरकोष का अभ्यास कराया जाने लगा घर की स्त्रियां सब पढ़ी लिखी थी इसलिये इनकी शिक्षा उत्तम रीति से होने लगी। आठ नौ वर्ष की अवस्था होने पर इन्हें शतरंज और शितार का चस्का लगा और उसी समय कविता का भी व्यसन आरम्भ हुआ

दश वर्ष की अवस्था होने पर व्यास जी का यज्ञोपवीत हुआ और उसी समय से आप गोस्वामी श्री कृष्ण चैतन्य देव जी के यहां भाषा काव्य पढ़ने लगे उस समय गोस्वामी जी एक प्रसिद्ध कवि थे और उनके यहां अच्छे २ कवि एकत्रित हुआ करते थे, ऐसा सत्संग पाकर कुशाग्र बुद्धि व्यास जी बहुत ही शीघ्र काव्य कुशल हो गये इन्हें १ वर्ष में ही कविता के समस्त प्रस्तारों का अच्छा ज्ञान हो गया और ये भरी सभा में समस्या पूर्ति करने लगे।

धीरे २ व्यास जी का बाबू हरिश्चन्द्र जी से परिचय होगया और ये उनके यहां आने जाने लगे, और इनकी कविता भी कवि वचन सुधा में प्रकाशित होने लगी, इसी बाल्या वस्था में इन्होंने महाराज कविराज के यहां की धर्म सभामें परितोषिक पाया इस समय व्यास जी की अवस्था केवल १२ वर्ष की थी उस समय काशी जी के एकतैलग देश के अष्टावधानी कवि आये उन्होंने अपना बुद्धि कौशल दिखला

साहित्याचार्य पण्डित अम्बिकादत्त व्यास।

इंडियन प्रेस, प्रयाग।

कर- सब पंडितों को चकित कर दिया परंतु हमारे व्यास जी ने भी तत्काल शतान धान रच कर उक्त पंडित को भी चकित किया उन्होंने अत्यंत प्रसंन होकर इन्हें सुकवि की पदवी प्रदान की १३ वाँ वर्ष आरम्भ होते ही इन्होंने संस्कृत का अध्ययन आरम्भ किया । एक तरफ तो वैय्याकरण, सांख्य साहित्यवेदांतआदिगहन विषयों का अध्ययन करते और दूसरी ओर गान वाद्य सम्बंधी कलाओ का अभ्यास करते जाते थे । सम्वत् १६१३ में इन्होंने काशी गवर्नमेंट संस्कृत कालेज में नाम लिखवाना और १ ही वर्ष के परिश्रम में वहां से उत्तम परीक्षा पास की संवत् १६३४ में इन्होंने आचार्य परीक्षा पास की और दूसरे वर्ष साहित्य परीक्षा पास करके सरकारसे साहित्या चार्य्य की पदवी प्राप्त की ।

दुर्दैवश उसी साल इनके पिता ने परलोक वास किया इससे घर में कलह होने लगी जिससे दुखित होकर इन्होंने कलकत्ते की यात्रा की और वहां अपने विद्या बल में खूब नाम पैदा किया परन्तु तीन ही महीने बाद वहां से लौट आए और "पीयूषप्रवाह„ प्रकाशित करने लगे जो कि इनके यावत्जीवन चलता रहा । अभ्यास करते २ इनकी धारणा यहां तक बढ़गी गई कि ये २४ मिनट में १७० श्लोक स्वयम किये थे । इसीसे काशी की ब्रह्माअमृतवर्षिणी सभा से इन्हें चांदी के पदक सहित'घटिकाशतक" की उपाधी प्रदानकी । यहसब कुछ था परन्तु इनकी आर्थिक अवस्था अच्छी नहीं थी इस लिये संवत १६४० में इन्होंने मधुवनी जाकर वहां के स्कूलो में ३५) रु० मासिक की नौकरी करली । इसी समय इन्होंने संस्कृत में 'सामवत नाटक'बना कर राजा साहेब दरभंगा को समर्पण किया और शवराज विजयनायक उपन्यास भी संस्कृत में लिखा संवत् १६४८ इनकी विहारी विहार की हस्त लिखित पुस्तक चोरी चली गई उसेउन्होंने पुनः पूर्णकियाकाकरौली नरेश ने आपको भारत रत्न'की पदवी प्रदान की थी और अयोध्या नरेश ने एक स्वर्ण पदक सहित 'शतावधान'की पदवी दी थी ।

नौम्बर १६०० को व्यासजी का परलोक वास काशी में हुआ।

इनका चरित्र व्यास श्रेणी में समझना चाहिए।

[म० म० श्रयुत गङ्गाधर शास्त्री, साहित्याचार्य]
C. I. E.

आपका जन्म, शिक्षण काशी में हुवा। स्व० बाल शास्त्री के आप प्रधान शिष्य थे।

आपने संस्कृत कालिजमें पढ़ाया, और अंग्रेजोंमें बहुत यश हुवा श्लोक रचना बड़ी विचित्र थी।

षट दर्शन पर आपने अति विलासि संलाप। एक बहुत उत्तम निबन्ध लिखा। खेद है अब आपका शरीर इस पृथ्वी पर नहीं।

यह भट्टा राष्ट्रो में समझना चाहिये।

साहित्याचार्य पंडित रामावतार शर्मा, एम, ए,

छपरा में पं० देवनरायण शर्मा भारद्वाज गोत्रीय रहते थे। आपकी स्त्री श्रीमती गोविंद देवी भी विदुषी थी। इनके ४ पुत्र श्रीकांत, बलदेव, लक्ष्मीनरायण, और रामावतार हुवे। चारों ही विद्वान् हैं।

पाडेय रामावतारशर्मा का जन्म सं० १६३४ में हुआ। ५ वर्षकी अवस्था से ही पिताने विद्या आरंभ कराया। बारह वर्षकी अवस्था में बांकीपुर से आपने प्रथम श्रेणी में प्रथम परीक्षा पास की, इसी बीच में एन्ट्रेंस तथा अन्य कई परीक्षा पास की २० वर्ष की अवस्था में काशी की साहित्यचार्य परीक्षा में प्रथम हुवे। इसी वर्ष आपके पिता का देहान्त होगया। परन्तु माता ने आभूषण आदि बेचकर भा पढ़ाया सं० १६५५ में एफ, ए,१६५७ मेंबी, ऐ, और १६५८में कलकत्ता की एम, ए, परीक्षायें पास की। पुनः हिन्दु कालिज में अध्यापक और प्रयाग विश्व विद्यालय के परीक्षक रहे। १६६३ से पटना कालिज में अध्यापक हैं, १६६६ से आप कलकत्ता यूनिवर्सिटी के भी सदस्य हैं। हिन्दी में यूरोपीय दर्शन आदि कई ग्रन्थ लिखे हैं। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति हुवे थे।
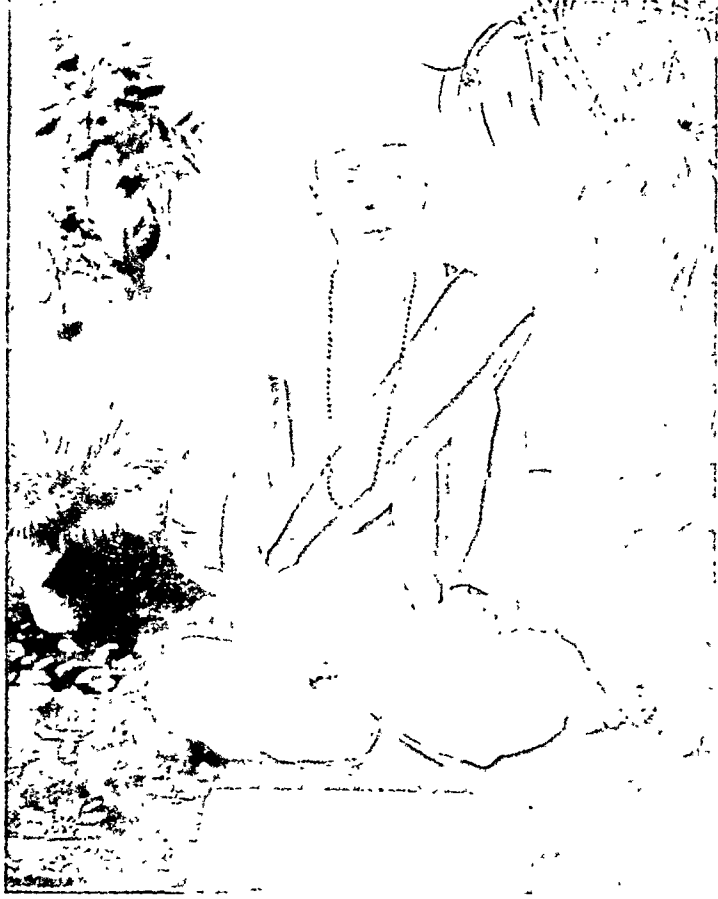
महामहोपाध्याय पण्डित गङ्गाधर शास्त्री, सी० आई० ई०।

इंडियन प्रेस, प्रयाग।

शुद्धि पत्र

यह पुस्तक ३ प्रेसोंमें मुद्रित हुई। उक्त प्रेसों में संशोधक न होने और मेरी अनुपस्थिति में छपने के कारण पुस्तक में अनेक अशुद्धियें रह गईं। मात्रा, और अक्षर बहुत छूट गये। कहीं की कापी कहीं छपगई। भाषा भी संभाली न जा सकी। कुछ अशुद्धिशोधन निम्नलिखित हैं। वन्श के स्थान में वंश, अन्श के स्थान में अंश और सम्वत् के स्थान में संवत् पढ़ना चाहिये। बहुत स्थानों में व के स्थान में व और व स्थान में व छप गया है। प्रत्येक पृष्ठ पर "पञ्च गौड़ों का अवान्तर भेद" यह शीर्षक गलती से छप गया है।

अशुद्ध	शुद्ध	पृ०	पं०
अन्तर्गगत	अन्तर्गत	१	५
भुवने शान्तर्गं	भुवनेशान्तर्गं	२	२
(शा० प०)	(शां०प०)	१५	१०
यथारत्नाकर०	यथा—रत्ना०	१५	१०
डाकुर	ठाकुर	२३	१
कन्याकुब्जा	कन्याः कुब्जा	२६	१७
अभिजननिवासी	अभिजन	४३	२
सनाठ्य	सनाढ्य	५८	१०
वेदाध्य	वेदाढ्य	६४	२६
मात्रहपी	वाल्मिकी	६५	५
-दयाल	-दयालु	,,	१३
जिनि	जनि	१०६	६
जयपुर	जयपुरे	,,	७
समर्प्य	समर्प्य	,,	६
सङ्ग	सङ्गे	,,	,,
ड्वीमत्त	द्धीमत्त	,,	१३
चक्रेय	चक्रेऽयं	११०	५
नयननियष्ठिः	नयनिष्ठः	,,	७
धामा	धीमान्	,,	१०
शौण्डैः	शौण्डैः	,,	२१

विष्णवा०	विष्णवा	,,	२४
मतिमानु	मतिमान्	१११	१०
विष्णाद्त्त	विष्णुदत्त	,,	७
अवान्तरभेद	शासन	१२६	१३
मुकन्द	मुकुन्द	१३२	६
जैमुनि	जैमिनि	१३६	१६
सिद्धि	सिद्धि	,,	२०
च	च	,,	२३
अपश्यामनो	अवश्यमाना	१३७	१
तिच	चान्वहम्	,,	२
पृच्छुत	पृच्छत्	,,	३
पुनर०	पुनर०	,,	५
नाशिष्यति	भविष्यति	,,	६
निश्चित्	निश्चि	,,	७
स	सः	,,	१४
युष्माकं	युष्माकं	,,	२५
प्रगृह्य	प्रगृह्य	,,	२६
मोनः	मः	१३८	७
पेयस्त	पेय	,,	६
जैमुनि	जैमनि	,,	११
नृपोत्तः	नृपोत्तमः	१३६	२२
शरयू	सरयू	१५६	१
सर्व	सर्वे	,,	२
पञ्चोत्तरं	पञ्चोत्तरं	१५८	१८
समाहूय	तमाहूय	१६०	६
द्वीरकायां	द्वारकायां	,,	२१
जुहुकाः	जुहुकाः	,,	२२
ब्राम्ला	ब्राह्मण	१६८	२७

पृ० ११५ का लेख पृष्ठ ८२ पर चाहिये। पृ० ११६ के ऊपर का मैथिल लेख पृ० १३१ पर चाहिये। पृष्ठ १६६ से १६२ तक मेटर शीघ्रता के कारण देखा नहीं गया।

विज्ञापन

हमारे औषधालय में प्रत्येक प्रकार के रस, उपरस, धातु, आसव, अरिष्ट, घृत, तैल आदि विक्रयार्थ उपस्थित रहते हैं ।

प्रत्येक रोग की चिकित्सा की जाती है ।

प्रमेहसञ्जीवनरसायन—वीर्य बहने को रोकती है । मू० २)

मधुमेह (डायाबटीज्)

यह रोग, शरीर का भयानक शत्रु है । मूत्र में शर्करा (Sugar) आने लगती है, एल्ब्यूमन भी कभी २ निकलने लगता है । प्यास और भूख एक दम बढ़ जाती है । इस बढ़े हुवे रोग में

मधुमेहान्तक रसायन ।

अपूर्व प्रभाव दिखाती है । इस महौषध के सेवन से गुड, चीनी, शहद, अंगूरी शकर अर्थात् सब प्रकारका मीठा रस मट्टी हो जाता है और क्रमशः लाभ होजाता है । प्यास और भूख शान्त होती है । ज्यादा मूत्र आना बन्द होकर मूत्र में खांड, एल्ब्यूमन और फास्फेट्स् बंद होते हैं गुरदा रुधिर में से खांड को न निकाल कर प्रत्येक अंग के अवयव में विभक्त करने लगता है । मूल्य ५) रु० ।

चन्द्रोदय – मधुमेह से उत्पन्न हुई शिथिलता और मधुमेह के कारणों को नष्ट करता है मूल्य १००) तोला ।

प्रदरान्तकरस और आसव

स्त्रियोंके श्वेत प्रदरको बन्द करता है मूल्य १) तो० । शाल्यासव३) शीशी ।

गये हैं। मन्त्रों के प्रमाण भी दिये गये हैं। यह महान् ग्रंथ १० वर्ष के रात्रि दिन का परिश्रम है। इस कोष की प्रशंसा महामान्य श्रीयुत

महात्मा बालगङ्गाधर तिलक महाराज

एवं श्रीयुत पं० शतीशचन्द्र विद्याभूषण

प्रभृति विद्वानों ने की है।

प्रथमांक शीघ्र प्रकाशित होगा मूल्य ४॥) वार्षिक।

वेदालोचन प्रेस में है।

इस में वेदों के समालोचक मैक्समूलर, मैकडानल, ह्विटनी, ग्रासमैन, ब्लोमफील्ड, कीथ, वेबर, आरनोल्ड, राजेन्द्रलाल मित्र, रमानाथ सरस्वती, बोथलिंग, रोथ, उमेशचन्द्र विद्यारत्न प्रभृति आज तक के सम्पूर्ण विद्वानों की कीगई वेदसमालोचनाओं और ननुनच पर विचार और युक्तियुक्त सप्रमाण उत्तर दिये गये हैं।

ऋषि, छन्द, देवता, मन्त्र विचार, संकेत सूचन वेदकाल, यज्ञ विचार, मन्त्र ब्राह्मण विचार, मन्त्र संख्या आदि अनेक विषय दियेगयेहैं।

इस शुभ कार्य में

हमारा हाथ बटा कर सहायता कीजिये। इसी ग्रन्थमाला द्वारा वैदिक नष्ट प्राय: दुर्लभ ग्रंथ भी क्रमश: प्रकाशित किये जावेंगे।

अपना नाम रजिष्टर में लिखाइये।

परशुराम शास्त्री वविपाल अम्बाला

———